वार्षिक पत्रिका

अपराजिता

2019-2020

जल संरक्षण विशेषांक

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय

रुड़की (हरिद्वार) उत्तराखण्ड (स्थापित 1966)

NAAC Accredited - B

हमें सब दिशाओं से श्रेष्ठ विचार प्राप्त हों।

Let Noble Thoughts Come to Us from Every Side

ऋ.। 89.1।

जल संरक्षण विशेषांक

अपराजिता

अंक 19 2019–20

संरक्षिका

डा० अर्चना मिश्रा, प्राचार्या

मुख्य सम्पादिका

डा० अनुपमा गर्ग

सह सम्पादिका

डा० अलका आर्य

सम्पादन सहयोग

डा० अस्मा सिद्दीकी

आवरण एवं अंतः सज्जा

डा० अलका आर्य

छात्रा सम्पादिका

कु० आरती, बी.ए. VI सेमे० **कु० अदीबा, बी.एससी. VI सेमे०**

NAAC Accredited - B

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुड़की

सम्बद्ध हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (स्थापित 1966)

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में प्रकट विचार लेखकों के अपने हैं। सम्पादक मण्डल की उनसे सहमति होना अनिवार्य नहीं है।

कार्यालय सहयोगी
श्री अनुज सिंघल
श्री निशांत पंडित

कम्प्यूटर कार्य
श्रीमति नीतू तायल

प्रकाशक
एस.एस.डी.पी.सी. गर्ल्स पी. जी. कॉलेज,
रुड़की - 247 667
दूरभाष : 01332-262705
ई-मेल : ssd.degree@gmail.com

मुद्रक :- श्री आदीनाथ एन्टरप्राइज़ेज, 240/2, पूर्वा दीन दयाल, रुड़की मो० 9927536168

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुड़की

नवोत्थान की प्रणेताः वर्तमान प्रबंध समिति

श्री अजय कुमार गर्ग अध्यक्ष, व्यापारिक परिवार से सम्बन्धित, 01.07.2012 से प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष निर्वाचित, कुशल प्रशासक एवं अनुशासन प्रिय।

श्री दिनेश गुप्ता उपाध्यक्ष, जून 2003 से मई 2008 तक उपसचिव रहे, जून 2008 से उपाध्यक्ष पद पर आसीन, मृदुभाषी सरल स्वभाव, शिक्षकों एवं कर्मचारियों की समस्याओं के निराकरण हेतु सदैव तत्पर।

श्री तेज बहादुर सचिव, मई 1983 से सदस्य प्रबन्धसमिति, अनुभवी कुशल प्रशासक एवं सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं। उनके सुझाव हमेशा प्रबन्धसमिति के लिए उपयोगी रहे हैं।

श्री सौरभ भूषण कोषाध्यक्ष, जून 2004 से कोषाध्यक्ष के पद पर आसीन, सरल स्वभाव एवं अनुशासन प्रिय युवा कोषाध्यक्ष महाविद्यालय के विकास के साथ ही वह अन्य शिक्षण संस्थानों, सामाजिक संगठनों में रहते हुये सामाजिक हितों में कार्य कर रहे हैं।

श्री गोपाल गुप्ता उपसचिव जून 2008 से सदस्य कार्यकारिणी के रूप में निर्वाचित हुए। प्रबन्धसमिति को इनका सक्रिय सहयोग प्राप्त होता रहा है।

श्री अरविन्द गुप्ता सदस्य, मार्च 1997 से सदस्य कार्यकारिणी, व्यावसायिक पृष्ठभूमि, कुशल प्रशासक, अनुशासन प्रिय।

श्री योगेश सिंघल, सदस्य जौलाई 2016 से सदस्य प्रबन्धसमिति के रूप में महाविद्यालय के विकास सक्रिय योगदान दे रहे है और नगर की कई संस्थाओं से जुड़े हुए है।

श्री सुशील गर्ग सदस्य, जून 2012 से सदस्य प्रबन्धसमिति के रूप में निर्वाचित हुए। संरक्षक सदस्य के नाते विशिष्ट भूमिका निभा रहे हैं।

श्री ईश्वर दयाल, सदस्य पेशे से व्यवसायी, अक्टूबर 2021 से महाविद्यालय की प्रबंध समिति के सदस्य के रूप में निर्वाचित हुये। महाविद्यालय को उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर ले जाने हेतु सदैव तत्पर।

डा० अर्चना मिश्रा – प्राचार्या
डा० अनुपमा गर्ग – शिक्षक प्रतिनिधि
डा० कामना जैन – शिक्षक प्रतिनिधि
श्री अनुज कुमार – गैर शिक्षक प्रतिनिधि

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का स्वायत्त संस्थान

NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL

An Autonomous Institution of the University Grants Commission

Certificate of Accreditation

The Executive Committee of the
National Assessment and Accreditation Council
on the recommendation of the duly appointed
Peer Team is pleased to declare the
Sri Sanatan Dharam Prakash Chand Kanya Snatkottar Mahavidyalaya
Roorkee, affiliated to Hemwati Nandan Bahuguna Garhwal University, Uttarakhand as
Accredited
with CGPA of 2.53 on four point scale
at B grade
valid up to January 18, 2021

Date : January 19, 2016

Director

EC(SC)/11/A&A/5.1

रमेश पोखरियाल 'निशंक'
Ramesh Pokhriyal 'Nishank'

शिक्षा मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF EDUCATION
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि **श्री सनातन धर्म प्रकाश चंद कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय रूड़की** (हरिद्वार) उत्तराखंड अपनी वार्षिक पत्रिका **'अपराजिता 2019-20'** का प्रकाशन **'जल संरक्षण विशेषांक'** के रूप में कर रहा है।

अपराजिता का जल संरक्षण विशेषांक अत्यंत समसामयिक एवं महत्वपूर्ण है विशेषकर जब पूरा विश्व **'जलवायु परिवर्तन तथा कोविड'** जैसी महामारी से जूझ रहा है। तीव्र गति से घटते जलस्तर तथा जल के नितांत अभाव का सामना आज संपूर्ण विश्व कर रहा है। जल संरक्षण, सभ्यता का संरक्षण है। **'जल संरक्षण विशेषांक'** के माध्यम से लोगों में जल, थल और अपने प्राकृतिक संसाधनों के प्रति जागरूकता एवं उत्साहवर्धन करना एक उल्लेखनीय तथा प्रशंसनीय पहल है।

भारतीय वाग्मय में जल की महत्ता का विषद वर्णन है। अथर्ववेद में कहा गया है *'अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजम्। अपामुत प्रशस्तिभिरस्वा भवथ वाजिनोगावो भवथे वाजिनो: अर्थात 'जल में अमृतोपम गुण है। जल में औषधीय गुण है, हे देवो!* ऐसे जल की प्रशंसा से आप उत्साह प्राप्त करें"। एक अन्य मन्त्र में प्रार्थना की गई है कि " जो दिव्य जल (आपो दिव्या) आकाश से (वृष्टि द्वारा) प्राप्त होते हैं, जो नदियों मे सदा गमनशील है, खोदकर जो कुएं आदि से निकाले जाते हैं, जो स्वयं के स्रोतों से प्रवाहित होकर पवित्रता विखरते हुए समुद्र की ओर जाते हैं वे दिव्यतायुक्त जल हमारी रक्षा करें"। ऋग्वेद के नद्य सूक्त में नदियों की महात्म्य का वर्णन है और उनके जल को भेषज तथा कृमिनाशक कहा गया है और मानवमात्र से अपेक्षा की गई है कि समस्त जल और जल स्रोतों को शुद्ध रखें। कोविड महामारी के प्रभावी रोकथाम के लिए हमारे चिकित्सक इसी कारण बार-बार हाथ धोने पर जोर देते हैं। जल संरक्षण की आवश्यकता के पीछे तीन मुख्य कारण हैं- पहला जल का समुचित वितरण, उपयोग एवं प्रबंधन, दूसरा पेयजल की निरंतर हो रही कमी को दूर करना तथा तीसरा अपनी भावी पीढ़ियों के लिए जल की उपलब्धता को सुनिश्चित करना। अगर हम छोटे-छोटे कदम जैसे कि वर्षा जल का संरक्षण, 4R (रिडक्शन, रीयूज, रिसाईकिल तथा रिकवरी) नीति का पालन, वृक्षारोपण, भूजल तथा सतही जल का उचित उपयोग, सिंचाई में ट्यूबवेल के बजाए ड्रिप एवं स्प्रिंकलर इरिगेशन को बढ़ावा दें तथा जल के घरेलू उपयोग का ध्यान रख पानी को बर्बाद होने से बचाएं तो जल संरक्षण की समस्या का काफी हद तक निदान हो जाएगा। हमें हमारे संविधान के **'सातवें मौलिक कर्तव्य'** जिसमें प्रकृति पर्यावरण की रक्षा और संवर्धन की बात है, को सदैव याद रखना चाहिए। **'सतत विकास'** की प्राप्ति हेतु पानी की एक-एक बूंद को बचाना हमारी प्रतिबद्धता है। हमारे सभी शिक्षण संस्थान भी इस दिशा में कदम बढ़ाएं और एक जिम्मेदार नागरिक व समाज का निर्माण करें।

मैं श्री सनातन धर्म प्रकाश चंद कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय को जल संरक्षण जैसे स्तुत्य प्रयास के लिए हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

(रमेश पोखरियाल 'निशंक')

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

Room No. 3, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhavan, New Delhi-110 115
Phone : 91-11-23782387, 23782698, Fax : 91-11-23382365
E-mail : minister.hrd@gov.in

डा. धन सिंह रावत

राज्य मंत्री (स्वतन्त्र प्रभार)
उच्च शिक्षा, सहकारिता, प्रोटोकाल,
दुग्ध विकास

उत्तराखण्ड सरकार

विधान सभा भवन
देहरादून
कक्ष सं. - 23
फोन : (0135) 2666410
फैक्स : (0135) 2666411 (का.)

"संदेश"

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रूड़की (हरिद्वार) द्वारा महाविद्यालय की पत्रिका "अपराजिता" के विशेषांक **"जल संरक्षण" 2019–20** का प्रकाशन किया जा रहा है।

मुझे विश्वास है कि महाविद्यालय की पत्रिका **"अपराजिता"** में ऐसी रचनाऐं प्रकाशित होंगी जो कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण के साथ–साथ जल संरक्षण में विशेष सहायक होंगी। **पानी की कमी एक सार्वभौमिक समस्या है। हमें न केवल अपने लिए बल्कि अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी जल संरक्षण की जरूरत है। जल संरक्षण जीवन संरक्षण के बराबर है! जल संरक्षण एक अनिवार्य आवश्यकता है क्योंकि वर्षाजल हर समय उपलब्ध नहीं रहता अतः पानी की कमी को पूरा करने के लिये पानी का संरक्षण आवश्यक है।**

अंत में, मैं पत्रिका **"अपराजिता"** के विशेषांक **"जल संरक्षण" 2019–20** के सफल प्रकाशन एवं विद्यार्थियों के उत्तरोत्तर उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

आपका,

(डा0 धन सिंह रावत)

उच्च शिक्षा निदेशालय, उत्तराखण्ड

हल्द्वानी – 263139 (नैनीताल)

Mail-Higherducation.director@gmail.com

संदेश

महोदय,

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द्र कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय रूडकी, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) महाविद्यालय वार्षिक पत्रिका "अपराजिता " वर्ष 2019–20 को प्रकाशित करने जा रहा है।

महाविद्यालय पत्रिका महाविद्यालय की शैक्षणिक, अकादमिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों एवं उपलब्धियों का दपर्ण मात्र ही नही होती, महाविद्यालय के छात्र छात्राओं की बौद्धिक ,वैचारिक एवं रचनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी होती है।

मैं आशा करती हूं कि पत्रिका में प्रकाशित रचनाऐं ज्ञानवर्धक एवं सारगर्भित होंगी और छात्र–छात्राओं का उचित मार्गदर्शन करने एवं उनके विचारों में रचनात्मक परिवर्तन लाने मे सक्षम होंगी ।

मै पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु महाविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ

मंगलकामनाओं सहित।

(डा0कुमकुम रौतेला)

सेवा में,

प्राचार्य,
श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द्र,
कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
रूड़की (हरिद्वार) उत्तराखण्ड।

हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल)-246174, उत्तराखण्ड, भारत
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
Hemvati Nandan Bahuguna Garhwal University, Srinagar (Garhwal)-246174 Uttarakhand, India
(A Central University)

प्रो० अन्नपूर्णा नौटियाल
कुलपति

Prof. Annpurna Nautiyal
Vice-Chancellor

Ph. No. : 01346-250260
Fax No. : 01346-252174

Ref. No. : VC/HNBGU/2020/162
Dated : 20/10/2020

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि **श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रूड़की, उत्तराखण्ड** विगत वर्षों की भांति अपनी वार्षिक पत्रिका **"अपराजिता"** का प्रकाशन **जल संरक्षण विशेषांक** के रूप में करने जा रहा है, इस हेतु समस्त प्रकाशन मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका किसी भी संस्थान के शैक्षणिक एवं शिक्षणेत्तर गतिविधियों का दर्पण होती है, जिसमें कॉलेज के शिक्षक एवं छात्रों की साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं अकादमिक प्रतिभा का दर्शन होता है।

जल संरक्षण जो आज के समय का एक ज्वलंत मुद्दा है, जिसके संरक्षण हेतु विश्वभर के वैज्ञानिक प्रयासरत हैं तथा इस हेतु आमजन का भी सामुदायिक प्रयास होना आवश्यक है। *"जल धरती की अमूल्य निधि है और जब तक इस धरती पर जल रहेगा, तभी तक हमारा कल रहेगा"* की भावना को हमें प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचा कर जागरूक करना है। तभी हम इसे एक जन अभियान बनाने में सफल होंगे।

मुझे विश्वास है कि महाविद्यालय पत्रिका "अपराजिता" में जल संरक्षण से संबंधित महत्वपूर्ण विचारों/तथ्यों से युक्त रचनाओं आदि का समावेश होगा। पत्रिका में छात्रोपयोगी महत्वपूर्ण एवं रोचक पाठ्य-सामग्री की प्रचुरता रहेगी तथा छात्र-छात्राओं के साथ-साथ आम जनमानस के लिये भी यह पत्रिका मार्गदर्शक सिद्ध होगी।

मैं पत्रिका **"अपराजिता"** के सफल प्रकाशन की कामना करती हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

(अन्नपूर्णा नौटियाल)

डा0 अर्चना मिश्रा
प्राचार्य
श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रूडकी – 247667, हरिद्वार, उत्तराखण्ड

Website: www.hnbgu.ac.in E-mail:vc@hnbgu.ac.in, hnbguvc@gmail.com

पतंजलि विश्वविद्यालय
University of Patanjali
डॉ. महावीर अग्रवाल
प्रति-कुलपति
Established by Uttarakhand State Legislature Under the University Of Patanjali Act No. 4, Year 2006 & Recognized by UGC

शुभकामनाएं

कविता कामिनीकान्त महाकवि कालिदास ने अपने विश्व प्रसिद्ध अमर नाटक अभिज्ञान शाकुन्तलम् के प्रारम्भ में ही मंगला चरण के माध्यम् से अष्टमूर्ति शिव की वन्दना करते हुए ''या सृष्टि स्रष्टुराद्या'' कहकर जल की दिव्यता और सर्वोत्कृष्टता की अभिव्यक्ति की है। सृष्टि की रचना करते हुए विधाता ने सर्व प्रथम जल की उत्पत्ति की थी ''अप एव ससर्जादौ''। ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में भी इसी सत्य का प्रतिपादन किया गया है कि सर्गोत्पत्ति से पूर्व सर्वत्र जल ही जल था। जल जीवन है। संस्कृत में कहा जाता है - 'सर्वे रसाः प्राप्ताः पानीयम्'' अर्थात् कटु आदि षड्रस जल में ही विद्यमान रहते हैं।

'जल' शब्द दो अक्षरों ज और ल से निष्पन्न है। ज का अर्थ जायन्ते और ल का अर्थ लीयन्ते। अर्थात् जन्म से मृत्यु पर्यन्त का जीवनाधार है जल। जल की महिमा वेदों से लेकर सभी ग्रन्थों में वर्णित है। वेद में प्रार्थना की गयी- आपः शिवाः शिवतमाः जल हमारे लिये हर प्रकार से कल्याणकारी हो।

सन्ध्या वन्दन एवं यज्ञ आदि शुभ कर्मो के प्रारम्भ में जल से आचमन करने एवं अंगस्पर्श का विधान जल की महत्ता को प्रकट करता है। वर्तमान वैश्विक महामारी की विभीषिका से रक्षा के लिये बार-बार जल से हाथ धोने एवं उष्ण जल के सेवन का प्रचार विश्व में किया जा रहा है। निर्मल जल के अजस्र प्रवाह के कारण गंगा, यमुना, कावेरी, नर्मदा, गोदावरी आदि सरिताओं की वन्दना की जाती है।

कुम्भ के पावन अवसर पर गंगा, यमुना और सरस्वती के पावन संगम प्रयागराज में, हरिद्वार में पुण्य सलिला गंगा में, नासिक में गोदावरी के पवित्र जल में तथा उज्जयिनी में शिप्रा के अमृत तुल्य जल में स्नान करने का अद्भुत माहात्म्य वर्णित है। जल से ही खेतों में हरियाली का आगमन होता है। जल के अभाव में समस्त वनस्पतियाँ, लता-गुल्म आदि निष्प्राण हो जाते हैं। जल के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। वेद की राष्ट्रीय प्रार्थना में भावपूर्ण शब्दों में याचना की गई है-

'निकामे-निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु, फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां, योगक्षेमों नः कल्पताम्

अति वृष्टि और अनावृष्टि से बचाते हुए मेघ हमारी आवश्यकतानुसार बरसें, जिससे कि औषधियाँ फलों से लदी हुई हों, और हमारा योग-क्षेम ठीक प्रकार से होता रहे।

वैदिक ऋषियों ने अन्न को ब्रह्म कहा, अन्न का आधार है कृषि और कृषि का आधार है जल। जल बरसता है मेघों से और मेघों का सम्यक् प्रकार से निर्माण होता है यज्ञ से, यज्ञ की महिमा वर्णित करते हुए कहा गया है- यज्ञो श्रेष्ठतमं कर्म। अर्थात् यज्ञ संसार का श्रेष्ठतम् कर्म है।

प्राचीन काल में घर-घर पर प्रतिदिन यज्ञ होते थे। यज्ञों से आवश्यकतानुसार वर्षा होती थी, और प्रदूषण भी नष्ट होता था।

इस प्रकार जल के विषय में चिन्तन, उसकी रक्षा के उपाय, जलीय प्रदूषण का विनाश अत्यावश्यक है।

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि एस.डी. गर्ल्स पी.जी. कॉलेज रुड़की इस वर्ष अपनी अत्यन्त उत्कृष्ट वार्षिक पत्रिका 'अपराजिता' 2019-20 का प्रकाशन 'जल संरक्षण विशेषांक' के रूप में करने जा रहा है। यह बहुत ही प्रशंसनीय कार्य है। महाविद्यालय की विदुषी प्राचार्या डॉ. अर्चना मिश्रा जी, प्रति वर्ष इस प्रकार के जनोपयोगी उत्तमोत्तम विशेषांकों का प्रकाशन करती हैं।

मैं महाविद्यालय की प्राचार्य जी, सम्पादक मण्डल एवं प्रबन्ध तंत्र को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं समर्पित करता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह विशेषांक सब के लिए विशेषतः छात्राओं के लिए विशेष कल्याणकारी सिद्ध होगा।

मंगलाभिलाषी

(डा. महावीर अग्रवाल)
प्रति-कुलपति
पतंजलि विश्वविद्याल, हरिद्वार

Camp Office: Patanjali Yogpeeth-I, Delhi-Haridwar National Highway, Near Bahadrabad, Haridwar, Pin-249405,
Res. : Vedalok, 22, Nand Vihar, P.O.-Gurukul Kangri, Haridwar, Pin-249404, Uttarakhand
Ph. : 01334-273000, **Mob.** : +91-9719004452, 9412918949, **E-mail** : mahavir_gkv@yahoo.co.in, provc@uop.edu.in, **Website** : www.uop.edu.in

स्थापित : 1966

फोन : 01332–262705
फैक्स : 01332–269434

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय

रुड़की – 247 667 (हरिद्वार) उत्तराखण्ड

(सम्बद्ध हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर)

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'अपराजिता' वर्ष 2019–20 का प्रकाशन 'जल–संरक्षण' जैसे महत्वपर्ण विषय को केन्द्र में रखकर हो रहा है। छात्राओं को अभिव्यक्ति का एक मंच प्रदान करने के साथ–साथ पत्रिका उनको विभिन्न सामयिक विषयों पर केन्द्रित विशेषांकों के माध्यम से एक सार्थक और समाजोपयोगी विमर्श का हिस्सा कनने का अवसर भी प्रदान करती हैं।

आशा है पत्रिका आसन्न जल संकट के परिप्रेक्ष्य में जल संरक्षण के महत्व के विषय में जागरुकता बढ़ाने के अपने उद्देश्य में सफल होगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु प्राचार्या एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनायें।

अजय गर्ग
अध्यक्ष, प्रबंध समिति

स्थापित : 1966

फोन : 01332–262705
फैक्स : 01332–269434

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय

रुड़की – 247 667 (हरिद्वार) उत्तराखण्ड

(सम्बद्ध हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर)

आशीर्वचन

मुझे यह जानकर अपार हर्ष हो रहा है कि इस वर्ष महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका अपराजिता का प्रकाशन 'जल संरक्षण विशेषांक' के रूप में हो रहा है। वार्षिक पत्रिका महाविद्यालय छात्राओं को अभिव्यक्ति हेतु मंच प्रदान करने के साथ-साथ, समकालीन समाज की ज्वलन्त-समस्याओं पर सार्थक विमर्श का सराहनीय कार्य भी कर रही है।

हम सभी इस तथ्य से परिचित हैं कि 'जल ही जीवन है' जल के महत्व को देखते हुए हमें अपनी दैनिक क्रियाओं में जल की एक-एक बूँद बचाने का प्रयास करना चाहिए, बरसात के पानी को भी घरों में संचय किया जाना चाहिए और उसको प्रयोग में लाना चाहिए। बरसात के पानी का संचयन और उचित प्रयोग जल संरक्षण के लिए जरूरी कदम है। इस प्रयास से हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को जल के संकट से बचा सकते हैं। आशा है पत्रिका का यह अंक 'हर बूँद है कीमती' का सार्थक संदेश देने के उद्देश्य में सफल होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिये मैं प्राचार्या, सम्पादिका मंडल व समस्त महाविद्यालय परिवार को बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ।

दिनेश कुमार गुप्ता
उपाध्यक्ष, प्रबंध समिति

स्थापित : 1966

फोन : 01332–262705
फैक्स : 01332–269434

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय

रुड़की – 247 667 (हरिद्वार) उत्तराखण्ड

(सम्बद्ध हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर)

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रहा है कि महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका अपराजिता का प्रकाशन इस वर्ष 'जल संरक्षण विशेषांक' के रूप में हो रही है।

लगभग दो दशकों से प्रकाशन की निरन्तरता बनाये रखते हुए, वार्षिक पत्रिका लगातार विविध ज्वलंत सामाजिक राजनीतिक महत्व के विषयों का चयन कर नई पीढ़ी को भविष्य की चुनौतियों के प्रति जागरुक करने का सराहनीय कार्य कर रही है।

आशा है पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल होगी और छात्रा–वर्ग का उचित मार्गदर्शन करने के साथ उनकी रचनात्मकता को उचित मंच प्रदान कर उनके व्यक्तित्व विकास में सहायक सिद्ध होगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु प्राचार्या एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें।

Tej Bahadur

तेजबहादुर
सचिव, प्रबंध समिति

स्थापित : 1966

फोन : 01332–262705
फैक्स : 01332–269434

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय

रुड़की – 247 667 (हरिद्वार) उत्तराखण्ड
(सम्बद्ध हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर)

संदेश

मुझे अत्यंत ही हर्ष की अनुभूति हो रही है कि श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय रुड़की अपनी वार्षिक पत्रिका ''अपराजिता'' 2019–20 का प्रकाशन ''जल संरक्षण'' विशेषांक के रूप में करने जा रहा है।

इस बार वार्षिक पत्रिका ''अपराजिता'' का विषय अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। वैज्ञानिक प्रगति के बावजूद समाज का एक बहुत बड़ा तबका इस विषय से अपरिचित है। आशा है हमारी पत्रिका इस विषय में ज्ञान का प्रकाश फैलायेगी।

हमें अपने समाज को जल संरक्षण के विषय में जागरूक करना होगा। हम सभी को अपनी दिनचर्या में जल संरक्षण के तरीकों को शामिल करना होगा। हमें प्रकृति से जो पूँजी प्राप्त हुई है उसे हम समाप्त करते जा रहे है और अब वह समय आ गया है कि जब हम यह पूँजी जो हमें प्रकृति ने दी है उसमें वृद्धि कर भावी पीढ़ी को सौपें, यह तभी सम्भव हो पायेगा जब हम एक दूसरे को इस विषय के प्रति जागरूक करेंगे।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिये पत्रिका के सम्पादक मण्डल को बधाई देता हूँ और ईश्वर से उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना देता हूँ।

भवदीय

S. Bh

सौरभ भूषण
(कोषाध्यक्ष, प्रबंध समिति)

शुभकामना – संदेश

जायते यस्मात् लीयते यस्मिन् इति जलः

समस्त जीवन जल से ही जन्म लेता और उसमें ही विलीन हो जाता है।

जल को उचित ही जीवन की संज्ञा दी गई है। प्राचीन भारतीय परंपरा में नदियाँ मात्र जलस्त्रोत का प्रवाह ही नहीं वरन् मातृरूप में वंदित हैं। विश्व की सभी बड़ी सभ्यताओं का विकास नदियों के तटों पर ही हुआ। मानव सभ्यता के आर्थिक-सांस्कृतिक विकास में नदियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। मानवकल्याण की गाथा पुण्यधर्मी नदियों के प्रवाह की अवहेलना कर नहीं लिखी जा सकती है। अगर धरा पर जीवन को संरक्षित करना है तो जीवनदायी प्रकृति और उसके सबसे महत्वूपर्ण उपादान जल का संरक्षण अनिवार्य है। जल के अपव्यय व प्रदूषण पर हर स्तर पर रोक लगानी होगी, हर बूँद बचानी होगी। जल संस्कृति को सँवार कर ही धरती पर जीवन सहेजा जा सकता है।

जल के संरक्षण, संचयन व प्रबंधन के लिये अनेक परंपरागत एवं नवीन वैज्ञानिक विधियाँ उपलब्ध हैं। जिनका उचित समन्वय वर्तमान जल संकट के समाधान की दिशा में लाभकारी सिद्ध हो सकता है। आज जलवायु परिवर्तन पर बहस हर ओर जारी है, काफी नुकसान हो चुका है। अब समय है वैश्विक स्तर पर एक पर्यावरणीय संस्कृति बनाने का जो भौतिकवादी, बाजारोन्मुख आग्रहों से ऊपर उठकर एक नई प्रकृतिवादी सोच के साथ आगे बढ़े और धरती पर जीवन को नष्ट होने से बचा सके।

जल संरक्षण विशेषांक की तैयारी के प्रयासों के मध्य ही मानवसमाज को एक सर्वथा नवीन वैश्विक आपदा -'महामारी कोरोना' से दो-चार होना पड़ा। यही जीवन है.... एक लक्ष्य निश्चित करने के बाद भी जीवन संपूर्णता में जीने के लिये बहुआयामी प्रयास जरूरी है। यहाँ भी महाविद्यालय परिवार ने संभवतः पुण्य प्रवाह नदियों से प्रेरणा ली जो सुदूर लक्ष्य सागर की ओर चलते-चलते अपने संपूर्ण प्रवाह-पथ को जीवन देती, हरा-भरा करती चलती है। महाविद्यालय परिवार ने अपनी क्षमताओं का परिचय देते हुए 'जल संरक्षण' विशेषांक का निर्धारित लक्ष्य पूर्ण करने के साथ ही महामारी जनित चुनौतियों को एकाकार कर इस आपदा को भी समाजोपयोगी कार्य करने के अवसर में बदल डाला। भारत की सर्वश्रेष्ठ परंपराओं प्रेम, समरसता व परस्पर सहयोग का परिचय देते हुए हमारी छात्राओं व प्राध्यापिकाओं ने हर नकारात्मकता को पराजित करते हुए नवीन सृजन और रचनात्मकता की धारा प्रवाहित की जिसका कुछ अंश प्रस्तुत विशेषांक में भी समाहित है।

उपलब्धियाँ अनेक हैं पर नित्य नवीन शिखरों के आरोहण के लिये हम सब दृढ़ संकल्पित हैं। हमारा सर्वश्रेष्ठ आना अभी बाकी हैं और इसके लिये हमें लगातार स्वयं को चुनौती देते हुए कर्तव्यपथ पर अग्रसर रहना होगा। सार्थक विषय चयन एवं कुशल संपादन हेतु संपादिका मंडल एवं एक उज्ज्वल भविष्य के लिये छात्राओं को शुभकामनाएँ

डा० अर्चना मिश्रा
प्राचार्या

अपनी बात...

अप्सु अन्तः अमृतम, अप्सु भेष्जम अपाम, उठ प्रशस्यते, देवा भत वाजिनः

अर्थात जल में अमृत है, जल में औषधि है, जल जीवन है, जीवन का आधार है। शरीर में से दूषित तत्व बाहर निष्कासित होते हैं ऐसे जल की स्तुति में यज्ञ पुरोहित विलंब न करें। भारतीय संस्कृति में जल को देवता माना गया है।

पृथ्वी एकमात्र ऐसा ग्रह है जहाँ जल और जीवन दोनों हैं। पृथ्वी पर प्रकृति की इस अनमोल धरोहर की सही समय पर कीमत समझना एवं उसका संरक्षण करना सभ्य मानव जाति की प्रथम आवश्यकता है। पूरे विश्व में एक प्रतिशत जल ही पीने योग्य है ऐसी स्थिति में भी यदि हम सचेत नहीं होते हैं। तो तृतीय विश्व युद्ध निश्चित ही जल के लिये होगा। अतः जल संरक्षण प्रत्येक व्यक्ति की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है।

जल संरक्षण का अर्थ है पानी के प्रयोग को घटाना एवं निर्माण, सफाई, कृषि आदि के लिये अवशिष्ट जल का पुनः संचयन करके उसका आवश्यकतानुसार प्रयोग करना। पानी की कमी बहुत देशों की समस्या बन चुकी है। बढ़ते तापमान के कारण कुएँ, तालाब सूखे हैं, जमीन बंजर होती जा रही है, लोग पलायन कर रहे हैं, पानी की एक-एक बूँद के लिये संघर्ष हो रहा है। अत्याधुनिक सुख सुविधाएं, गगनचुम्बी इमारतों का निर्माण, मनुष्य की भौतिकतावादी भूख, आने वाली पीढ़ियों को निश्चित ही बूँद-बूँद के लिये तरसा देगी। 'अति सर्वत्र बर्जयेत', लघु सूत्र जल प्रयोग के लिय भी चरितार्थ होता है।

इस आशय को दृष्टिगत रखते हुये अपराजिता पत्रिका के इस अंक को 'जल संरक्षण' विशेषांक के रूप में प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया। महाविद्यालय की छात्राओं एवं अन्य पाठकगण से आशा की जाती है कि वह जल की बर्बादी रोकने एवं उसका संरक्षण कर अपने सामाजिक दायित्व का निर्वहन करेंगे।

महाविद्यालय का विवेकशील एवं प्रगतिशील प्रबंधतंत्र, प्रबुद्ध प्राचार्या, ज्ञानी एवं कर्तव्यनिष्ठ प्राध्यापिका वर्ग के सहयोग तथा श्रेष्ठतम कार्य निष्पादन के लिये पूर्णरूपेण कटिबद्ध संपादक मंडल के समर्पित प्रयासों और युवा छात्राओं के सृजनात्मक विचारों से जीवंत अपराजिता निरंतर उच्च शिखर का आरोहण कर रही है।

प्रस्तुत अंक पाठकवृंद की आकांक्षाओं को पूरा करेगा। पत्रिका के कलेवर और विषयवस्तु के परिमार्जन हेतु सुविद् एवं स्नेही पाठकगणों के सुझावों का संपादक मंडल सदैव एवं सहर्ष स्वागत करेगा।

धन्यवाद।

Anupma Garg

डा० अनुपमा गर्ग

जल ही जीवन है

जल ही जीवन है
जल से हुआ सृष्टि का उद्‌भव जल ही प्रलय घन है
जल पीकर जीते सब प्राणी जल ही जीवन है।।

शीत स्पर्शी शुचि सुख सर्वस
गन्ध रहित युत शब्द रूप रस
निराकार जल ठोस गैस द्रव
त्रिगुणात्मक है सत्व रज तमस
सुखद स्पर्श सुस्वाद मधुर ध्वनि दिव्य सुदर्शन है ।
जल पीकर जीते सब प्राणी जल ही जीवन है ।।

भूतल में जल सागर गहरा
पर्वत पर हिम बनकर ठहरा
बन कर मेघ वायु मण्डल में
घूम घूम कर देता पहरा
पानी बिन सब सून जगत में, यह अनुपम धन है ।
जल पीकर जीते सब प्राणी जल ही जीवन है ।।

नदी नहर नल झील सरोवर
वापी कूप कुण्ड नद निर्झर
सर्वोत्तम सौन्दर्य प्रकृति का
कल-कल ध्वनि संगीत मनोहर
जल से अन्न पत्र फल पुष्पित सुन्दर उपवन है ।
जल पीकर जीते सब प्राणी जल ही जीवन है ।।

बादल अमृत-सा जल लाता
अपने घर आँगन बरसाता
करते नहीं संग्रहण उसका
तब बह बहकर प्रलय मचाता

त्राहि-त्राहि करता फिरता, कितना मूरख मन है ।
जल पीकर जीते सब प्राणी जल ही जीवन है ।।

- शास्त्री नित्य गोपाल कटारे

अनुक्रम

संदेश	पृष्ठ संख्या
सम्पादकीय	
1. महाविद्यालय की प्रगति आख्या	
2. वर्तमान जल संकट – प्रकृति और परंपरा में ही है समाधान	डॉ० अर्चना मिश्रा
3. चीन की जल कूटनीति व दक्षिण चीन सागर	डॉ० कामना जैन
4. मुगलकालीन बादशाह बाबर का बागवानी प्रेम व जल व्यवस्था	डॉ० अर्चना चौहान
5. प्रकृति–सर्वोच्च शक्ति	डॉ० संगीता सिंह
6. 'जल संरक्षण' (विचार प्रस्तुति)	वैशाली, दिपाली, साक्षी, गरिमा धीमान, काजल त्यागी, आफरीन, पारूल, Garima Satpuri, Kanika Chaudhary, Vijaylaxmi Soni, Manisha Rawat,
7. जल संरक्षण एवं अनुपम मिश्र का योगदान	डॉ० किरन बाला
8. पर्यावरण संवेदना और साहित्य	डॉ० सीमा रॉय
9. विजयी भव: / सबक (कविता)	डॉ० अर्चना मिश्रा / डॉ० अलका आर्य
10. एक सड़क / जल ही जरूरी है। (कविता)	डॉ० अर्चना चौहान / डॉ० अन्जु शर्मा
11. जल संरक्षण: धरती का रक्षण (काव्य प्रतियोगिता)	शमा प्रवीन, राबिस्ता बानो, जेबा, काजल त्यागी, नेहा
12. हिंदी साहित्य में वर्णित पर्यावरण चेतना की वर्तमान में प्रांसगिकता	डॉ० अंजू शर्मा
13. देशबन्दी एवं ऑनलाइन शिक्षण	मनीषा डाबर
14. संस्कृत भाषा–वर्तमान, भविष्य एवं आपत्ति काल में	डॉ० भारती शर्मा
15. गांधी जी और आज का समय	मनीषा डाबर
16. दुर्दिन के समान और कोई शिक्षा नहीं (विचार प्रस्तुति)	आरती, मनीषा डाबर, शिवांशी त्यागी, शिवानी गुप्ता, तेजस्वी धीमान, Priya, Leena, Aakansha Choudhary, Ramsha, Deeksha Dabar
17. Covid-19 Lockdown (Poem)	Dr. Alka Arya
18. कोरोना युद्ध के नायकों को नमन / आइये! अभिनंदन करें..../ हंसिका (कविता)	काजल त्यागी डॉ० अर्चना मिश्रा / डॉ० भारती शर्मा
19. एकांतवास और मेरी रचना (काव्य लेखन)	चंचल जैन, दिव्यांशी चौधरी, यतिका सैनी, मुस्कान किशोर
20. कोरोना की जंग : प्रधान मंत्री के नाम एक पत्र	जैनब
21. कॉलेज ने सिखाया – जड़ों से जुड़े रहकर ऊँची उड़ान भरना	लक्ष्मी, जेबा, जोया अंसारी, दीपा, प्राची सिंह, नेहा, सोफिया
22. Water: A Boon for Life and Literature	Dr. Anupma Garg
23. Save Tomorrow's Life Saver-Water	Dr. Parul Chaddha
24. Water Conservation: Participatory role of H.E.I.	Dr. Jyotika
25. Women Generation Euqality	Saloni, Ankita Rajput, Shivangi Tyagi, Mahima Saini
26. 'YES, I CAN' - A Mentorship Programme	Arshiya Gauri, Mudrika Verma, Gunjan Sharma, Naina Batra, Srishti Saini

महाविद्यालय की गौरवपूर्ण उपलब्धियाँ

विश्वविद्यालय मेरिटलिस्ट में स्थान प्राप्त करने वाली छात्राएँ

क्र. सं.	नाम	कक्षा	वर्ष	अंक प्रतिशत	विश्वविद्यालय मेरिट लिस्ट में स्थान
1.	कु० वैशाली	एम०ए० चित्रकला	2019	8.9 CGPA	**प्रथम (स्वर्ण पदक)**
1.	कु० कामिनी	एम०ए० चित्रकला	2018	84.3	**प्रथम (स्वर्ण पदक)**
2.	कु० चन्दा	एम०ए० चित्रकला	2017	87.2	**प्रथम (स्वर्ण पदक)**
3.	कु० सायरा	एम०ए० राज० विज्ञान	2017	87.1	**प्रथम (स्वर्ण पदक)**
4.	कु० दीपमाला	एम०ए० चित्रकला	2017	86.5	द्वितीय
5.	कु० निशा	एम०ए० चित्रकला	2017	82.8	पंचम
6.	कु० रितु गोस्वामी	बी०एस०सी०	2017	77.94	दशम
7.	कु0 छाया त्यागी	बी0ए0	2016	78.00	**प्रथम (स्वर्ण पदक)**
8.	कु0 रीतू रानी	बी0ए0	2016	76.00	तृतीय
9.	कु0 अर्चना	एम०ए० चित्रकला	2016	85.97	**प्रथम (स्वर्ण पदक)**
10.	कु0 आंचल कुमारी	एम०ए० चित्रकला	2016	84.50	तृतीय
11.	कु0 शिल्पा राय	बी0एस0सी0	2016	81.33	पंचम
12.	कु0 मीनाक्षी त्यागी	एम0ए0 राज0विज्ञान	2014	73.00	चतुर्थ
13.	कु० परवीन	एम०ए० राज0विज्ञान	2013	73.67	द्वितीय
14.	कु० मीनाक्षी	एम०ए० चित्रकला	2013	86.00	द्वितीय
15.	कु० दिव्या	एम०ए० चित्रकला	2013	85.71	तृतीय
16.	कु० शिवानी	एम0ए0 चित्रकला	2013	85.13	चतुर्थ
17.	कु० प्रिया प्रधान	एम०ए० चित्रकला	2012	80.80	द्वितीय
18.	कु० अन्जुम आरा	एम०ए० चित्रकला	2012	79.30	चतुर्थ
19.	कु० ललिता देवी	एम०ए० चित्रकला	2012	79.10	पंचम
20.	कु० निभा राठी	एम०ए० राज०विज्ञान	2011	68.78	**प्रथम (स्वर्ण पदक)**
21.	कु० प्रीति रानी	एम०ए० चित्रकला	2011	77.60	द्वितीय
22.	कु० शिवानी सैनी	एम०ए० चित्रकला	2010	83.60	**प्रथम (स्वर्ण पदक)**
23.	कु० मीनाक्षी सिन्धु	एम०ए० चित्रकला	2010	80.10	द्वितीय
24.	कु० उपासना	एम०ए० चित्रकला	2010	77.30	चतुर्थ
25.	कु० प्रीति शर्मा	बी०एससी०	2009	79.78	**प्रथम (स्वर्ण पदक)**
26.	कु० चीनू त्यागी	एम०ए० चित्रकला	2009	79.10	द्वितीय
27.	कु० शिखा कैंथ	एम०ए० चित्रकला	2009	77.50	पंचम
28.	कु० शकुन सिंह	एम०ए० चित्रकला	2008	83.63	**प्रथम (स्वर्ण पदक)**
29.	कु० नीतू	एम०ए० चित्रकला	2008	81.63	तृतीय
30.	कु० मोनिका पंवार	बी०एससी०	2007	79.89	द्वितीय

महाविद्यालय की प्रगति आख्या (2019-2020)

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुड़की नगर के अग्रणी शैक्षणिक संस्थान के रुप में छात्राओं के शैक्षणिक भविष्य हेतु उच्च शिक्षा के क्षेत्र में निरन्तर नवीन उपलब्धियाँ प्राप्त कर रहा है। सामाजिक एवं व्यावहारिक ज्ञान अभिबृद्धि, सन्तुलित एवं समन्वित व्यक्तित्व विकास, आधुनिक वैज्ञानिक युग के साथ राष्ट्र निर्माण में योगदान देते हुए महाविद्यालय उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। कला संकाय (स्नातक एवं स्नातकोत्तर) तथा विज्ञान संकाय में लगभग 1465 छात्राएं शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। विश्वविद्यालय द्वारा संचालित पाठ्यक्रमों के साथ पाठ्येत्तर कोर्सेज के लिए भी निरन्तर संस्था प्रयासरत है।

कला संकाय में सन् 1966 से स्नातक स्तर पर सात विषय हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत साहित्य, समाज शास्त्र, अर्थशास्त्र, चित्रकला, राजनीति विज्ञान है। विज्ञान संकाय (स्ववित्त पोषित) में 1998 से रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, गणित, जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान तथा सन् 2002 से कम्प्यूटर साइंस तथा 2012 से माइक्रोबायलॉजी विषयों में स्नातक शिक्षा का प्रबन्ध है।

प्रतिवर्ष की भांति गत सत्र 2018-2019 में भी महाविद्यालय का परीक्षा परिणाम उच्च कोटि का रहा है-

बी०ए० प्रथम वर्ष (I, II Sem)	81.81%	बी०एससी ० प्रथम वर्ष (I, II Sem)	70.05%
बी०ए० द्वितीय वर्ष (III, IV Sem)	प्रतीक्षित	बी०एससी ० द्वितीय वर्ष (III, IV Sem)	प्रतीक्षित
बी०ए० तृतीय वर्ष (V, VI Sem)	74.81%	बी०एससी ० तृतीय वर्ष (V, VI Sem)	65.60%
एम०ए० चित्रकला प्रथम वर्ष (I, II Sem)	96.6%	एम०ए० राजनीति विज्ञान प्रथम वर्ष (I, II Sem)	92%
एम०ए० चित्रकला द्वितीय वर्ष (III, IV Sem)	86.6%	एम०ए० राजनीति द्वितीय वर्ष (III, IV Sem)	100%

(अंक सुधार परीक्षाफल प्रतीक्षित)

छात्रा संघ चुनाव (2019-20)

दिनाँक 9.09.2019 को महाविद्यालय परिसर में प्रशासन द्वारा नियुक्त पर्यवेक्षक श्री बी.एस. नेगी (खण्ड विकास अधिकारी, रूड़की)। मुख्य चुनाव अधिकारी, डा० अलका आर्य, अनुशासन समिति प्रभारी, डा० कामना जैन, सदस्य डा० अर्चना चौहान, डा० उमा रानी, श्रीमती पल्लवी सिंह एवं समस्त प्रवक्तावृन्द के कुशल दिशा निर्देशन में छात्रा संघ चुनाव शांतिपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

छात्रा संघ चुनाव में अध्यक्ष पद हेतु नामांकित 2 प्रत्याशियों के मध्य कड़ा मुकाबला हुआ। जिसमें कु० लक्ष्मी (B.A. VI Sem) 288 में से 196 मत प्राप्त कर अध्यक्ष पद पर निर्वाचित हुई। उपाध्यक्ष पद पर कु० प्रियंका वर्मा (B.Sc. V Sem), सचिव पद पर कु० वंशिका सैनी (B.A. V Sem), सहसचिव पद पर कु० रेनू (B.A. V Sem), कोषाध्यक्ष पद पर कु० मेघा गुलाटी (B.A. V Sem), निर्विरोध प्रत्याशी चयनित हुए। छात्रा कार्यकारिणी सदस्य के रूप में कु० इकरा (B.A. V Sem), कु० दीपा (B.A. V Sem), कु० अंशुल त्यागी (B.Sc. III Sem) चयनित हुईं। छात्रा संघ के सभी निर्वाचित/विजयी पदाधिकारियों को दिनाँक 9.09.2019 को आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में प्राचार्या महोदया द्वारा पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलायी गयी। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय प्रबन्ध समिति के कोषाध्यक्ष श्री सौरभ भूषण जी के द्वारा की गई।

विषय परिषद, कक्षा, विभागीय एवं अन्य गतिविधियाँ

छात्रा संघ चुनाव के उपरांत समस्त विभागों ने विषय परिषदों का गठन कर सत्र पर्यन्त चलने वाली विभिन्न गतिविधियों की कार्य योजना तैयार कर पदाधिकारियों को उनका कार्यभार सौंपा।

हिन्दी विभाग द्वारा दिनाँक 14.09.2019 को '**हिन्दी दिवस**' को धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का

शुभारम्भ कबीर के दोहों पर भाव नृत्य के साथ हुआ। 'हिन्दी बेचारी नहीं है' विषय पर छात्राओं ने **नुक्कड़ नाटक** के माध्यम से अपना संदेश प्रेषित किया। इसके उपरांत 'जल संरक्षण और प्रकृति' विषय पर छात्राओं द्वारा **विचार प्रस्तुति** के साथ 'हिन्दी साहित्य में प्रकृति के विविध रूप' विषयाधारित स्वरचित कविताओं का पाठ कराया गया।

- 'पर्यावरण चेतना में हिन्दी लेखकों का योगदान' विषय पर **निबंध लेखन** प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा गाँधी स्मरणोत्सव वर्ष के समापन समारोह के अवसर पर विविध सांस्कृतिक गतिविधियों जैसे- 'वैष्णवजन तो तेने कहिये' तथा 'आजा रे बापू आ जारे' गीतों पर बी.ए. प्रथम व द्वितीय वर्ष की छात्राओं द्वारा नृत्य प्रस्तुति, बी.ए. तृतीय वर्ष की छात्राओं द्वारा 'गाँधी और कलकत्ता के दंगे' विषय पर **लघु नाटिका का मंचन** तथा गाँधी जी पर आधारित **स्वरचित कविताओं** की प्रस्तुति हुई।

दिनाँक 13 मार्च 2020 से कक्ष संख्या 02 में छात्राओं हेतु शेखर कपूर द्वारा निर्देशित **'प्रधानमंत्री' धारावाहिक का प्रसारण** किया गया। इस धारावाहिक में स्वतंत्रता के पश्चात् से विभिन्न प्रधानमंत्रियों के कार्यकाल से जुड़ी प्रमुख राजनीतिक घटनाओं को सारगर्भित तथ्यों के साथ दर्शाया गया है।

- राजनीति विज्ञान विभाग एम.ए. की छात्राओं द्वारा विभिन्न सम-सामयिक विषयों पर ऑनलाइन P.P.T. तथा Audio Presentation दी गई।
- डा० शालिनी वर्मा तथा सुश्री प्रवीन के दिशा निर्देशन में एम.ए. राजनीति शास्त्र की छात्राओं को विभिन्न सम-सामयिक विषयों जैसे- भारत पाक सम्बंध, जम्मू कश्मीर मुद्दा धारा 370, नागरिकता संशोधन विधेयक, नमामि गंगे मिशन तथा पर्यावरण इत्यादि पर लघु शोध प्रबंध कराये गये।

संस्कृत विभाग द्वारा डा० भारती शर्मा तथा शिखा शर्मा के दिशा-निर्देशन में दिनाँक 17.2.2020 से 27.2.2020 तक संस्कृत भारती रुड़की की ओर से दस दिवसीय 'संस्कृत संभाषण शिविर' का आयोजन किया गया। प्रशिक्षक मनीष बड़थ्वाल के कुशल निर्देशन में महाविद्यालय तथा नगर की अन्य शिक्षण संस्थाओं की लगभग 184 छात्राओं ने प्रतिभागिता की।

समाजशास्त्र विभाग द्वारा 'गाँधी और आज का समय' विषय पर **निबन्ध प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया।

- 'धार्मिक सद्भाव' पर आधारित दिशा **भित्ति पत्रिका** एवं **दिशा क्विज** का आयोजन किया गया।
- दिनाँक 27.9.2019 को गाँधी स्मरणोत्सव कार्यक्रम के अन्तर्गत **'वॉक फार यूनिटी'** का आयोजन किया गया जिसमें समस्त प्राध्यापिका वर्ग एवं छात्राओं ने प्रतिभागिता की।
- दिनाँक 1.10.2019 को गाँधी स्मरणोत्सव समापन समारोह के अवसर पर छात्राओं ने डा० किरनबाला के निर्देशन में 'अंहिसा के प्रतीक बापू' विषय पर आधारित **मूक नाटिका** प्रस्तुत की।
- डा० किरनबाला के निर्देशन में बी.ए. VI Sem DSE, GE, SEC तथा बी.ए. IV Sem SEC के पाठ्यक्रम पर आधारित महिला हिंसा, महिला एवं कानून, लैंगिक विषमता, विकास के प्रतिमान, अर्थव्यवस्था एवं समाज इत्यादि विषयों पर छात्राओं के लिए **विचार प्रस्तुति** का आयोजन किया।

अर्थशास्त्र विभाग द्वारा दिनाँक 3.02.2020 तथा 4.02.2020 को अर्थशास्त्र एवं अन्य विभागों की छात्राओं के लिए एक वीडियो के माध्यम से Highlights of Budget 2020-21 प्रदर्शित की गई। दिनाँक 4.02.2020 को एक प्रश्नो त्तर सत्र में छात्राओं की केन्द्रीय बजट संबंधी जिज्ञासाओं का समाधान भी किया गया।

- दिनाँक 27.02.2020 को 'भारत पर गहराता मंदी का संकट' विषय पर विभागीय प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें PPT के माध्यम से छात्राओं ने अपनी प्रस्तुतियाँ दीं।
- दिनाँक 14.03.2020 को बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर की छात्रा कु० साइमा अंसारी ने BSI में Causes and Remedial Measures for Declining Economic Growth of Country विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में प्रतिभागिता की।

चित्रकला विभाग द्वारा दिनाँक 18 सितम्बर 2019 को विषय परिषद का गठन कर पदाधिकारियों को उनके उत्तरदायित्वों से अवगत कराते हुए शपथ ग्रहण कराई गई। सत्र 2019–2020 में चित्रकला विषय परिषद के अन्तर्गत निम्न लिखित गतिविधियाँ संचालित की गईं –

- दिनाँक 21.09.2019 को 'हम सबके थे प्यारे बापू' विषय पर **पोस्टर प्रतियोगिता** आयोजित की गई।
- दिनाँक 23.10.2019 दीपावली पर्व के उपलक्ष में **'गणपति पेन्टिंग तथा पूजा की थाल सज्जा प्रतियोगिता'** आयोजित की गई। बी.ए. तथा एम.ए. की लगभग 45 प्रतिभागियों द्वारा सृजित इन कलाकृतियों की एक प्रदर्शनी भी लगाई गई।
- दिनाँक 25.01.2020 को **'मेरा भारत महान'** विषय पर आयोजित **पोस्टर प्रतियोगिता** में सृजित कृतियों को 26.01.2020 गणतंत्र दिवस पर भित्ति पत्रिका के रूप में प्रदर्शित किया गया।
- दिनाँक 6.09.2020 को **'शू पेन्टिंग प्रतियोगिता'** के अन्तर्गत प्रतिभागियों द्वारा बनाये गये कलात्मक जूतों को महाविद्यालय में एक प्रदर्शनी लगाई गई। इस प्रतियोगिता के आयोजन का प्रमुख उद्देश्य छात्राओं की रचनात्मकता को नवीन आयाम प्रदान करने के साथ उन्हें रोजगार के नये अवसर उपलब्ध कराना था।
- दिनांक 13.02.2020 को डा० अलका आर्य के दिशा निर्देशन में एम.ए. चित्रकला की छात्राओं का **शैक्षिक भ्रमण** हरिद्वार व ऋषिकेश के प्रमुख पर्यटन स्थलों पर ले जाया गया।

मार्च 2020 में कोविड–19 महामारी के कारण हुए लॉकडाउन में ऑन लाइन शिक्षा के साथ–साथ निम्न गतिविधियाँ संचालित की गई–

- दिनाँक 30.04.2020 'कोविड–19 सुरक्षा एवं बचाव' विषय पर **पोस्टर प्रतियोगिता** का आयोजन।
- **मास्क मेंकिंग अभियान**– कोविड–19 लॉकडाउन में कोरोना वायरस बचाव हेतु मास्क मेकिंग अभियान में 60 छात्राओं ने टीम इंडिया के कप्तान विराट कोहली द्वारा संचालित ऑनलाइन 'टीम मास्क फोर्स' में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। छात्राओं द्वारा निर्मित कलात्मक मास्क विशेष आकर्षण का केन्द्र बने।
- **कलात्मक भित्ति चित्र सृजन**– लॉकडाउन में छात्राओं की रचनात्मकता को उजागर करने हेतु उन्हें अपने घर की किसी एक प्रमुख दीवार को कलात्मक ढ़ंग से सुसज्जित करने का कार्य दिया गया, जिसे छात्राओं ने पूर्ण मनोयोग के साथ स्वीकार कर अपनी कला–कल्पना में नवीन रंग भरे।
- **रचनात्मक शब्द लेखन**– इस गतिविधि में छात्राओं को हिन्दी अथवा अंग्रेजी के अक्षरों को सुन्दर एवं कलात्मक रुप से लिखकर प्रस्तुत करना था। सभी छात्राओं ने इसमें रुचिपूर्ण ढ़ंग से अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति को साकार किया।
- एम.ए. चित्रकला विषय की छात्राओं हेतु दिनांक 21.5.2020 को 'Raja Ravi Verma - The legend of Indian Art and Culture' विषय पर एक **वेबीनार** आयोजित किया गया। यह वेवीनार दिनाँक 23.05.2020 को सांय 5.00 से 6.00 बजे तक zoom platform पर हुआ।

- पारम्परिक लोक कला ऐंपण पर आधारित **चौकी सज्जा प्रतियोगिता** में छात्राओं ने कलात्मक चौकियाँ तैयार की।
- डा० अलका आर्य के दिशा निर्देशन में इस वर्ष – **वार्षिक चित्रकला प्रदर्शनी 'अभिव्यक्ति' का ऑनलाइन आयोजन** किया गया। दिनांक 1.10.2020 को प्रबंध समिति के कोषाध्यक्ष श्री सौरभ भूषण तथा प्राचार्या डा० अर्चना मिश्रा के कर कमलों द्वारा इसका ऑनलाइन शुभारम्भ किया गया। इस प्रदर्शनी में चित्रकला विभाग की प्राध्यापिकाओं सहित बी.ए. तथा एम.ए. की 60 छात्राओं की दो–दो कलाकृतियाँ प्रदर्शित की गई। यह कला प्रदर्शनी दर्शकों के अवलोकनार्थ youtube, facebook तथा instagram पर अपलोड की गई।

Faculty of Science – Activities

Chemistry Department

- conducted an **essay writing competition** on 13th March 2020 on the occasion of Women's day. The topic of the essay was Women Generation Equality, 53 students participated in it.
- **'A wall magazine competition'** was also organized on the International Women's Day.

Computer Department

- 47 student of B.A., B.Sc. 2nd 4th and 6th sem attended a **workshop** on the topic Cloud Computing in COER Roorkee on 3rd March 2020,
- A four day **e-learning workshop** from 26-11-2019 to 29-11-2019 was organized by computer department for B.A. students on the following topics -

  1. How to fill examination form online. 2. What is computer and it's application
  3. Powerpoint prensentation, (78 students participated in this workshop).
- **A 10 days workshop** for B.Sc. 1st Sem, B.Sc. (Comp. Sc.) students by 3rd Sem and 5th Sem student was arranged between 14.10.2019 to 23-10-2019 on basics of computer which was attended by 43 students.

Botany Department

- Eight students attended a **national conference** on **'Multi Disciplinary Research and Development'** on 7.03.2020 with 4 faculty members organised by Genesis of educational impressions at Deep Residency Roorkee.
- A **webinar** was organized by Botany department on 15.03.2020. B.Sc. VI Semester students made presentation on the topic 'Effect of Covid-19 on Environmental Justice. The winners were: first prize - Akansha Singh second prize - Vrishty Saini and third prize went to Ms. Mahim.

Maths Department

- Organized an **article writing competition** for wall magazine on Mother language Day, theme was "Indigenous Languages matter for Development Peace building and Reconciliation" on 20.02.2020.
- Prowisdom growth **one week mentoring programme** on 02.03.2020 was held for B.Sc 1st year students, with sixteen mentors.

Microbiology Department

- Organized a **National workshop** on Laboratory Diagnostic Techniques on 11.02.2020 and 12.02.2020 which was attended by 119 students.

- Covid Awareness **online Quiz** was organized in two parts Topics were - Covid 19-Awareness and Health Issues launched on 2-06-2020 and Covid - 19 : The Unlock Challenge (Opened on 8.06.2020, over 1500 students of college & neighbouring institutions participated in these quizs.

Physics department

- Celebrated **National Science Day** on 28.02.2020 on the theme "Women in Science" Many activities were conducted on this day like online demonstration of basic laws of Physics, quiz competition and wall magazine display. These events were judged by Dr. Alka Arya, Dr. Uma Rani and Mrs. Anshu Goyal.
- **Zoology departments** organized a **seminar on sericulture** for the students of Vth Sem on 20.09.2019, in which 15 participants gave their presentation.
- **Seminar** for VIth Sem took place from 02.03.2020 to 06.03.2020 on apiculture in which 46 students gave powerpoint presentation.
- An online poster and slogan competition was organised on **World Environment day :** 05.06.2020

Workshop on Laboratory Diagnostic Techniques

Department of Microbiology organized a two days workshop on "Laboratory Diagnostic techniques" in collaboration with 'Singh Pathology Lab Roorkee'.

This workshop was organized with the dual objectives of making student aware about career opportunities in the field of Microbiology as well as giving them knowledge of routine health care. Delegates from Many colleges Viz. Banasthali Vidhya Peeth University Rajasthan, K.L.D.A.V (P.G.) College, Roorkee Gurukul Kangari University Hardwar and over 120 students of our college participated to make the workshop a great success.

Workshop started with a warm welcome of guests by Ms Himanshi, Lecturer, Dept. of Microbiology, Co-converner of the workshop. Honorabe secretary Tej Bahadurji was the chairperson, Mr. Saurabh Bhushan, special guest, Dr. Supreet Kaur, the keynote speaker and Dr. Archana Mishra, Principal of the college graced the occasion by their presence. Session began with the presentation of Dr. Supreet Kaur on different routine health care tests and their importance for one and all. Mr. Deepanshi Rana and Dr. Kamal Kant, Gurukul University, Haridwar, delivered, lecture on the topics 'Urinary Tract Infection' and ' Urinogenital tract infections' respectively. Dr. Pooja Arora, (HOD, Zoology Dept. K.L.D.A.V PG College, Roorkee) made her presentation on 'Hemoglobin' and very interesting and informative presentations were made by Dr. Asma Siddique on 'Women Health' and Mrs. Anshu Goyal on 'Music Therapy'.

The day two schedule included students presentations on different infectious diseases and their diagnosis followed by demonstrations of various pathological tests by Dr. Supreet Kaur. The session also included on the spot free pathological test for students.

Workshop concluded with vote of thanks by convenor Ms. Deepa Panwar, Lecturer Dept. of Microbiology.

International Webinar: Impact of Covid-19 on Environment

An international webinar was organised under the agies of IQAC, on 7th June 2020. Here is a brief report of the words of wisdom delivered by our distinguished speakers :-

Prof. P.C. Joshi, Dean Green Audit in G.K. University, Haridwar, explained in detail how covid-19 impacted the environment and various other aspects of our life in special reference to uttarakhand. In his talk he highlighted this pandemic situation is leaving positive impacts on our environment. From Stockholm Conference 1972 to latest Madrid Conference of 2019 the only concern was how to conserve our environment Covid-19 is a big relief for mother earth, we all are feeling the changes in environment. The water and air has been purified. No major incident of forest fire has been reported this year in Uttarakhand. We should respect the supremacy of nature.

Dr. D.P. Uniyal Joint director of UCOST, Dehradoon, explained how covid-19 pandemic lockdown positively impacted the entire biodiversity. The ecosystem will be good only when the variety of species will contribute in it. From last few years in Kumaun region of Uttarakhand the number of butterflies was decreasing due to pollution. Butterflies are very good pollinators. Rare kind of bird species are also seen during lockdown in Dehradoon region. Now this is time for self introspection to save biological ecosystem.

Prof. B.D. Joshi a UGC BSR Emeritus Professor Fellow, focussed his lecture on 3 keywords globalization, environment and covid-19. It is a harsh truth that man is very selfish. From Stone Age to computer age men developed his skills and technology to exploit nature more and more. Globaliztion is an ancient indian concept with our culture यत्र विश्व भवति एक नीड़म and the feeling of वसुधैव कुटुंबकम्. But the western countries developed the thought of globalisation to promote business and economic benefits. We have history of many pandemics like Plague, Bird flu, SARS, Ebola and presently Covid-19, spread worldwide due to globalisation. It is very tough to develop vaccine for the viruses like corona as it changes its genome rapidly. Now we will have to adopt the message from अप्प दीपों भव which means first enlighten yourself then illuminate the whole world.

Dr. Neha Gupta, Teaching Associate in University of Warwick, aimed to highlight the importance of incorporating big data mining techniques to predict and understand and behavioural traits of people and our social environment during the corona virus pandemic. For example, Behavioural Science Group, WBS and university of Ottawa, Ontario Canada assessed the impact of the coronavirus lockdown on unhappiness, loneliness and boredom, by looking at keywords searches that matches to words like 'boredom', 'loneiness' and 'sadness' and analysing the search pattern evident from Google trends. The research revealed how people's mental health across Europe and worldwide may have been severely affected by the lockdown. An insight into these trends can support policymakers and health care managers to plan and allocate health care resources accordingly in real time.

शैक्षिक भ्रमण

दिनांक 13 फरवरी 2020 को डा0 अलका आर्य के निर्देशन में एम0 ए0, चित्रकला की 25 छात्राओं को लैण्डस्केप स्केचिंग एण्ड पेन्टिंग हेतु हरिद्वार तथा ऋषिकेश के पर्यटन स्थलों पर ले जाया गया। प्रात: 8.00 बजे एक मिनी बस द्वारा समस्त छात्राएं उत्साहपूर्वक गंतव्य स्थल की ओर अग्रसर हुई। इस एक दिवसीय शैक्षिक भ्रमण के प्रमुख स्थलों का विवरण निम्नवत है।

प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर हरिद्वार- छात्राओं ने भव्य मूर्ति शिल्प एवं स्थापत्य कला के बेजोड उदाहरण हरिद्वार स्थित प्राचीन जैन मंदिर के कलात्मक वैभव का समीप से आनंद लिया।

नीरगढ़ वॉटर फॉल- ऋषिकेश से 15 कि.मी. दूरी पर स्थित अप्रतिम जलस्रोतों और झरनों के लिये प्रसिद्ध रमणीय स्थल नीरगढ़ वॉटर फॉल पर छात्राओं ने प्राकृतिक सौन्दर्य का आनंद लेने के साथ लेण्डस्केप पेन्टिंग तथा फोटाग्राफी की।

द बीटल आश्रम-(चौरासी कुटिया)-ऋषिकेश रामझूला के समीप अंग्रेजों द्वारा निर्मित ऐतिहासिक महत्व की प्राचीन इमारत चौरासी कुटियां का स्थापत्य तथा भित्तिचित्रकला का अवलोकन छात्राओं के लिये एक अभूत पूर्व और अविस्मरणीय अनुभव रहा। अंत में रामझूला गंगा किनारे घाट से पदयात्रा करते हुए सभी छात्राएं अपने शहर रुड़की की ओर प्रस्थान करने हेतु सायं 5.00 बजे बस स्टॉप पर पहुँची। इस शैक्षिक भ्रमण की व्यवस्थाओं में चित्रकला विभाग की अध्यापिकाओं श्रीमती मीनाक्षी, सुश्री सीमा रानी, सुश्री आँचल तथा श्री रविन्द्र कुमार (परिचर) का सम्मिलित सहयोग रहा।

गाँधी स्मरणोत्सव वर्ष का समापन

संकल्पना एवं दिशा-निर्देशन : डा० अर्चना मिश्रा, **समन्वयक :** डा० कामना जैन, **सह-समन्वयक :** डा० किरन बाला

भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय नई दिल्ली पत्रांक सं० 3072 दिनाँक 26 जूलाई 2018 के अनुपालन में वर्ष पर्यन्त विविध एक वर्षीय गतिविधियाँ आयोजित की गईं, जिसका समापन समारोह दिनाँक 2 अक्टूबर 2019 को महाविद्यालय परिसर में किया गया। संक्षिप्त विवरण निम्नवत् हैं-

दिनाँक	गतिविधि का विवरण	आयोजक
23.08.2019	निबन्ध लेखन	समाजशास्त्र विषय - गाँधी जी एवं आज का समय डा० किरन बाला, सुश्री अंजलि प्रसाद
21.09.2019	पोस्टर प्रतियोगिता - ''हम सबके थे प्यारे बापू''	चित्रकला विभाग डा० अर्चना चौहान
	विचार लेखन प्रस्तुति ''प्रणाम बापू''	आंग्ल साहित्य विभाग डा० अनुपमा गर्ग, डा० भारती शर्मा
24.09.2019	पर्यावरण संरक्षण औषधीय वाटिका में पौधारोपण	जन्तु विज्ञान विभाग, डा० संगीता, सुश्री शाजिया
27.09.2019	रैली आयोजन- विषय: स्वच्छता एवं प्लास्टिक मुक्त भारत जल संरक्षण, पेड़ बचाओ: प्रकृति बचाओ विश्व शांति एवं सर्व धर्म समभाव	N.S.S. एवं गाँधी स्मरणोत्सव आयोजन समिति
01.10.2019	गाँधी स्मृति दीर्घा	सांस्कृतिक समिति डा० अर्चना चौहान, श्रीमती अंजलि प्रसाद, श्रीमती अंशु गोयल
02.10.2019	सर्व धर्म समभाव (मूक नाटिका) शपथ- सिंगल यूज प्लास्टिक मुक्त भारत	समाजशास्त्र विभाग डा० किरन बाला, श्रीमती अंजलि प्रसाद N.S.S.- डा० भारती शर्मा
02.10.2019	समापन समारोह-सांस्कृतिक कार्यक्रम	गाँधी स्मरणोत्सव आयोजन समिति डा० कामना जैन, डा० किरन बाला,

22.10.2019	भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रूड़की के मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार–Gandhian Thought and Philosophy के उद्घाटन सत्र में महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुति	गाँधी स्मरणोत्सव आयोजन समिति

वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता– 2019–20

खेलकूद जीवन का आवश्यक अंग है सत्य ही कहा गया है कि 'स्वास्थ्य ही धन है।' इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए महाविद्यालय में प्रतिवर्ष खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है जिसमें छात्राएँ बढ़चढ़कर भाग लेती हैं। क्रीड़ा समिति द्वारा सत्र–पर्यन्त आयोजित की गई गतिविधियों का विवरण निम्नवत् है–

- दिनाँक 18.09.2019 से 18.01.2020 तक नि:शुल्क त्रैमासिक **ताइक्वाडो प्रशिक्षण** श्री याकूब खान जी (ताइक्वाडो प्रशिक्षक) के निर्देशन में सम्पन्न हुआ जिसमें छात्राओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

- दिनाँक 16.01.2020 से 17.01.2020 तक क्रीड़ा प्रतियोगिता समन्वयक डा० किरन बाला, सह–समन्वयक श्रीमती अंजति प्रसाद व श्रीमती पल्लवी, डा० सीमा राय, डा० शालिनी वर्मा के निर्देशन में सम्पन्न हुई, जिसका शुभारम्भ स्थानीय नेहरु स्टेडियम में प्राचार्या डा० अर्चना मिश्रा के कर कमलों से शान्ति के प्रतीक श्वेत कबूतरों का जोड़ा उड़ाकर किया गया।

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिताओं में 100 मी., 200 मी., 400 मी. शॉटपुट, स्लो साइक्लिंग, रस्साकसी, रिले रेस, ताइक्वांडो फाइट तथा इन्डोर गेम्स के अन्तर्गत केरम, शतरंज व डॉट बोर्ड प्रतियोगिताएँ क्रीड़ा प्रशिक्षक श्री अवतार सिंह जी के निर्देशन में सम्पन्न हुईं।

कु० महिमा चौधरी, बी.ए. द्वितीय वर्ष को खेलकूद प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए **चैम्पियन ट्राफी** प्रदान की गई। दिनाँक 17.01.2020 को समापन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि प्रबंध समिति के माननीय श्री तेजबहादुर जी, सचिव, विशिष्ट अतिथि श्री सौरभ भूषण जी, कोषाध्यक्ष, श्री योगेश सिंघल जी, श्री गोपाल गुप्ता जी सदस्य प्रबन्ध समिति उपस्थित रहे। इस अवसर पर छात्राओं ने स्वागत गीत, प्रादेशिक लोकनृत्य गढ़वाली, बिहू, लावणी, नृत्य पंजाबी आदि सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता में विजयी छात्राएँ–

100 मी. रेस	कु० महिमा चौधरी	बी.ए. द्वितीय वर्ष	प्रथम
	कु० काजल	बी.ए. द्वितीय वर्ष	द्वितीय
	कु० शहजाद	बी.ए. तृतीय वर्ष	तृतीय
200 मी. रेस	कु० महिमा चौधरी	बी.ए. द्वितीय वर्ष	प्रथम
	कु० शालू नौटियाल	बी.एससी. तृतीय वर्ष	द्वितीय
	कु० वंशिका शर्मा	बी.ए. तृतीय वर्ष	तृतीय
400 मी. रेस	कु० महिमा चौधरी	बी.ए. द्वितीय वर्ष	प्रथम
	कु० रुकसार	बी.ए. तृतीय वर्ष	द्वितीय
	कु० संध्या सिंह	बी.ए. तृतीय वर्ष	तृतीय
स्लो साइक्लिंग	कु० अलीशा	बी.ए. तृतीय वर्ष	प्रथम
	कु० दीक्षा	बी.एससी. तृतीय वर्ष	द्वितीय

	कु॰ कोमल	बी.एससी. तृतीय वर्ष	तृतीय
रस्सा कसी	विनर अप टीम	बी.एससी. तृतीय वर्ष	विजेता
	रनर अप टीम	बी.एससी. द्वितीय वर्ष	उप विजेता
ताइक्वाडो फाइट	कु॰ उषा रानी, आंचल, आस्था दीपा		प्रथम
	कु॰ सोनिया, मेघा गुलाटी, महिमा, संध्या		द्वितीय
	कु॰ शीबा, मनीषा, मोहिना, मेघा		तृतीय
कबड्डी प्रतियोगिता	बी.ए., बी.एस.सी. तृतीय वर्ष की छात्राएँ कु॰ छाया, मधु, मेघा, ऑचल, आस्था सैनी, दीक्षा, वंशिका, रुकसार, सविता, प्रीती, प्रियंका वर्मा, निशात अंजुम, महिमा भारद्वाज, शालू नौटियाल, डौली		विजयी
रस्साकसी	बी.एस.सी. तृतीय वर्ष की छात्राएँ कु॰ दीक्षा, मेघा, शीबा, आस्था सैनी, शालू नौटियाल, ऑचल, महिमा भारद्वाज, अलीशा, छाया, मधु, संध्या सिंह, डोली, मेघा गुलाटी, बुशरा प्रवीन, नाजिया कुरैशी		विजेता

इन्डोर गेम्स

कैरम बोर्ड	कु॰ दीक्षा	बी.ए. द्वितीय वर्ष	प्रथम
	कु॰ कोमल	बी.ए. तृतीय वर्ष	द्वितीय
शतरंज	कु॰ ज्योति मलिक	बी.एससी. द्वितीय वर्ष	प्रथम
	कु॰ नंदिता मृधा	बी.एससी. प्रथम वर्ष	द्वितीय
डाट बोर्ड	कु॰ सामीया प्रवीन	बी.ए. द्वितीय वर्ष	प्रथम
	कु॰ नीलोफर	एम.ए. अन्तिम वर्ष	द्वितीय
	कु॰ अलीशा	बी.ए. द्वितीय वर्ष	तृतीय

सांस्कृतिक गतिविधियाँ

महाविद्यालय में दिनाँक 5, 6 मार्च 2020 को सांस्कृतिक समिति प्रभारी डा॰ अर्चना चौहान एवं सदस्य श्रीमति अंजलि प्रसाद, डा॰ सीमा राय, श्रीमति अंशु गोयल के दिशा निर्देशन में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का हर्षोल्लास के साथ आयोजन किया गया। होली नृत्य 'राधाकृष्ण' व सेमेस्टर प्रणाली पर आधारित कव्वाली कार्यक्रम के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र रहे। छात्राओं द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रमों का विवरण निम्नवत् है:-

- होली नृत्य 'राधाकृष्ण'
- सेमेस्टर प्रणाली पर आधारित कव्वाली
- विभिन्न राज्यों के लोकगीतों पर आधारित '**एकल नृत्य**' प्रतियोगिता।
- विभिन्न रागों पर आधारित '**एकल गायन**' प्रतियोगिता।
- '**वाद्य यंत्र प्रतियोगिता**' में ढोलक, ढपली इत्यादि पर छात्राओं की मनमोहक प्रस्तुति।
- **आशु भाषण प्रतियोगिता** में प्रतिभागियों ने विभिन्न रोचक विषयों जैसे मोबाइल, लेपटाप, ब्लेक बोर्ड, चप्पल, रोटी, किताब, कील और बेलन इत्यादि पर स्वाभाविक एवं रूचिपूर्ण ढ़ंग से अपने वाकचातुर्य का परिचय दिया।

सांस्कृतिक प्रतियोगिता के परिणाम

लोक नृत्य प्रतियोगिता (एकल)

कु० मेधावी	बी.ए. II Sem	प्रथम
कु० शमा	बी.ए. IV Sem	द्वितीय
कु० सबिया	बी.ए. IV Sem	द्वितीय
कु० महमुना	बी.ए. IV Sem	तृतीय
कु० सामिया	बी.ए. II Sem	तृतीय

निर्णायक मण्डल – डा० भारती शर्मा, डा० कामना जैन, डा० असमा सिद्दीकी

रागों पर आधारित गायन प्रतियोगिता

कु० प्रिया	बी.ए.	प्रथम
कु० सबिया	बी.ए.	द्वितीय
कु० मुस्कान	बी.ए.	तृतीय
कु० नगमा	बी.ए.	तृतीय

निर्णायक मण्डल – डा० अनुपमा गर्ग, डा० अल्का आर्य, डा० उमा रानी

आशु भाषण प्रतियोगिता

कु० मेघा राठी	बी.ए. VI Sem	प्रथम
कु० दानिया	बी.ए. IV Sem	द्वितीय
कु० वंशिका शर्मा	बी.ए. VI Sem	द्वितीय
कु० शिवाक्षी त्यागी	बी.एस.सी. VI Sem	तृतीय

निर्णायक मण्डल – डा० किरन बाला, डा० ज्योतिका, श्रीमति शैली सिंघल

सांस्कृतिक कार्यक्रम में वाद्य यंत्र (ढोलक) की आकर्षक प्रस्तुतिकरण–

कु० वैशाली	बी.ए. VI Sem

महात्मा गाँधी स्मृति दीर्घा : मोहन से महात्मा तक का सफर

सांस्कृतिक समिति एवं गाँधी स्मरणोत्सव समिति के संयुक्त तत्वावधान में दिनाँक 2 अक्टूबर 2019 को 'महात्मा गाँधी स्मृति दीर्घा' का आयोजन किया गया। इस दीर्घा में महात्मा गाँधी के जीवन दर्शन और व्यक्तित्व को विभिन्न प्रकार की वस्तुओं के प्रदर्शन द्वारा जीवंत बनाने का प्रयास किया गया। इस दृष्टि से गाँधी जी की प्रिय वस्तुओं जैसें यरवदा चरखा (जिसे वे यरवदा जेल में चलाया करते थे) लाठी, चश्मा, जनेऊ, घड़ी, खड़ाऊ, लालटेन, खादी के वस्त्र, नमक, नील, चन्दन इत्यादि के साथ दीर्घा में दांडी यात्रा का भित्ति चित्र तथा रेत पर उत्कीर्ण गाँधी जी प्रतिमा का प्रदर्शन विशेष उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त डा० कामना जैन के कुशल दिशा निर्देशन में 'मोहन से महात्मा तक' थीम पर गाँधी के जीवन की विभिन्न घटनाओं और क्रियाकलापों को छाया चित्रों की एक श्रृंखला के रूप में प्रदर्शित किया गया। डा० भारती शर्मा द्वारा महात्मा गाँधी पर आधारित रा० से० यो० कार्यक्रमों की फोटो फाइल को भी दीर्घा में प्रदर्शित किया गया। गाँधी जी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व और कृतित्व का साक्षात दर्शन कराती यह ज्ञानवर्द्धक और प्रेरणास्पद स्मृति दीर्घा नि:संदेह दर्शकों के लिये एक अविस्मरणीय और अभूतपूर्व अनुभव रहा।

कैरियर गाइडेन्स एण्ड प्लेसमेन्ट सेल

- 06.08.2019 CIMA (Corporate Integrated Management Accounts) पर आधारित ओरिएन्टेशन प्रोग्राम का आयोजन किया गया। जिसमें श्री अशोक कुमार शर्मा ने इससे सम्बन्धित क्षेत्रों में रोजगार की सम्भावनाओं तथा सर्टिफिकेट कोर्स के विषय में बताया।

- 11.09.2019 छात्राओं की कैरियर, फाइनेन्शियल, व्यक्तिगत समस्याओं के निस्तारण हेतु मेन्टर्स प्राध्यापिकाओं की सूची छात्राओं हेतु लगाई गयी।
- 23.09.2019 चरित्र निर्माण विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया जिसमें महर्षि मार्कन्डेय यूनिवर्सिटी मुलाना, हरियाणा से आये श्री विक्रान्त वशिष्ठ ने चरित्र निर्माण के महत्वपूर्ण बिंदुओ पर प्रकाश डाला।
- 05.10.2019 Jaipuria Institute of Management के संयुक्त तत्वावधान में व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसमें श्री गिरीश बहुगुणा तथा श्री नारायण सिंह सामन्त ने Goal Setting and Time Management विषय पर छात्राओं को विस्तारपूर्वक जानकारी दी।
- 26.10.2019 प्राध्यापिकाओं को सुनियोजित मेन्टरिंग के लिए मेन्टरिंग परफार्मा दिया गया जिसमें मेंटरिग की विस्तृत जानकारी (नाम, मेंटरिग विषय, समाधान इत्यादि) प्राप्त करने का प्रयास किया गया, जिससे तत्सम्बन्धी कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सके।
- 26.10.2019 से 29.10.2019 तक :- ई-लर्निंग सेल तथा कम्प्यूटर साइंस विभाग के सयुक्त तत्वावधान में 4 दिवसीय कम्पयूटर प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें कम्प्यूटर साइन्स की छात्रा कु० भारती, कु० प्रियंका वर्मा, कु० हिमांशी, कु० इशिका वर्मा ने छात्राओं को क्रमशः Computer Fundamental filling online form, M.S. word, M.S. Powerpoint इत्यादि का प्रशिक्षण दिया।
- 12.02.2020 माइक्रोबायोलाजी विभाग की कु० दीपा पंवार, कु० हिमांशी के सौजन्य से ओरिऐन्टेशन प्रोग्राम का आयोजन किया गया जिसमें डा० सुप्रीत कौर, सिंह पैथोलाजी ने छात्राओं को 'Career in Laboratory Diagnostic Techniques' पर व्याख्यान दिया।
- 27.02.2020 'संस्कृत भाषा में रोजगार' विषय पर व्याख्यान में श्री प्रताप सिंह जी, श्री प्रेमचन्द्र शास्त्री, श्री मनीष बड़थ्वाल ने संस्कृत से जुड़े रोजगारोन्मुखी कार्यक्रमों के विषय में बताया।
- 02.03.2019 "Improving Learning Skill" विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसमें महर्षि मार्कन्डेय यूनिवर्सिटी मुलाना, हरियाणा के श्री ओम कन्नौजिया ने "Improving Learning Skill" को विकसित करने के विषय में छात्राओं को विस्तृत जानकारी दी।
- 03.03.2020 डा० किरनबाला तथा श्रीमती शैली सिंघल के निर्देशन में COER द्वारा आयोजित Cloud Computing विषय पर आयोजित कार्यशाला में 47 छात्राओं के भाग लिया जिसमें डा० अन्जू मलिक ने Cloud Computing डा० रवीन्द्र सैनी ने 'Problem and Solution' डा० प्रियव्रत कुमार ने Computer Networking and Basic Computer application विषय पर प्रभावशाली व्याख्यान दिये।

छात्रा कल्याण परिषद/समिति

शिक्षक दिवस- गुरु वंदन-छात्र अभिवंदन समारोह

महाविद्यालय की छात्रा कल्याण समिति तथा भारत विकास परिषद 'समर्पण शाखा' रुड़की के संयुक्त तत्वावधान में शिक्षक दिवस समारोह उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर छात्राओं ने प्रेरक गीत श्लोक, विचार प्रस्तुति एवं भारत के विख्यात विद्वानों व महापुरुषों के अमृत वचनों को चरित्र अभिनय के साथ प्रस्तुत किया। **'गुरु वंदन छात्र अभिनंदन'** कार्यक्रम के अन्तर्गत शिक्षिका वर्ग में डा0 अर्चना मिश्रा (प्राचार्या), डा0 अनुपमा गर्ग, डा0 कामना जैन, डा0 किरन बाला, डा0 अस्मा सिद्धीकी, डा0 ज्योतिका तथा डा0 शालिनी वर्मा को प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। छात्राओं की श्रेणी में बी.ए. की कु0 जेबा,

कु0 मनीषा डाबर, कु0 एलिश तथा बीएस.सी. की कु0 प्रगति सिंह, तेजस्वी धीमान एवं श्रुति कुमारी को सम्मानित किया गया।

निर्धन छात्रा कल्याण कोष- इसके अन्तर्गत कुल 35 छात्राओं के प्रार्थना पत्र प्राप्त हुए थे, जिसमें से 17 छात्राओं को 500/- रूपये की धनराशि छात्रवृत्ति के रूप में प्रदान की गई।

स्वयंसिद्धा छात्रा कल्याण कोष- मेधावी एवं जरूरतमंद छात्राओं की शिक्षा को निर्बाध जारी रखने के उद्देश्य से प्रस्तावित 'स्वयं सिद्धा छात्रा कल्याण कोष ने वर्ष 2019-20 में मूर्त रूप ले लिया। प्राचार्या महोदया, छात्रा कल्याण समिति एवं वरिष्ठ प्राध्यापिका वर्ग से विचार विमर्श के उपरान्त कोष के संचालन हेतु आवश्यक नियम निर्धारित कर सत्र 2019-20 हेतु छात्राओं से आवेदन पत्र आमंत्रित किये गये। प्राचार्या एवं प्रवक्ता वर्ग से प्राप्त सहयोग राशि से सभी नियमों को दृष्टिगत रखते हुए कुल 20 आवेदनकर्ता छात्राओं में से 7 छात्राओं का चयन छात्रवृत्ति हेतु किया गया।छात्रवृत्ति हेतु छात्राओं का चयन उनकी नियमित उपस्थिति, शैक्षिक परिणाम, विभिन्न गतिविधियों में सहभागिता, अनुशासन एवं आचरण तथा परिवार की आर्थिक स्थिति के आधार पर किया गया। प्रत्येक छात्रा को 2000/- रूपये की आर्थिक सहायता प्रदान की गई।

सशस्त्र सेना झंडा दिवस हेतु- छात्रा कल्याण समिति द्वारा कुल 20000/- धनराशि एकत्रित करके प्रेषित की गई जिसे दिनांक 22.2.2020 को सैनिक कल्याण कोष में दिया गया।

- महिला संस्कृति क्लब आई.आई.टी. रुड़की द्वारा महाविद्यालय की 5 निर्धन छात्राओं को छात्रवृत्ति के रूप में 2000/- प्रति छात्रा प्रदान किये गये।
- महाविद्यालय में स्थापित बुक बैंक एवं यूनिफार्म बैंक में सहयोग करने हेतु समय-समय पर छात्राओं को व्यक्तिगत एवं सूचना पत्रों के माध्यम से प्रेरित किया गया। सत्र के दौरान अनेक छात्राओं ने इन सुविधाओं से लाभ उठाया।
- राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस (10 फरवरी 2020)-राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय उत्तराखण्ड के सौजन्य से छात्राओं का आवश्यक जानकारी कराने के साथ कुल 266 छात्राओं को एलवेन्जोडेला कृमि नाशक दवा खिलाई गई।

राज्य शिक्षा मंत्री के साथ संवाद कार्यक्रम- दिनांक 29 जून 2020 को माननीय राज्य शिक्षा मंत्री धनसिंह रावत जी के द्वारा राज्य के समस्त महाविद्यालयों के छात्र संघ पदाधिकारियों के साथ फेस बुक पर हुए सजीव संवाद कार्यक्रम (Live Virual Meeting) में महाविद्यालय के छात्र संघ पदाधिकारी एवं अनुशासन समिति के सदस्यों ने ऑन लाइन प्रति भागिता की। इस कार्यक्रम में शिक्षामंत्री ने कोविड-19 लॉकडाउन के दौरान शिक्षा के मार्ग में उत्पन्न हुई समस्याओं एवं छात्र छात्राओं के भविष्य संबंधी आशंकाओं को धैर्यपूर्वक सुना एवं विचार-विमर्श के उपरांत उनकी समस्याओं के निवारण करने का आश्वासन दिया।

"Prevention is better than Cure" कार्यक्रम के अन्तर्गत श्रीमती अंजति प्रसाद के निर्देशन में 14 मार्च 2020 करे Novel Corona Virus से बचाव एवं सावधानी विषय पर आधारित वीडियो क्लिपिंग्स समस्त शिक्षण एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को दिखाई गई। इस कार्यक्रम में प्राचार्या महोदया द्वारा भी आवश्यक जानकारी एवं निर्देश दिये गये।

छात्रा कल्याण समिति एवं ई-लर्निंग सेल के संयुक्त तत्वावधान में कोविड-19 लॉकडाउन के दौरान छात्राओं को रचनात्मक क्रियाकलापों में व्यस्त रखने के उद्देश्य से निम्न गतिविधियाँ संचालित की गई-

1. **विचार लेखन** - अपनी बात, हम वतन के साथ है, तथा कोरोना युद्ध के नायकों को नमन
2. **पत्र लेखन** - कोरोना की जंग: प्रधानमंत्री के नाम एक पत्र

3. **कविता पाठ** – 'एकांतवास और मेरी रचना' इसके अन्तर्गत छात्राओं ने अपनी स्वरचित कविता की वीडियो रिकार्डिंग प्रस्तुत कर प्रतिभागिता की।

दिनांक 22 अप्रैल 2020 **पृथ्वी दिवस की 50 वी वर्षगांठ** के उपलक्ष में छात्राओं हेतु निम्न कार्यक्रम आयोजित किये गये।

पोस्टर प्रतियोगिता– पृथ्वी के लिये वरदान कोरोना संकट।

- Turn Newspaper into wall Art में छात्राओं ने अपनी कला प्रतिभा को नवीन आयाम प्रदान करते हुए प्रतियोगिता की।

मेरे सपने (I have a dream)

आओ! बोयें सपने, उगायें उम्मीदें, काटें सफलताओं की फसल,
सहमंथन से पहुँचे समाधान तक, कर्म है आज सफलता है कल।

प्राचार्या महोदया के निर्देशन में छात्राकल्याण समिति के तत्वावधान में 'सपनों से सहमंथन' तक चलने वाली इस सर्वथा नवीन गतिविधि का उद्देश्य छात्राओं की आकांक्षाओं और क्षमताओं में सामंजस्य स्थापित कर उन्हें सही दिशा देना था। पुस्तकालय में रखी पेटिका 'मेरे सपने' में छात्राओं ने बढ़चढ कर अपने विचार डाले। लॉकडाउन ने 'सहमंथन' की प्रक्रिया को कुछ समय के लिये बाधित अवश्य किया पर पुनः महाविद्यालय खुलने पर छात्राओं के अनुरोध पर प्राध्यापिका वर्ग की संयुक्त कैक में छात्राओं से ऑनाइन जुड़कर 'पेटिका' में बंद सपनों को अनुभवी प्राध्यापिकाओं के सुझावों द्वारा सम्यक् परिणति तक पहुँचाया गया। कैरियर संबंधी विशेष समस्याओं का समाधान डा० किरन बाला द्वारा किया गया।

<u>लॉकडाउन में छात्राओं हेतु हेल्पलाइन</u>–

उच्चशिक्षा निदेशालय एवं प्राचार्या महोदया के निर्देशानुसार लॉकडाउन के दौरान छात्राओं में उत्पन्न हो रहे मानसिक तनाव व आशंकाओं के निवारण हेतु निम्न कदम उठायें गये–

1. महाविद्यालय की वेबसाइट पर शिक्षिकाओं के हेल्पलाइन न0 जारी किये गये।
2. डा0 किरनबाला के निर्देशन में छात्राओं हेतु मेंटरिंग हेतु निर्धारित प्रारूप पर प्रति सप्ताह शिक्षिकाओं द्वारा भेजी गई रिपोर्ट की संक्षिप्त आख्या प्राचार्या को उपलब्ध कराई गई।
3. छात्राओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने हेतु महत्वपूर्ण जानकारी विविध स्रोतो द्वारा प्रदान की गई। स्वस्थ जीवन शैली की जानकारी मीडिया के विविध स्रोतों द्वारा प्रदान की गई। स्वस्थ जीवन शैली हेतु योग एवं प्राणायाम का नियमित रूप से पालन करने का आग्रह भी किया गया।
4. छात्राओं को 'आरोग्य सेतु' एप डाउनलोड करवाया गया।
5. छात्राओं को उनकी व्यक्तिगत रूचिनुसार रचनात्मक कार्यो जैसे संगीत, नृत्य, अभिनय, हस्तकलाएं एवं बागवानी इत्यादि में व्यस्त रहने की सलाह दी गई तथा विविध रचनात्मक एवं शैक्षिक प्रतियोगिताओं का ऑनलाइन आयोजन किया गया।

e-learning Cell सत्र 2019-20

- ई-लर्निंग समिति द्वारा छात्राओं को ऑनलाइन भरी जाने वाली छात्रवृत्तियों तथा प्रतियोगिताओं आदि की जानकारी सूचना पट के माध्यम से उपलब्ध करायी गयी।

महाविद्यालय के कम्प्यूटर विभाग के सहयोग से बी.ए. की छात्राओं हेतु चार दिवसीय कार्यशाला (26 नवम्बर 2019 से 29 नवम्बर 2019) बेसिक कम्प्यूटर जानकारी प्रदान करने हेतु आयोजित की गई।

E-learning cell द्वारा लॉकडाउन के दौरान भी अनेक गतिविधियाँ आयोजित की गई –

(a) Article writing - Lockdown and online Education
(b) Mentorship Programme by Ex-students : महाविद्यालय की उत्तीर्ण छात्राओं कु० किरन, कु० शबनम, कु० नाजिया हसन ने अपने Video Clipings बनाकर Whatsapp Group पर भेजे ताकि वे वर्तमान अध्ययनरत छात्राओं को शिक्षा सम्बन्धी कुछ दिशा निर्देश अपने अनुभवों के आधार पर दे सकें।

महाविद्यालय स्तरीय वेबिनार : 5.06.2020 विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर E-learning cell द्वारा एक महाविद्यालय स्तरीय वेबिनार आयोजित किया गया। जिसका विषय ''पर्यावरण चर्चा'' (Environment Interaction) था। विभिन्न प्राध्यापिकाओं के द्वारा इस कार्यक्रम में अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए गए .

1. Dr. Alka Arya कोविड–19 एवं पर्यावरण तथा स्वरचित कविता–'सवक'
2. Dr. Uma Rani-Protection of Environment from Nuclear waste
3. Dr. Kamna Jain- Covid-19 : Blessing in Disguise for Mother Earth
4. Dr. Seema Roy प्रकृति ने सुधारी इंसानों की गलती
5. Mrs. Anjali Prasad - Myths & Reality About the Environment
6. Dr. Anju Sharma - हिंदी साहित्य में वर्णित पर्यावरण चेतना की वर्तमान में प्रासंगिकता
7. Mrs. Neha Sharma- Havoc of pollution and efforts to safe Environment
8. Ms. Deepa Panwar - Natural Therapies Improve Immune System to fight against Covid-19.
9. Ms. Mehnaz - Representation of Nature in Romanticism.
10. Dr. Kiran Bala - Impact of Covid-19 on Environment

शोध समिति: दिनाँक 12.03.2020 को शोध समिति एवं समाजशास्त्र विभाग के सयुक्त तत्वावधान में रिसर्च मैथडोलॉजी, विषय पर आधारित कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें विषय विशेषज्ञ के रूप में प्रसिद्ध समाजशास्त्री प्रो० जे०पी० पचौरी, पूर्व विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग हे०न०ब०गु० वि०वि० ने शोध के विभिन्न चरणों के विषय में व्यवस्थित एवं विस्तृत जानकारी दी, कार्यशाला के अन्तिम सत्र में शोध सम्बन्धी बाधाओं एवं शंकाओं का निवारण भी किया गया।

Disha Wall magazine – इस वर्ष राजनीति विज्ञान विभाग के द्वारा दिशा भित्ति पत्रिका– 'जल संरक्षण' विषय पर आयोजित की गई तथा छात्राओं द्वारा 'दिशा भित्ति बोर्ड' के लिए दी गई उत्कृष्ट प्रस्तुतियों हेतु उन्हें पुरस्कृत भी किया गया। हिन्दी विभाग द्वारा 'जल संरक्षण हमारा दायित्त्व' समाज शास्त्र विभाग द्वारा 'धार्मिक सद्भाव' विषय पर भित्ति पत्रिका तथा दिशा क्विज का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त रसायन विज्ञान विभाग द्वारा अंतराष्ट्रीय महिला दिवस, भौतिक विज्ञान विभाग द्वारा 'विज्ञान क्षेत्र में महिलाएं' तथा गणित विभाग द्वारा मातृभाषा दिवस पर भित्ति पत्रिका को प्रदर्शित किया गया।

छात्रा सुरक्षा एवं सशक्तीकरण प्रकोष्ठ

- दिनांक 3.8.19 को प्रकोष्ठ द्वारा एक प्रेरक उद्बोधन 'Key to Success' छात्राओं हेतु आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रोफेसर नवनीत अरोड़ा, मैकेनिकल विभाग, आई.आई.टी. रुड़की थे।
- छात्राओं को मानसिक एवं शारीरिक रूप से सशक्त बनाने के लिये त्रैमासिक ताई क्वांडो प्रशिक्षण (नि:शुल्क) दिनांक 18.9.2019 से 18.1.2020 तक आयोजित किया गया।
- दिनांक 8 मार्च 2020 को महिला दिवस में अवसर पर छात्राओं ने जिला महिला पुलिस लाइन हरिद्वार में

महिलापुलिस कर्मियों को ताइक्वांडो प्रशिक्षण दिया इस अवसर पर श्रीमती कमलेश उपाध्याय एसपी सिटी हरिद्वार, सुश्री पूर्णिमा सीओ सिटी हरिद्वार, श्री स्वप्न किशोर सिंह एसपी देहात रुड़की, श्रीमती निकिता अग्रवाल, श्रीमती सुधा सेंथिल ने छात्राओं को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर उत्साहवर्धन किया।

माई गर्वनमेंट पोर्टल-2019-20

- श्रीमती अंजली प्रसाद (नोडल अधिकारी) के दिशा निर्देशन में मानव संसाधन मंत्रालय भारत सरकार द्वारा 'My Gov App' पर आयोजित Online quiz में महाविद्यालय की 12 छात्राओं ने प्रतिभागिता की, जिसमें पर्यटन मंत्रालय द्वारा आयोजित 'एक भारत श्रेष्ठ भारत क्विज' तथा 'कोविड-19' क्विज उल्लेखनीय है।
- दिनांक 1.5.2020 को यशवंत राव चवन वारना महाविद्यालय कोल्हापुर, महाराष्ट्र द्वारा आयोजित-Covid-19 Pandemic General Awareness Quiz में महाविद्यालय की 15 छात्राओं ने प्रतिभागिता कर प्रमाणपत्र प्राप्त किये।

ग्रीन ब्रिगेड- हमारी धरा हमारी धरोहर

- पर्यावरण संरक्षण को समर्पित ग्रीन ब्रिगेड ने गत वर्षो की भांति स्वच्छ भारत अभियान, जल संरक्षण एवं पर्यावरण जागरुकता हेतु सक्रिय योगदान दिया। दिनाँक 15.10.2019 को एक ओरिएन्टेशन कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें छात्राओं को पर्यावरण जागरुकता अभियान को जन-जन तक पहुँचाने हेतु आगामी कार्ययोजना से अवगत कराया गया। सत्र पर्यन्त स्वच्छता अभियान एवं वृक्षारोपण के प्रति लोगों में चेतना का संचार करने हेतु छात्राओं की छः टोलियाँ बनाई गई, जिन्होंने निर्धारित कार्यक्रमानुसार महाविद्यालय परिसर एवं आसपास फैली गंदगी का निस्तारण करने के साथ लोगों को जल संरक्षण एवं पर्यावरण स्वच्छता के प्रति जागरूक भी किया।
- दिनाँक 29.02.2020 को ग्रीन ब्रिगेड टीम की 38 छात्राओं को आई.आई.टी. रुड़की में आयोजित **राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन** की गतिविधियों पर आधारित **प्रदर्शनी का अवलोकन** श्रीमति अंजलि प्रसाद, डा० अंशु गोयल एवं डा० अन्जु वर्मा के निर्देशन में कराया गया। जिसमें छात्राओं को गंगा जैव-विविधता संरक्षण के अन्तर्गत विलुप्त प्रजातियों, मछलियों, कछुओं, स्तनधारी जीवों एवं पर्यावरणीय स्वच्छता से सम्बन्धित महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई एवं 'नमामि गंगे परियोजना' के अन्तर्गत गंगा स्वच्छता की शपथ भी दिलाई गई।

विस्तार प्रकोष्ठ

- हिन्दी दिवस पखवाड़े के अन्तर्गत 14.09.2019 से 22.09.2019 तक 'गाँधी साहित्य' विषय पर लाइब्रेरी सेशन आयोजित किया गया।
- दिनांक 02.10.2019 को गाँधी जयंती के अवसर पर हिन्दी साहित्य में गणमान्य कवियों द्वारा रचित कविताओं का संकलन विस्तार बोर्ड पर प्रदर्शित किया गया।
- दिनांक 11.03.2020 को विस्तार प्रकोष्ठ की ओर से **लघु लेख प्रतियोगिता** 'हर बूँद है कीमती' शीर्षक पर आयोजित की गई।

शिक्षक अभिभावक समिति

महाविद्यालय में गठित शिक्षक अभिभावक समिति के अन्तर्गत छात्रा उपस्थिति मानक, अनुशासन, पाठ्यक्रम व परीक्षा प्रणाली से सम्बंधित मुख्य बिंदुओ पर अभिभावको से सीधे संवाद करने हेतु निम्न बैठकें आहूत की गई-

प्रथम बैठक-दिनांक 3.9.2019 को शिक्षक अभिभावक संघ की प्रथम बैठक में छात्राओं की 75 प्रतिशत अनिवार्य उपस्थिति का मानक, सेशनल व मुख्य परीक्षा, महाविद्यालय में अनुशासन तथा पाठ्यक्रम इत्यादि विभिन्न महत्वपूर्ण बिंदुओं पर आवश्यक जानकारी प्रदान की गई तथा उपस्थित अभिभावकों से फीडबैक भी लिया

गया।

द्वितीय बैठक-दिनांक 6.11.2019 को न्यूनतम उपस्थिति वाली छात्राओं को शपथपत्र भरकर जमा कराने हेतु आवश्यक निर्देश कार्यालय स्तर से पत्रों के माध्यम से प्रेषित किये गये। विश्वविद्यालय द्वारा निर्दिष्ट आतंरिक परीक्षा संबंधी नवीन नियमावली से अभिभावकों को अवगत कराया गया।

तृतीय बैठक-दिनांक 3 मार्च 2020 को बैठक में शिक्षक अभिभावक संघ के चयनित पदाधिकारियों एवं सदस्यों को चर्चा के साथ उनके सुझाव आमंत्रित किये गये।

चतुर्थ बैठक- दिनांक 27.7.2020 को कोविड-19 लॉकडाउन के कारण ऑनलाइन बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में ऑन लाईन शिक्षण से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर चर्चा के साथ अभिभावकों की समस्याओं पर विचार विमर्श किया गया। आगामी सत्र में होने वाली ऑन लाइन कक्षाओं के संचालन के संदर्भ में उन्हें आवश्यक निर्देश भी दिये गये।

महाविद्यालय की उपलब्धियाँ

स्वर्णिम उपलब्धि- दिनांक 1 दिसम्बर 2019 को हेमवती नन्दन बहुगुणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय गढ़वाल के दीक्षांत समारोह में महाविद्यालय की एम.ए. चित्रकला की छात्रा कु0 वैशाली को विश्वविद्यालय में सर्वोच्च अंक (8.9.सी.जी.पी.ए.) प्राप्त करने हेतु स्वर्ण पदक प्रदान कर सम्मानित किया गया।

विशेष उपलब्धि- दिनांक 25 अगस्त 2019 को छात्राओं ने 27वें जिला ताइक्वांडो चैंपियनशिप में प्रतिभाग कर निम्न पदक प्राप्त किए - **स्वर्ण पदक** उषा रानी बी.एससी. IV सैमे., दीक्षा बी.एससी. VI सेम., आंचल चंद्रा बी. एससी. VI सेम., **रजत पदक** मेघा बी.एससी. VI सेम., **कांस्य पदक** माहीम बी.एससी. VI सेम., शिवा बी.ए. VI सेम., नगमा बी.एससी. IV सेम.।

अन्य उपलब्धियाँ- संयुक्त राष्ट्र सूचना केन्द्र भारत एवं भूटान तथा श्री रामचंद्र मिशन एवं हार्टफलनेस इंस्टीट्यूट द्वारा ''प्रेम विस्तार है, स्वार्थ संकुचन' विषय पर आधारित **राज्य स्तरीय निबंध लेखन प्रतियोगिता** में महाविद्यालय की कु0 सना परवीन (B.Sc II Year) को हरिद्वार जोन में द्वितीय तथा कु0 अदिति (B.Sc II Year) को सांतवा स्थान प्राप्त करने पर संस्था द्वारा प्रशस्ति पत्र एवं पुरस्कार प्रदान किया गया। कु0 देवयांशी चौधरी तथा कु0 शिवांगी त्यागी को श्रेष्ठ निबंध लेखन की श्रेणी में पुरस्कृत किया गया।

1. दिनांक 21 फरवरी 2020 को विशम्भर सहाय ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट्स रुड़की द्वारा आयोजित **अंर्तमहाविद्यालयी रंगोली प्रतियोगिता** में महाविद्यालय की चार छात्राओं की टीम (कु0 सोफिया, कु0 शाजमा, कु0 जीनत, कु0 कौसर जहां ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।
2. संस्कार भारती, मेरठ (यू. पी.) द्वारा कोविड-19 विषय पर आयोजित **राष्ट्रीय ऑन लाइन चित्रकला प्रतियोगिता** (दिनांक 9 मई से 9 जून 2020) में कु0 मनीषा तथा कु0 शिवानी सैनी (बी.ए. तृतीय) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।
3. 'स्नेहिल संस्था देहरादून' द्वारा विश्वयोग दिवस (22 जून 2020) पर आयोजित **राष्ट्रीय ऑन लाइन पोस्टर प्रतियोगिता** में कु0 वन्दना (एम.एम. चतुर्थ सेम.) को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ।

Internal Quality Assurance Cell (IQAC)

सत्र 2019-20 के लिये महाविद्यालय में गठित आतंरिक गुणवता सुनिश्चयन समिति (IQAC) में प्रबंध समिति के सचिव श्री तेज बहादुर जी (प्रतिनिधि-प्रबंध समिति) प्राचार्या डा0 अर्चना मिश्रा (चेयरपर्सन), डा0 एस0 के0 गुप्ता, पूर्व प्राचार्य राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ऋषिकेश (कम्यूनिटी मेम्बर) प्रोफेसर स्मिता झा, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, आई0 आई0 टी0 रुड़की, डा0 अनुपमा गर्ग, एसो. प्रो. अंग्रेजी

(समन्वयक) डा0 अलका आर्य एसो0 प्रोफेसर चित्रकला (सचिव), डा0 कामना जैन, सीनियर असि. प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, सुश्री अंजलि प्रसाद, असि. प्रोफेसर समाजशास्त्र, डा0 अस्मा सिद्दीकी, प्रवक्ता, कम्प्यूटर साइंस (सदस्य) तथा कु0 (B.A. IV Sem) अंतिम वर्ष व कु0 B.Sc. VI Sem ने अपना कार्यभार ग्रहण करते हुए सक्रिय भूमिका निभाई।

1. (IQAC) की कुल चार औपचारिक बैठकें क्रमशः दिनांक 7.9.19, 13.1.20, 24.4.20, 13.5.20 को आहूत की गई जिसमें विभिन्न विकास कार्य योजनाओं के लिये विचार विमर्श हुआ और अधिकांश निर्धारित लक्ष्यों को पूर्ण भी किया गया।
2. सत्र 2018–19 की Annual Quality Assurance Report (AQAR) नैक पोर्टल पर अपलोड की गई।
3. दिनांक 17.12.19 को Student Satisfaction Survey (S.S.S) छात्रा संतुष्टि सर्वेक्षण के विषय में छात्राओं को जागरूक बनाने हेतु एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई तथा परिसर में छात्रा संतुष्टि सर्वेक्षण के होर्डिंग्स लगवाये गये।
4. दिनांक 14.8.19 को नवीन प्रवेशार्थियों को महाविद्यालय के पठन–पाठन, अन्य गतिविधि अनुशासन एवं कार्य शैली से परिचित कराने के लिये अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया।
5. दिनाक 23.11.19 को प्राध्यापिकाओं हेतु Knowledge of Basic Computer Skills as a part of professional Development विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई।
6. दिनांक 23.1.20 को Student Satisfaction Survey हेतु सभी प्राध्यापिकाओं के लिये एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित हुआ।
7. दिनांक 24.1.20 को स्वयं सिद्धा छात्रा कल्याण कोष के गठन एवं उसके उद्देश्यों से प्राध्यापिका वर्ग को परिचित कराने एवं उनका सहयोग प्राप्त करने हेतु एक बैठक आयोजित की गई।
8. दिनांक 25.1.20 को फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम के अन्तर्गत MOOC Awareness Program आयोजित किया गया।
9. दिनांक 12.3.20 को NAAC-Revised Accreditation Framework (RAF) विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला प्राध्यापिका वर्ग के लिये आयोजित की गई।
10. दिनांक 7.6.2020 को Impact of Covid 19 on Environment विषय पर International Webinar आयोजित किया गया।
11. सत्र 2021 से प्रवेश प्रक्रिया को ऑनलाईन कराने हेतु विचार किया गया।
12. कैरियर एडवान्मेंट स्कीम के अन्तर्गत महाविद्यालय IQAC द्वारा प्रपत्रों की प्रामाणिक जाँच के उपरान्त डा0 अर्चना मिश्रा, डा0 अनुपमा गर्ग तथा डा0 अलका आर्य को हे0 न0 ब0 गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर द्वारा गठित स्क्रीनिंग समिति ने एसो0 प्रोफेसर से प्रोफेसर पद एवं वेतनमान (stage 4 to 5) पर प्रोन्नति हेतु संस्तुति प्रदान की।

भूतपूर्व छात्रा संघ

भूतपूर्व छात्रा संघ की गतिविधियों को संयोजित करते हुए Lockdown Covid-19 के दौरान अधिकतर छात्राओं को Whatsapp group से जोड़ा गया तथा विभिन्न स्तरों पर महाविद्यालय गतिविधियों में उनका सहयोग प्राप्त करने का प्रयास किया गया। सत्र 2019–20 में महाविद्यालय में भूतपूर्व छात्रा संघ के सौजन्य से निम्न गतिविधियाँ सम्पन्न हुईः–

- दिनांक 07.03.2020 गणित विभाग के सहयोग से पूर्व छात्राओं द्वारा छात्राओं हेतु एक Mentorship program आयोजित किया गया।
- Covid-19 के दौरान Alumni को Whatsapp group Platform पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कुछ भूतपूर्व छात्राओं ने पोस्टर बनाकर प्रेषित किये।

राष्ट्रीय सेवा योजना (सत्र 2019-20)

- **नियमित गतिविधियों की आख्या** - राष्ट्रीय सेवा योजना की कार्यक्रम अधिकारी डा्र भारती शर्मा के दिशा-निर्देशन में स्वयं सेवी छात्राओं द्वारा निम्न गतिविधियाँ संपन्न की गईं।
- मई से जुलाई माह के दौरान **स्वच्छ भारत समर इंटर्नशिप** कार्यक्रम के अन्तर्गत योगदान दिया।
- 06 से 08 अगस्त 2019 स्वच्छता पखवाड़ा आयोजन के उपलक्ष में **जल संरक्षण एवं चुनौती व प्रयास** विषय पर सेमिनार का आयोजन।
- 14.08.2019 **पोस्टर प्रतियोगिता व घोष प्रतियोगिता का आयोजन।**
- 15.08.2019 स्वतंत्र भारत उज्जवल भारत विषय पर काव्य पाठ एवं विचार प्रस्तुति।
- 24.08.2019 आर्युवाटिका में 'नई शवासों' सूत्र वाक्य के साथ पौधे रोपे गए।
- 29.08.2019 'उज्जवल सवेरा लाएंगे' शंखनाद के साथ फिट इंडिया शपथ ली गई।
- 27.09.2019 गाँधी स्मरणोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत रा.से.यो. के सहयोग से नगर पर्यंत रैली का आयोजन, पर्यावरण संरक्षण, प्लास्टिक मुक्त भारत विषय पर नुक्कड़ नाटक तथा नमक आन्दोलन व दांड़ी मार्च का मंचन।
- 01.10.2019 को 'सिंगल यूज प्लास्टिक मुक्त हरिद्वार' बनाने की शपथ 1500 नागरिकों के मध्य संपन्न।
- 24.10.2019 महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई व नगर निगम रुड़की के समायोजन में 'आदमी को क्या हो गया है शहर शहर गंदगी हो रहा है : विषय पर महाविद्यालय स्तरीय निबंध प्रतियोगिता की प्रतिभागी छात्राओं को नगर आयुक्त नूपुर वर्मा द्वारा पुरस्कृत किया है।
- 01.11.2019 सरदार वल्लभभाई पटेल जयंती के अवसर पर काव्य पाठ प्रतियोगिता तथा स्वच्छता की शपथ।
- 19 से 25 नवंबर 2019 - कौमी एकता सप्ताह व राष्ट्रीय समरसत्ता दिवस संबंधी गतिविधियों के अन्तर्गत 'समान व्यवहार व समानता का व्यवहार होने पर विविधता भी समाज का अलंकार बन जाती हैं' विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन
- निदेशालय के आदेश पर दिनांक 10.11.2019 महाविद्यालय में Anti-Drug Clinic की स्थापना की गई।
- 26.11.2019 संविधान दिवस पर सामाजिक एकता हेतु मानव श्रृंखला का निर्माण तथा N.S.S extempore Exam quiz का आयोजन।
- 24.01.2020 बालिका दिवस के अवसर पर 'स्पर्श खुरदुरा हो तो रोती है बेटियाँ' विषय पर काव्य पाठ प्रतियोगिता।
- 26.01.2020 रेड रिबन क्लब का गठन संपन्न।
- स्वंयसेवी छात्रा कुमारी शिवानी ने राज्य स्तरीय योगासन प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया।

वैश्विक महामारी कोविड-19 लॉकडाउन के दौरान आयोजित गतिविधियां-

उक्त महामारी के दौरान स्वयंसेवी छात्राओं ने सराहनीय कार्य करते हुए जिला समन्वयक अधिकारी श्री एस. पी. सिंह व राज्य एन.एस.एस. अधिकारी श्री अजय अग्रवाल तथा रीजनल डायरेक्टर श्री अशोक श्रोत्री द्वारा ली गई दैनिक बैठक में निर्गत निर्देशों का परिपालन करते हुए निम्न गतिविधियां संपन्न की –

दिनांक	जागरूकता एवं, stress management sambandhi गतिविधियां (कुल 11)	ई क्विज वेबीनारबैठक (कुल 10)	शासन के स्तर पर प्रस्तावित गतिविधिया (कुल 15 गतिविधियां)	लाभार्थियो की संख्या	विविध प्रतियोगिताए कुल 09	टिप्पणियां
From	ऑडियो, वीडियों, नाट्य अभिनय, योगाभ्यासये सम्वादमाध्यम	विश्वविद्यालएम एचआरडी आयोजित व राष्ट्रीय स्तर	Education t o young ones, fit hai India to hit hai India, मेरा घर मेरा स्कूल, सुरक्षित दादा दादी नाना नानी गंदगी मुक्त भारत, एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत गंदगी मुक्त भारत स्वच्छ आसपास गतिविधियां, पशुधन संरक्षण आत्मनिर्भर भारत के सपने को साकार करती छात्राओं की गतिविधियां, राखी निर्माण, टोकेंगे कोरोना को रोकेंगे अभियान, कोरोना जागरूकता वॉल पेंटिंग हरेला पर्व के अवसर पर पौधारोपण 14 to 20 june 2020 tak rashtra sevika samiti ke yog shivir mein yogabhyas covid-19 training Red cross day जरूरतमंदों को सूखा राशन, कवि सम्मेलन, इत्यादि	सोशल मीडिया के माध्यम से नगर व ग्राम की दूरियों को पाटने का प्रयास किया गया, रा.से.यो. के 40 स्वयं सेवियों द्वारा लगभग 500 लोगों से संर्पक किया गया।	लेख विश्व विद्यालय स्तरीय योग प्रतियोगिता, Poster making, Ghosh pratiyogita	स्वंयसेवी छात्राओं के निस्वार्थ प्रयासों एवं योगदान के लिए रीजनल लेवल से अनेक प्रशस्ति टिप्पणियां प्राप्त हुई।

मास्क प्रबंधन व आबंटन– महाविद्यालय की रा.से.यो., एनजीओ जागृति ऑल इंडिया विमिंस कांन्फ्रेंस व यूथ ब्रिगेड के संयोजन से कुल 3000 मास्क, 22 गांव की स्वयंसेवी छात्राओं ने 3000 मास्क बनाए जिनमें से 1000 मास्क नगर निगम की हेल्पलाइन, 1000 मास्क डीएम हरिद्वार, ग्रामीण स्तर पर गांव एवं आशाओं के माध्यम से कुल 1000 मास्क वितरित किए।

कुल सौ I Got दीक्षा रजिस्ट्रेशन, कुल 10 पोस्टर प्रतियोगिताएं 10 ऑडियो व्याख्यान, 70 स्ट्रेस मैनेजमेंट वीडियोस जैसे ययाति शर्मिष्ठा संवाद, गार्गी याज्ञवल्क्य संवाद, गांधी नमक आंदोलन ओमनाद की वैज्ञानिक प्रमाणिकता इत्यादि। 22 ग्रामों की 30 स्वयंसेवी छात्राओं ने रीजनल डायरेक्टर एन.एस.एस.के आवाहन पर लगभग 500 प्राइमरी छात्र व छात्राओं को अपने अपने गांव में शिक्षित किया, ग्राम स्तर पर 22 गाँवों की छात्राओं ने एक दिवसीय शिविर आस्था एजुकेशन टू यंग वंस कैंपेन के अंतर्गत लगभग 500 छात्र व छात्राओं को शिक्षित किया।

एक दिवसीय शिविर आख्या (2019-2020)

दिनांक 24.9.2019 – राष्ट्रीय सेवा योजना स्वर्ण जयंती स्थापना दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि जिला समन्वयक श्री एस.पी. सिंह जी द्वारा 'राष्ट्रीय सेवा योजना क्यों, किस लिए एक विमर्श शीर्षक से वक्तव्य तथा जल संरक्षण : एक चुनौती व प्रयास शीर्षक के अंतर्गत निबंध प्रतियोगिता, आयुर वाटिका में स्वयंसेवी छात्राओं द्वारा श्रमदान, 'ताऊ बोल्या ताई तै सबसे बड़ा काम सफाई तै, जैसे नारों के साथ घोष प्रतियोगिता, प्लास्टिक मुक्त भारत शीर्षक के अंतर्गत पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गई।

दिनांक 02.10.2019 गांधी स्मरण उत्सव आयोजन महाविद्यालय में गाँधी जी से सम्बंधित फोटो फाइल का प्रदर्शन तथा स्तन कैंसर जागरुकता माह के अन्तर्गत डा० मंजुला, एम.डी. गायनेकोलोजिस्ट द्वारा अतिथि व्याख्यान।

दिनांक 30.10.2019 – राष्ट्रीय एकता दिवस के उपलक्ष में सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्म दिवस के अवसर पर श्रमदान, सांस्कृतिक कार्यक्रम, एकता हेतु मानव श्रृंखला का निर्माण, राष्ट्रीय एकता पर आधारित ऑन द स्पॉट पोस्टर प्रतियोगिता, काव्य पाठ प्रतियोगिता, विचार प्रस्तुतियाँ इत्यादि।

26.1.2020 – गणतंत्र दिवस के अवसर पर ''संविधान व राष्ट्र के नाम पाती'' शीर्षक के अंतर्गत विचार प्रस्तुतियाँ, वंदे मातरम शीर्षक से काव्य प्रस्तुति, रक्तदान आवाहन शीर्षक के अंतर्गत घोष प्रतियोगिता, मेरी जान तिरंगा है अरमान तिरंगा है विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता, रेड रिबन क्लब का गठन, सुरक्षा उपायों का संकल्प एड्स का एकमात्र विकल्प विषय पर अतिथि व्याख्यान, निजी हितों से ऊपर उठकर राष्ट्र हित को नमन करें, विषय पर श्रीमती भावना त्यागी प्रांतीय कार्यवाहक का राष्ट्रीय स्वयं सेविका संघ द्वारा अतिथि व्याख्यान संपन्न।

रा0 से0 यो0 सात दिवसीय विशेष शिविर आख्या

सात दिवसीय विशेष शिविर दिनांक 8.2.2020 से दिनांक 14.2.2020 तक अभिगृहीत ग्राम शंकरपुर में लगाया गया। शिविर का शुभारंभ अग्नि मंत्रों, महाविद्यालय प्राचार्य डॉक्टर अर्चना मिश्रा, श्री एसएस नागयान प्रबंधक स्कॉलर्स एकेडमी प्रधानाचार्या कैप्टन दीक्षा शर्मा की उपस्थिति में संपन्न हुआ। शिविर में निम्न सामाजिक, बौद्धिक व सांस्कृतिक गतिविधियां संपन्न हुई –

प्रथम दिवस – 8.2.2020 अभिगृहीत ग्राम शंकरपुर में बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं तथा स्वच्छ भारत मिशन के नारों के साथ रैली निकाली गई तथा 'गांव में नशा' एक त्वरित सर्वेक्षण संपन्न हुआ। बौद्धिक सत्र में महाविद्यालय प्राचार्य डॉ अर्चना मिश्रा जी ने 'सोशल मीडियो एवं युवा' विषय पर व्याख्यान दिया। श्री दिनेश धीमान, सचिव भारत ज्ञान विज्ञान समिति उत्तराखंड ने 'नशा छोड़ो' विषय पर स्वयंसेवी छात्राओं के मध्य चर्चा की। सायं कालीन सत्र में आत्म निर्भरता के लक्ष्य के साथ 'दंड चालन कार्यशाला' श्रीमती भावना त्यागी जी के कुशल निर्देशन में प्रारंभ हुई।

द्वितीय दिवस – (9.2.2020) श्री अजब सिंह जी द्वारा योग प्रशिक्षण, श्री अनिल कुमार जी, एडी.जी.सी. सिविल, लक्सर द्वारा महिला अधिकारें पर व्याख्यान, अभिगृहीत ग्राम में 'स्वस्थ बच्चा ही सुंदर बच्चा' प्रतियोगिता, शिविर के संस्मरण विषय पर लेख प्रतियोगिता तथा यदि हमें कल सजाना है तो आज को तपाना होगा संदेश दिया गया।

तृतीय दिवस व चतुर्थदिवस – (10.2.2020 – 11.2.2020) सचेतन, स्वच्छ मन व मोबाइल की शुचिता विषय पर श्री रमेश भटेजा, ब्रांड एंबेडर स्वच्छ भारत अभियान रूड़की ने व्याख्यान दिया व अभीगृहीत ग्राम में **स्वच्छ भारत मिशन रैली**, कल आजकल लोकल लक्ष्य वहम स्वयं सिद्धि की ओर, जैसे लक्ष्य के साथ हाथ के हुनर हैडीक्राफ्ट, अचार डालने का कार्य प्रारंभ हुआ, अष्टभुजा नव निधि की दाता विषय पर चर्चा व नारी अस्तित्व को लेकर कवियित्री श्रीमती अलका घनशाला ने छात्राओं के साथ काव्य संध्या में इस विचार को साझा किया कि 'ना तो कोई देहरी लागी ना थोडी लागी ना थोड़ी कोई लीख आंचल से बांधी मा तेरी हर सीख।'

पंचम दिवस– 12.2.2020 अभिगृहीत ग्राम में नगर के प्रतिष्ठित नेत्र चिकित्सक डॉ नवीन शर्मा के सौजन्य से, नेत्र चिकित्सा शिविर लगाया गया, ग्राम में श्री राजीव अग्रवाल प्रधानाचार्य आनंद स्वरूप आर्य सरस्वती विद्या मंदिर ने 'सामाजिक समरसता उन्नति का सरल रास्ता' विषय पर ओजस्वी उद्बोधन दिया, श्रीमती उर्मिला पुंडीर, प्रबंधक का शिवालिक पब्लिक स्कूल ने कथा साहित्य पर चर्चा की व जिला समन्वयक श्री एस. पी. सिंह जी ने शिविर का निरीक्षण किया तथा शिविर को अनुशासित, ऊर्जावान व ईमानदार शिविर की संज्ञा दी।

षष्ठम दिवस– 13.2.2020 भारतीय संस्कृति जल संरक्षण विषय पर श्रीमती भावना त्यागी, प्रांतीय कार्यवाहिका राष्ट्रीय सेविका समिति का व्याख्यान तथा 'जल है तो कल है' थीम पर घोष प्रतियोगिता व नुक्कड़ नाटक संपन्न हुए।

सप्तम दिवस– 14.2.2020 शिविर के समापन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री सौरभ भूषण शर्मा जी (कोषाध्यक्ष महाविद्यालय प्रबंधन समिति) ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा मुख्य वक्ता के रूप में शिविर की स्वयंसेवी छात्राओं की भूरी भूरी प्रशंसा की। इस अवसर पर स्कॉलर्स एकेडमी के प्रबंधक श्री नागयान जी प्रधानाचार्या कैप्टन दीक्षा शर्मा व महाविद्यालय प्रवक्ता वृंद ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

प्राध्यापिका वर्ग की उपलब्धियाँ

Dr. Archana Mishra (Principal)

Pubished Papers

- Vocationalisation of education: Improving productivity and employability through skill development. Published in Essence: An online international journal for enviromental rehabilitation and conservation, ISSN-0975-6272, issue 30th june 2019, PP-44-49
- महात्मा गांधी–एक संत योद्धा अपराजिता शोध पत्रिका अंक 2019] ISSN-2454-4310, PP-41-44
- Presented one paper in National Seminar
- Chaired inaugenal session of international webinar- Impact of Covid-19 on environment, 7th june 2020.
- Chairperson & key note speaker in the webinar. Environment Interaction on 5 june 2020 organised by SSDPC (PG) College Roorkee.
- Felicitated on Teacher's day 5-9-2019 by Bharat Vikas Parishad, Roorkee under the program Guruvandan.

Dr. Anupma Garg (Professor, Department of English)

- Published paper common errors in English and How to Avoid them in IPEM journal for innovations in Teacher education an annual referred journa, ISSN No- 2581-5881 (Print)
- Published paper 'Gandhi ji's Humanism in the present world' in Aparajita Shodh Patrika, Vol 5, 2019 ISSN No. 2454-4310, an annual refferred journal
- Attended one day workshop on 'IQAC Challenges in Higher Education', in KLDAV P.G. College Roorkee on 25.11.2019
- Presented one paper in National Seminar
- Felicitated on Teacher's day (5.9.2019) by Bharat Vikas Parishad, Roorkee under the program Guru Vandan.

Dr. Alka Arya (Professor, Department of Drawing & Painting)

Pubilshed Papers

- 'Handicrafts of India and its market' in Aparajita shodh patrika, An annual peer Reviewed Multidisciplinary Reserch jouranal, vol V, Jan-Dec 2019, ISSN: 2454-4310 Pg No. 71-75
- Presented Paper in national webinar organized by state Lalit Kala Academy, Lucknow and D.S. College, Aligarh on 21-22 May 2020
- Attended online lecture series on 18-5-2020 - इतिहास की पृष्ठभूमि में वर्तमान organised by Gangashel Mahavidhyalya Bareillly U.P.

Participation in international / national exhibitions/workshop.

- **Group Show** (7th to 11th Nov 2019)-Indian Art Exhibition of Eminent Artist of India by wisdom society of creative Art, New Delhi at Haridwar.
- 3rd All India Art Exhibition of Creative Artists organized by Anand Art Mission, Haridwar on 8th to 17 Dec.2019.
- **Online painting workshop** organized by Baikunthi Devi Kanya Mahavidhyalaya, Agra U.P., On 27-28 june 2020.
- **Online Art Exhibitions-** International-3, National-2
- **Organized 1st online Art Exhibition** "Abhivyakti 2019-20 department of Drawing & Painting S.S.D.P.C (PG) college Roorkee.
- **Award-** Corona Warriar Award for best painting in the seation-Lockdown 3 by kala Bharati society (U.P) may 2020.

Dr. Bharati Sharma, (Senior Assistant Professor, Department of English)

- Presented a paper in interdiscipinary National seminar (27-28 march 2020) GKU, Uttarakhand.
- Participated UGC sponsored short term course from HRDC jawaharlal Nehru University on Gender Sensitization and Social Justice August (05 to 09 2019).
- Participated 7 days online international faculty Development Program entitled 'Recent Trends in science and Technology' organised by ASC, Rajasthan, in collaboration with school of Applied sciences and department of International Relations, Suresh Gyan Vihar University, Jaipur Rajasthan from june 15 to june 20, 2020.
- Outstanding performance Award by Antah Pravah Society for conbribution in Haridwar Literature Festival organised by Antah Pravah Society, Haridwar in Association with Gurukul Kangri Vishwavidyalaya, Haridwar on 10 to 12 january 2020.
- Participted in a one day Workshop entitled "IQAC Challenges in Higher Education" organised by KLDAV College Roorkee on 25/11/2019.
- Assisimilated as a Member of NSS Advisory Commitee, HNB Garhwal University.
- Assisimilated as a member of Women Redressal Cell, Nagar Nigam Roorkee.
- Compliment by Vivekananda Seva Samiti for leadership and personality development program in session 2019-20.
- Corona Warrior Award by Mayor and CEO Roorkee, for social welfare during Epidemic Covid-19.
- Invited as Speaker in National Webinar entitled expectations and responsibilities of youth in present time organised by Tarun Tarang WAVES in collaboration with Ram Jaipal College, Chapra on 06 june, 2020.
- Participated 2 International Webinars and 9 national Awareness Programs/Webinars/Debate Competitions/Quizes etc.

Dr. Kamna Jain (Senior Assistant Professor, Department of Political Science)

- NAAC workshop attended at Dehradun organised under RUSA
- National seminar at Roorkee IIT (22 & 23 Oct. 2019) Paper presented गाँधी, ग्राम स्वराज एवं सतत् विकास की अवधारणा।
- Short Term Course on Moocs e-content development and OER from HRDC, Kumaun, University Nainital.
- Short Term Course on Personality Development from HRDC, Lucknow University, Lucknow.
- Paper Presentation in one day National Level online E-conference - Topic - Covid-19, Boon or

Bane for Indian Education

- National Level Webinar Attended - 4
- International Level Webinar - 3
- Participated as an Advisor in 2 days workshop organised by SSDPC, Girls PG College, Roorkee, Uttarakhand.
- Organized (as a convener) one day International Webinar on the theme-Impact of Covid-19 on Environment on 7th June 2020
- Felicitated on Teacher's day 5.9.2019 by Bharat Vikas Parishad, Roorkee under the program Guru Vandan.

Dr. Kiran Bala (Senior Assistant Professor, Department of Sociology)

- Completed Short Term Training Program organized by FDC, HNBGU, Srinagar (Garhwal) from 21-22 August, 2019.
- Published Book पर्यावरण एवं महिलाएं Pacific Book International, New Delhi, with ISBN : 978-93-88536-35-6.
- Presented 3 Paper in National Conference.
- Participated in 4 international and 4 National Webinar.

Dr. Archana Chauhan (Assistant Professor, Drawing and Painting Department)

- Online Art Exhibition-2
- Attended National Webinar-4
- सम्मान पत्र–श्रेष्ठ हिन्दी ज्ञाता सम्मान हिन्दी दिवस–राष्ट्रीय आंचलिक साहित्य संस्थान साल्हावा जिला, झज्जर हरियाणा।

Mrs. Anjali Prasad (Assistant Professor, Department of Sociology)

- Paper Published : ग्रामीण महिला सशक्तिकण के आर्थिक एवं सामाजिक पहल in Aprajita Shodh Patrika, Vol. 5, 2019 ISSN No. 2454-4310 Pg. No. 33-36.
- National Webinar (Atteded) - 5
- International webinar Attended - 2
- Organized college level Webinar (E-learning Cell) Topic "Environment Interaction 5th june 2020
- Co-convenor in Webinar-Impact of Covid-19 on Environment) 7th June 2020
- Swayam Course Completion "Academic Writing" 15 Week (CEC) & credits from, jan 13 2020 to April 25 Level-(Under graduate/Postgraduate level)

Dr. Shalini Verma (Lecturer Political Sciences)

- Published a chapter Entitled ''वैदिक शिक्षा बनाम आधुनिक शिक्षा'' in Book - आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में गुरूकुल शिक्षा प्रणाली का महत्व, ISBN : 978-81-94384-5-5.
- Presented Paper in 2 day, National Seminar - 7-8 Dec. 2019
- Presented Paper in one day National Seminar - 3.2.2020
- Felicitated on Teacher's day 5.9.2019 by Bharat Vikas Parishad Roorkee.

Dr. Anju Sharma (Lecturer Hindi Department)

- Pubished research papers वैदिक साहित्य में चित्रित नारी–अधिकार'' in Aprajita research Journal ISSN:2454-4310 V-5, 2019
- पंजाब की महिला साहित्यकार अमृता प्रीतम की हिन्दी को देन'' in Bohal Shodh Manjusha ISSN: 2395-7115 April-June 2020

- Review Article ''धनंजय बैरागी कत नमक का पुतला सागर में : एक अवलोकन'' in an International Journal 'Setu' ISSN 2475-1359 January 2020
- Faculty Devlopment Program On "Recent Trends in research And Applied Statistics" Organized By Sunrise University, Alwar From 13 June To 19 June 2020.
- Faculty Devlopment Program On "Excellence in college Education After Covid-19 Pandemic" Organized By I.Q.A.C. Govt. E. Raghavendra Rao P.G. Science College Bilaspur, Chhattisgarh From 30 june-4th july 2020.
- One Week Faculty Devlopment Programme on Contents And ITC Tools For Innovative And Effective Teaching And Learning Process Organised By Roorkee College Of Management And Computer Application, Roorkee From 8 August To 14 August 2020.
- Attended International Webinar 27
- National - 51
- Online Workshop-03

Dr. Asma Siddiquie- Lecture in Botany Department

- Attended national seminar by NAAC in R.B.D Bijnour U.P.
- Felicitated on Teacher's Day 5-9-19 by Bharat Vikas Parishad under their programme Guruvandan.
- Awarded Innovation in teaching by Genesin of Educational impressions on 7-3-20.
- Awarded honoray post of Co-ordinatior in Dr. AP.J. Kalam research Club- Medicinal Plant wing.
- Attended National Webinar - 1
- Attended National Symposium - 1

Dr. Uma Rani (Lecturer in Botony)

- Presented a paper on Ethnobotany and Floristie Diversity theme in an International conference (Gujrat)
- Online paper presentation in International Webinar- on 'Ecosystem conservation and strategies for sustainable future.'
- Participated as online expert in International Webinar on "Waste management and sustainable Delopvment Saksham Society Jaipur (Rajsthan) and stamford university, Bangladesh on 29-3-20.
- Awarded APSAI Magan Bhai H.Patel "Women Scientist Award in International conference on "Drug discovery and development in Agrobiotechnology" at Ahmedabad Gujrat.
- Dr. C.V. Raman young Scientist award in Ist National Conference on "Towards New Horizons in Multi disciplinary research and Development on 7-3-20.
- Awarded Ist Prize in oral session on the theme "Ethnobotany and florstic diversity" in APSAI Scientist meet and international conference in Agrobiotechnolog on 25-11-19.

Dr. Sangeeta Singh (Lecturer in Zoology Department)

- Delivered Lecture entitled ' A detail study on call maker Trioza hissuta crawford, a pest of Terminalia tomentosa dated 13th Feb 2020 in XVII AZRA international Conference at UAS, Raichur, Karnataka.
- Presented paper on detailed study on Biological control of trioza hirsuta, a pest of terminalia tomentosa in First National Conference of Genesin of education impressions Roorkee, Destrict Haridwar Uttarakhand.
- Awarded AZRA fellowship Award by Applied Zoologists Research Association in XVII AZRA Interntional conference jointly organised by university of Agricultural Science, raichus, Kernataka, AZRA Bhubaneshwer, Odisha and Eutomological Society of India, IARI New Delhi.

- Awarded outstanding woman educationist Award in first National Conference by Genesin of educational impressions, Roorkee Distt Haridwar, Uttrakhand on march 07, 2020
- Served as Jury member in XVII AZRA International Conference at UAS Raichur held from 12th to 14th Feb. 2020.
- Appointed at a Co-ordinator of Dr. Abdul Kalam Research club and medical plant wing of the organisation genesin of educational impressions for Roorkee Region, Uttarakhand.
- Organised state level webinor on the topic भारतीय न्याय व्यवस्था में महिलाओं केअधिकार एवं कानून on 30th Aug 2020.
- Participated in National Webinar - 1
- Participated in International Conference - 1

Miss Himanshi (Lecturer in Microbiology Qualified ASR NET in Dec 2019.

- **Miss Shazia Tabassum (Lecturer in Zoology)** Qualified UTET (I & II) July 2019 and CTET (Primary and upper in December 2019.

Miss Deepa Panwar

- Published Paper on characteristic assessment of LDPE regarding Bacterial strains endoresed by biofilm colonization on polyethylene surface- An initial approach for the biodegradation process" Innovative approaches in Microbial technology IAMI-2019 Gurukul Kangri Vishva vidhalya Haridwar, UK. India.
- Published paper on Develpment of Bactiral Biofilm on Low density polyethlene film surface: An initial step for degradation 24th international conference of physical science (CONIPAS), 2019.

Miss Parveen

- Publlished Paper ''भारत की राजनीति में महिलाओं की भूमिका'' in अजराजिता शोध पत्रिका ISSN : 2454 - 4310 V - 2019 पेज पं. 46.
- Presented Paper in 2 days National Seminar
- Attended Seven days National Workshop, 16-22 Sept. 2019

Mrs. Neha Sharma

- Publlished Paper ''गाँधी जी के विचारों की वर्तमान में प्रसंगिकता'' in अजराजिता शोध पत्रिका ISSN : 2454 - 4310 V - 2018 पेज पं. 55.57.
- Participated in one week online Faculty Developemnt Program on "Impact of Covid-19 on Indian Economy and Industry" at national level, during 14 to 20 May 2020, organised by Sangolli Rayanna first grade constituent College of Rani Channamma University, Belagavi.
- Completed online 15 hours course of MOOC on Development of 21st Century skills through education (02) (Information Literacy, Media Literacy & ICT Literacy skills, during 18 may to 14 june, 2020.
- Participated in five days FDP on "Contemporary Research in Economics", organised by Amity University, during 17 to 22 June, 2020.
- Participated in one week STC International workshop on "Basics of Data Analysis using SPSS" organised by FS Conference International congress on Social Science, ANKARA, TURKEY and Blue - Forskning International Research Society, India, during 1 to 7th June.
- Attended International Webinar - 2
- Attended National Webinar - 10
- Atttended online workshops - 3

महाविद्यालय विकास कार्य

महाविद्यालय में गुणवत्तापूर्ण शिक्षण, छात्रा सुरक्षा एवं आवश्यक आधारभूत सुविधाओं को दृष्टिगत रखते हुए प्रबंध समिति द्वारा इस वर्ष भी अनेक विकास कार्य पूर्ण कराये गये।

1. महाविद्यालय के प्रथम एवं द्वितीय तल पर दो नवीन व्याख्यान कक्षाओं का निर्माण आवश्यक फर्नीचर के साथ कराया गया।
2. नवीन प्राचार्या कक्ष एवं स्टाफ रूप का निर्माण क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय तल पर कराया गया।
3. महाविद्यालय के कार्यालय का नवीनीकरण किया गया।
4. महाविद्यालय के कक्ष सं0 2 तथा फिजिक्स लेब का नवीनीकरण किया गया।
5. ड्राइंग लैब में नवीन पर्दो की व्यवस्था की गई।
6. विज्ञान प्रयोगशालाओं में आवश्यक नवीन उपकरणों एवं सामग्री का क्रय किया गया।
7. कक्षों में आवश्यक फर्नीचर जैसे कुर्सियाँ, मेज, ब्लेक बोर्ड तथा लेक्चर स्टेण्ड इत्यादि उपलब्ध कराये गये।
8. महाविद्यालय प्रबंध समिति द्वारा विशेष सुरक्षा प्रबंध कोविड-19 सुरक्षा मानकों के अनुरूप आवश्यक उपकरण जैसे-थर्मल स्कैनर, टच फ्री सेनिटाइजर स्प्रे मशीन, सैनिटाइजर स्प्रे मशीन तथा स्नातक व स्नाकोत्तर मुख्य परीक्षायें सुरक्षित वातावरण में सम्पन्न कराने हेतु मास्क, हैण्ड ग्लब्स, फेस शील्ड तथा कैप आदि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराये गये।
9. महाविद्यालय की आई.क्यू.ए.सी. तथा कार्यालय को लेपटॉप उपलब्ध कराये गये।
10. लाइब्रेरी कम्प्यूटर कक्ष में छात्राओं हेतु दो नवीन कम्प्यूटरों की व्यवस्था की गई।

संयोजन-डा० अलका आर्य

डा० अर्चना मिश्रा (प्राचार्या)

मेधावी छात्राएं सत्र 2018-19

बी०ए०, तृतीय वर्ष में सर्वाधिक अंक

कु० दीपा (8.62 CGPA)

बी०ए०, तृतीय वर्ष में प्रथम श्रेणी

कु० छवि धीमान

कु० अंजू

कु० सोनम

कु० राशि

कु० कहकशा

कु० काजल

कु० साक्षी

कु० अश्बा

कु० नाजिया

कु० गुलफ्शा

कु० गरिमा त्यागी

कु० रिया शर्मा

कु० साक्षी गौड़

कु० राखी

कु० साबिया

कु० सोनम

कु० इरम जहाँ

कु० गोल्फी शान

कु० कविता

कु० शमा

कु० इकरा

कु० अल्कमा

कु० अक्लीमा

कु० फरहा खानम

बी०ए०, तृतीय वर्ष में प्रथम श्रेणी

कु० खुशनसीब

कु० जूली

कु० शमाना

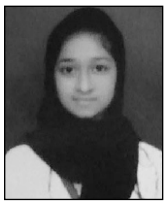
कु० सना

कु० भारती

कु० रूबी

कु० अर्पणा सैनी

कु० रूमा पाल

कु० सानिया

कु० आफ्रीन

कु० शाकरा प्रवीन

कु० अरशी

कु० नेहा पाल

कु० शिवानी देवी

कु० रेनू

कु० सना

कु० ललिता देवी

कु० शबाना

कु० नाजिया

कु० नेहा चौधरी

कु० उजमा

कु० सबिया सुल्तान

कु० कौसर जहाँ

कु० रेखा

कु० ज्योति सैनी

कु० गुलरेज

कु० काजल

कु० अजामाईन

कु० शाहजहाँ

कु० समरीन

कु० रितु राज

कु० रेनूका

कु० पिंकी

कु० अरशी खान

कु० रूही जैदी

कु० कहकशा

बी०ए०, तृतीय वर्ष में प्रथम श्रेणी

कु० सदफ अंजुम

कु० सफिया

कु० वन्दना

कु० हुमेरा

कु० निधि रानी

कु० चेतना देवी

कु० अल्पना

कु० अंजली

कु० अनुप्रिया

कु० शहजादी

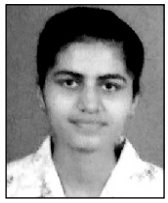
कु० मानसी सिन्धू

कु० अरशी

कु० शिवानी

कु० अन्नू

कु० दिलारा प्रवीन

कु० जीनत कुलसुम

कु० दीक्षा सैनी

कु० सादिका

कु० मीना

कु० नगमा

कु० नगमा

कु० तैय्यबा

कु० माला कुमारी

कु० अवनी सैनी

कु० मीनाली शर्मा

कु० सोनम सैनी

कु० यशस्वी

कु० ईरम

कु० रिचा गोयल

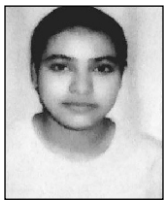
कु० शिवानी

कु० आँचल देवी

कु० हेमा

कु० शबीना

कु० शिवानी देवी

कु० शिवानी सैनी

कु० शालू सैनी

बी०ए०, तृतीय वर्ष में प्रथम श्रेणी

कु० इशरत

कु० संगीता सैनी

कु० आसमा

कु० काजल देवी

कु० मोनिका रानी

कु० आँचल चौधरी

कु० प्रियंका

कु० काजल

कु० आयशा

कु० शीतल

कु० सीमा

कु० बेबी

कु० शालू

कु० अंजली

कु० कोमल

कु० शिवानी

कु० प्रियंका रानी

कु० अनीता

कु० काजल

कु० शिवानी देवी

कु० हेमा नारंग

कु० फरीजा

कु० रजिया

कु० शायरा प्रवीन

मेधावी छात्राएं एम. ए. चित्रकला द्वितीय वर्ष (सत्र 2018-19)

विश्वविद्यालय वरीयता सूची में प्रथम स्थान (स्वर्ण पदक)

कु० वैशाली (8.9 CGPA)

एम. ए. चित्रकला में प्रथम श्रेणी

कु० शिवानी

कु० अन्नु

कु० शिल्पा सैनी

कु० पूजा रानी

कु० नेहा

कु० शिल्पी अग्रवाल

कु० अन्जू

कु० ज्योती

कु० चाँदनी

कु० नीलम

कु० टीना

कु० रीना

कु० अंतिमलता कम्बोज

कु० दीपा

कु० मेघा

कु० दीपाली रानी

कु० किरन

कु० आँचल

कु० निधि गुप्ता

कु० प्रियंका गौतम

कु० काजल मौर्या

कु० मीना भारती

कु० सोनम

कु० बरखा

कु० शिवानी

कु० इसराना

मेधावी छात्राएं एम. ए. राजनीति शास्त्र द्वितीय वर्ष (सत्र 2018-19) में सर्वाधिक अंक

कु० मनीसा राठौर (7.83 CGPA)

एम. ए. राजनीति विज्ञान में प्रथम श्रेणी

कु० पारुल सैनी

कु० बोहती

कु० नाजीस

कु० नीरज

कु० रेशमा खातून

कु० कल्पना

कु० तानीया

कु० नाजमीन मलीक

कु० रीतिका

कु० सालीया

कु० नजमा

कु० तरुन

कु० बुशरा

कु० रेहाना

कु० पारुल

कु० पूजा देवी

कु० अनीता देवी

मेधावी छात्राएं (सत्र 2018-19)

बी०एससी० तृतीय वर्ष में सर्वाधिक अंक

निशि गोस्वामी (गणित वर्ग)

प्रज्ञा शर्मा (जीव विज्ञान वर्ग)

बी०एससी० तृतीय वर्ष में प्रथम श्रेणी

कु० स्वपनिल यादव

कु० प्रज्ञा

कु० सिमरन राठौर

कु० अदीबा जैनब

कु० अदिति सिंह

कु० शिवानी

कु० रूबि

कु० अमानी

कु० अलफिमा

कु० शबनूर मलिक

कु० मनीषा

कु० निशा

कु० पूजा चौधरी

कु० शिल्पि

कु० अदिति गौतम

कु० प्रतिज्ञा सोनी

कु० अकांक्षा सैनी

कु० अरशी

कु० कहकशा मलिक

कु० आकांक्षा यादव

कु० वर्षा

कु० निशा कुमारी

कु० श्रेया सहगल

कु० छवि

कु० भावना मिश्रा

कु० तनु त्यागी

कु० हिमानी

कु० कमरुनिशा

कु० सुकन्या शर्मा | कु० कौशिकी कपूर | कु० तनु गिरि | कु० शिवानी शर्मा | कु० निशा | कु० आरती | कु० मनीषा सारस्वत

कु० वंशिका शर्मा | कु० साधना गिरि | कु० शिवानी पुंडिर | कु० आयुषी गिरि | कु० आयुषी सैनी | कु० आयुषी | कु० काजल सैनी

कु० आकांक्षा सैनी | कु० मनु सैनी | कु० सपना | कु० आयुषी | कु० प्रतिभा राज | कु० कावेर जहाँ | कु० नेहा नारंग

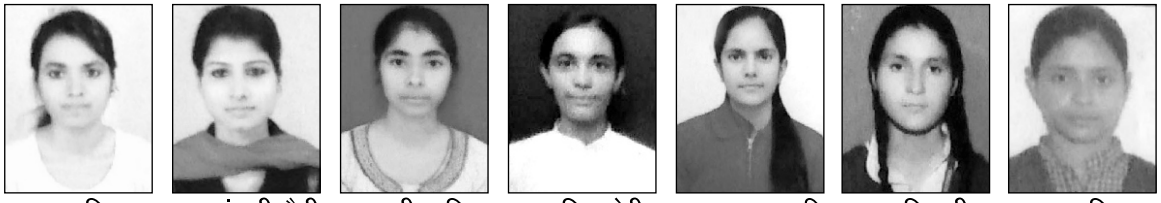

कु० राधिका | कु० अंजली सैनी | कु० हनी भाटिया | कु० प्रिया देवी | कु० पूजा प्रजापति | कु० शिवानी | कु० प्रतिभा

कु० शिवानी | कु० अंजली शर्मा | कु० सानिया | कु० सृष्टि सिंह | कु० वर्षा | कु० छवि रोहेला | कु० ऊर्वशी सिंह

कु० कौशिन परवीन | कु० वंशिका त्यागी | कु० नाज़रीन | कु० आकांक्षा पाल | कु० तमन्ना | कु० मिनाक्षी सैनी | कु० अनु सैनी

कु० अंशुल पंवार | कु० दीक्षिका पंवार | कु० राखी | कु० वर्णिका | कु० चारु देशवाल | कु० अमरीन खातून | कु० टीना सैनी

कला संकाय शैक्षिक गतिविधियाँ

वि.वि. स्वर्ण पदक विजेता कु० वैशाली

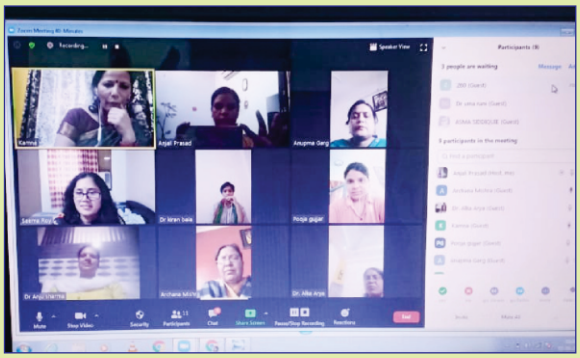

अन्तर्राष्ट्रीय वेबीनार

अन्तर्विद्यालयी संस्कृत संभाषण शिविर

हिन्दी दिवस समारोह

स्वयम् (मूक्स) वर्कशाप

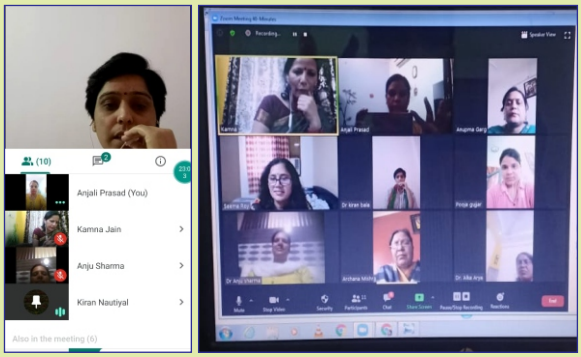

एन्वायरमेंट इन्ट्रैक्शन वेबिनार

संस्कृत सम्भाषण शिविर प्रतिभागी

व्याख्यान : Key to Success

विज्ञान संकाय गतिविधियाँ

Wall Magazine on National Science Day

Mentorship Program - Yes I Can

Two Days Workshop

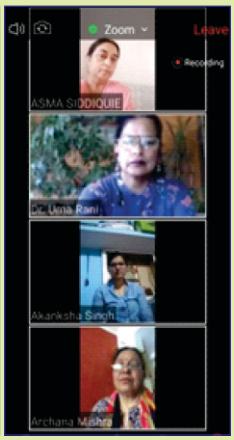

Online Seminar Presentation

Meet Microbes

Workshop in COER

Essay Writing Competition on Womens Day

Ayurvatika

National Conference on Genesis of Edu. Impression

Workshop on 'Laboratory Diagnostic Techniques' organised by Microbiology Department

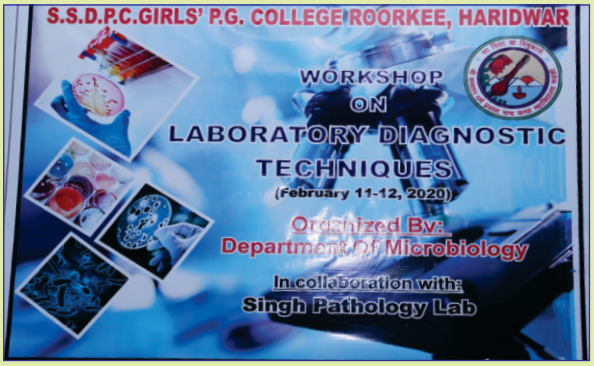

क्रीड़ा गतिविधियाँ

वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या महाविद्यालय
रुड़की
वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता

1

सांस्कृतिक कार्यक्रम

शैक्षणिक भ्रमण

डिजायन एवं इनोवेटिव सेन्टर आई०आई०टी० रुड़की

कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग रुड़की

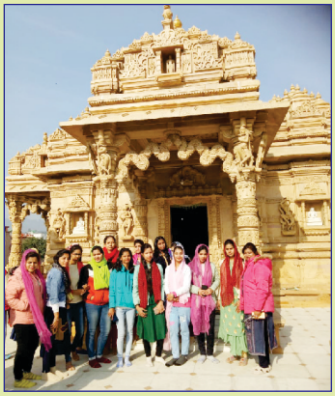

जैन मंदिर हरिद्वार

द बीटल आश्रम ऋषिकेश

वॉटर कानक्लेव एन०आई०एच० रुड़की

नीरगढ़ वाटर फॉल

द बीटल आश्रम ऋषिकेश

रामझूला घाट

चित्रकला विभाग गतिविधियाँ

गणपति पेन्टिंग प्रतियोगिता

गणपति पेन्टिंग प्रदर्शनी

कलश सज्जा प्रतियोगिता

शू पेन्टिंग प्रतियोगिता

ऑनलाइन कला प्रदर्शनी

BSI रंगोली प्रति. विजेता

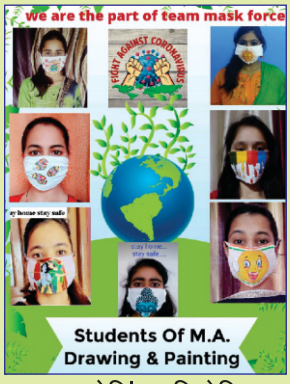

मास्क मेकिंग प्रतियोगिता

पोस्टर प्रतियोगिता

रंगोली प्रतियोगिता

चौकी सज्जा

कैरियर गाईडेन्स सेल गतिविधियाँ

'संस्कृत भाषा में रोजगार के अवसर' विषय पर व्याख्यान

'व्यक्तित्व विकास' सेमिनार

बेसिक कम्प्यूटर ट्रेनिंग

COER में क्लाउड कम्प्यूटिंग वर्कशॉप

बेसिक कम्प्यूटर ट्रेनिंग

कैरियर इन लैबोरेट्री एण्ड डायग्नोस्टिक टेक्निक : ओरिएन्टेशन प्रोग्राम

रिसर्च मैथोडोलॉजी वर्कशॉप

अन्य गतिविधियाँ

अपराजिता पत्रिका विमोचन

नैक RAF वर्कशाप

स्वयंसिद्धा चैक वितरण

पौधारोपण

छात्रा संघ चुनाव में पर्यवेक्षक श्री वी. एस. नेगी एवं महावि. स्टॉफ

छात्रा संघ शपथ ग्रहण समारोह

'प्लास्टिक मुक्त हरिद्वार' शपथ

पुलिस लाइन हरिद्वार में ताई क्वांडो ट्रेनिंग

गाँधी स्मृति दीर्घा

गाँधी स्मरणोत्सव अन्य कार्यक्रम

'गाँधी एवं कलकत्ता के दंगे' नाटिका प्रस्तुति

'सर्वधर्म समभाव' पर आधारित नाटिका

'आजा रे बापू' गीत पर नृत्य प्रस्तुति

स्वच्छता पखवाड़ा में छात्राओं द्वारा श्रमदान

गाँधी स्मरणोत्सव स्मारिका विमोचन

'वैष्णव जन' गीत पर नृत्य प्रस्तुति

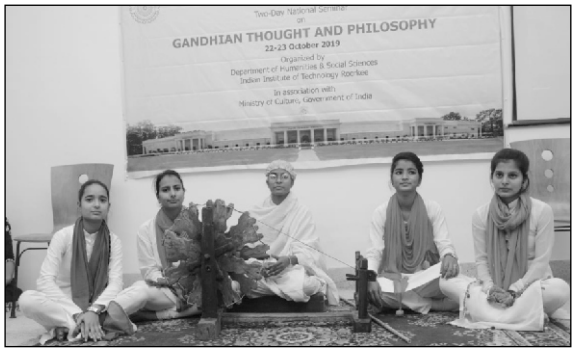

आई०आई०टी० रुड़की में छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति

वर्तमान जल संकटः- प्रकृति और परंपरा में ही है समाधान

डा० अर्चना मिश्रा
प्राचार्या

आज सम्पूर्ण विश्व गंभीर जल संकट से जूझ रहा है। मनुष्य के अस्तित्व के लिये आवश्यक अनेक उपादानों की तरह जल की दाता भी प्रकृति ही है। हजारों वर्षों से प्रकृति ने अपने तौर तरीके नहीं बदले हैं लेकिन विकास के नये शिखरों को छूने की अपनी कोशिशों के दौरान मानवीय क्रियाओं और तौर तरीकों में आमूलचूल आये परिवर्तन से जल सहित सभी प्राकृतिक संसाधनों का न सिर्फ अंधाधुध दोहन हुआ है बल्कि कुछ हद तक उनका दुरुपयोग भी हुआ है। प्रकृति ने मानव सभ्यता के विकास के आदिकाल से ही उसके उपभोग के लिये जल की सहज उपलब्धता बनायें रखी। जब तक मनुष्य बुद्धिमत्ता पूर्वक प्रकृति के नियमों के अनुकूल आचरण कर प्रकृत्ति प्रदत्त जल संसाधनों का प्रयोग करता रहा तब तक समस्या उत्पन्न नहीं हुई। पर पिछले कुछ दशकों से मानव ने इस अमूल्य साधन के अनियंत्रित दोहन के साथ ही पूर्वजों द्वारा प्राकृतिक नीति नियमों के आधार पर विकसित अनुभवजन्य ज्ञान की अनदेखी की है। इस बीच जनसंख्या वृद्धि की दर भी तीव्र रही, अतः इन सभी कारको के सम्मिलित प्रभाव से जल की आवश्यकता और उपलब्धता के बीच अंतर बढ़ा है और आज इसने एक विश्व व्यापी संकट का रूप ले लिया है।

पानी का संकट दिनों–दिन गहराता जा रहा है, भूगर्भजल भंडार तेजी से घट रहा है, जल के परंपरागत स्रोत, झीलें, तालाब, बावड़ी, कुंए आदि भी समुचित संरक्षण के अभाव में लुप्त प्रायः हो चुके है। प्राकृतिक वनसंपदा के स्थान पर मानवीय आकांक्षाओं ने कंकरीट के जंगल खड़े कर दिये है जहाँ वर्षा जल को जमीन में रिसने की जगह ही नही मिलती और उसका अधिकांश यूँ ही नदी नालों में बहकर व्यर्थ हो जाता है। इतना ही नहीं, अपनी स्वार्थीवृत्ति और अदूरदर्शिता से मानव ने उपलब्ध जल स्रोतों को दूषित करने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी है, जिससे अनेक स्थलों पर जल पीने तो क्या, खेती, मछलीपालन जैसी क्रियाओं के योग्य भी नहीं रह गया है। प्राणिशास्त्र विशेषज्ञों के अनुसार जल की अल्प उपलब्धता एवं प्रदूषण वन्य जीवों एवं जलजीवों अनेक प्रजातियों के लिये भी हानिकारक है व इससे जैवविविधता के लिये खतरा उत्पन्न हो रहा है।

अभूतपूर्व प्राकृतिक संपदा संपन्न हमारे देश के लिए कभी 'पग पग नीर' की उक्ति सार्थक थी पर आज समाज अपनी प्यास बुझाने के लिये सरकारी व्यवस्था के अंजुरी भर जल का पाइपों में आने का इंतजार करता है और कई बार तो लंबी प्रतीक्षा के बाद जल आता है तो वह पीने योग्य भी नही होता। प्रसिद्ध उक्ति है 'जल है तो कल है' पर आज विचारणीय प्रश्न यह है कि जब जल ही नहीं होगा तो कल कैसा होगा? आज यह प्रश्न दुनिया भर के पर्यावरणविदों के विमर्श का विषय है। प्रकृति ने तो अनेक रूपों में चेतावनी दे दी है। ग्लोबल वार्मिंग से पानी के पारंपरिक स्रोत ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे है। इसका प्रभाव हिमालय से निकलने वाली गंगा सहित अन्य नदियों और इन पर आश्रित चालीस करोड़ से भी ज्यादा जनसंख्या पर पड़ेगा। ग्लोबलवार्मिंग से वर्षा की अनिश्चितता भी बढ़ेगी जो सीधे तौर पर कृषि को प्रभावित कर खाद्य संकट को बढ़ावा देगी। अब समय आ गया है कि इन चुनौतियों की गंभीरता को समझते हुए प्रभावी कदम उठाये जाये।

प्रकृति ने जीवनदायी जल का अनमोल खजाना हमें सौपा था पर अपनी अदूरदर्शिता और लापरवाही से हमने इस बेशकीमती संपदा को गँवा दिया। अभी भी देर नहीं हुई है समय आ गया है कि जीवन की बुनियादी जरुरत 'जल' को हम अपनी प्राथमिकताओं की सूची में सर्वोच्च स्थान पर रखें। प्राचीन भारत में जल संचयन और संरक्षण की ऐसी तकनीकें और व्यवस्थायें मौजूद थी जो आज के जल संकट के समाधान की राह दिखा सकती हैं। अपने नवअर्जित ज्ञान के सामने अपने पूर्वजों के जिस परंपरागत ज्ञान और समझ को हमने हाशिये पर ढकेल दिया, वह कई पीढ़ियों के अनुभव अर्जित ज्ञान का निचोड़ था। जल के सम्यक् उपयोग व संरक्षण हेतु विकसित आधुनिक

तकनीक के साथ ही पानी सहेजने के परंपरागत उपायों जैसे-वर्षा जल का संग्रहण हेतु स्थानीय स्तर पर झीलों, तालाबों, कुओं, नदी नालों के छोटे बांधों आदि का प्रयोग काफी प्रभावी सिद्ध हो सकते है। परंपरागत विधियों के प्रचार-प्रसार के साथ पानी के दुरुपयोग और प्रदूषण को रोकने के लिये जनजागरूकता के प्रयास भी आवश्यक है।

जल संकट के जिस दौर से मानव सभ्यता आज गुजर रही है, उसके प्रभावी समाधान के लिये हमें जल-जंगल और जमीन के अर्न्तसंबंध को समझना होगा। प्रकृति उदार है, दाता है लेकिन उसके उपहार पाने पात्रता विकसित करने के लिये हमें प्राकृतिक नियमों का पालन भी करना होगा। परंपरा और प्रकृति को समझ और अपना कर ही हमें इस विकराल समस्या का समाधान प्राप्त होगा।

●●●

भारत की परंपरागत जल संरक्षण पद्धतियाँ - 1

भारत की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था पूर्णत: मानसून पर आधारित है। देश के अनेक हिस्से जो वर्ष की दृष्टि से वंचित है, उनके कृषि एवं पेयजल की पर्याप्त उपलब्धता की समस्या सदैव बनी रहती है। अत: ऐसे स्थानों के लिये हमारे पूर्वजो ने यहाँ की जलवायु एवं वर्षा चक्र को ध्यान में रखकर जल संरक्षित करने के लिये अनेक रीतियाँ विकसित की। राजस्थान की मरूस्थलीय भूमि के लिये वर्षा जल संरक्षण हेतु परंपरागत ढाँचे खड़ीन बनाये गये। इसके अतिरिक्त अन्य कई जल सरंक्षण रचनायें जैसे टाँका, बेरी, नाडी आदि भी हमारे पूर्वजों ने विकसित की। निरंतर होती वैज्ञानिक प्रगति के बावजूद ये परंपरागत जल संरक्षण रीतियाँ कृषि और पेयजल समस्या का समाधान प्रदान करने के दृष्टिकोण से उपयोगी है। इसी प्रकार गुजरात में विरदा, उत्तराखण्ड के संकरित पर्वतीय क्षेत्रों में नौला व दक्षिणी भारत के राज्यों में जलाशय निर्माण आदि प्राचीन जल संरक्षण पद्धतियां है जो वर्तमान जलसंकट से समाधान की दिशा में उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

2. मरुस्थल को जीवन देती जलसंरक्षण पद्धति- खड़ीन (राजस्थान) : *खडीन का निर्माण सामान्यत: रबी या खरीफ की फसल करने के बाद जून या दिसम्बर में किया जाता है। खड़ीन एक क्षेत्र विशेष पर बनने वाली तकनीक है। यह एक अर्द्धचन्द्राकार आकृति का 4 से 5 फीट ऊँचाई वाला बाँध होता है। जो ढ़ाल की विपरीत दिशा में बनाया जाता है। इसका एक छोर वर्षाजल प्राप्त करने के लिये खुला रहता है तथा फालतू जल की निकासी के लिये उचित स्थान पर नेहरा (वेस्ट वीयर) तथा संपूर्ण जल को निकालने के लिये खड़ीन की तलहटी में मोखा (स्लम गेट) बनाया जाता है जहाँ से पाइपलाइन द्वारा आवश्यकतानुसार जल निकासी का प्रबंध होता है। खडीन बाँध की लम्बाई 150 से 200 मीटर तक हो सकती है। बांध का आकार क्षेत्र की औसत वर्षा, आगोर का ढाल तथा भूमि की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। राजस्थान में खड़ीन निर्माता समूहों के पलायन से इस पारंपरिक कौशल के उपयोग में गिरावट आई है पर कृषि उत्पादकता बढ़ाने में इसकी उपयोगिता को देखते हुए ग्रामीण विकास विज्ञान समिति द्वारा पुन: खड़ीनों के निर्माण को प्रोत्साहन दिया जा रहा है।*

मरुस्थल की संजीवनी - नाड़ी (राजस्थान) *- 'नाड़ी' एक तालाब नुमा संरचना है। बड़े आकार की संरचना 'नाड़ा' कहलाती है। यह शुष्क क्षेत्रों में सामुदायिक प्रयोग हेतु जल संग्रहण की उपयोगी तकनीक है। नाड़ी ऐसी जगह विकसित की जाती है जहाँ भूमिक्षेत्र ढ़ालदार व कुछ सख्त हो। भूमि की गुणवत्ता व तल की प्रकृति की जाँच के बाद ही 'नाड़ी' निर्माण का कार्य होता है। बलुई मिट्टी में नाड़ी निर्माण नहीं हो सकता क्योंकि यह पानी को सोख लेती है। रेगिस्तानी क्षेत्रों के लिये नाड़ी जल का महत्वपूर्ण स्रोत होती है। मानव व पशुधन के पेयजल की पूर्ति करने के साथ ही इसका जल आस-पास के कुँओं-बाबड़ियों, टाँकों के भी पुनर्भरण के काम आता है। इसके किनारे नम भूमि पर बबूल, बेरु, कैर, खेजड़ी, जाल आदि पेड़ वर्षा के न होने पर भी हरे-भरे रहते है और कैर, खेजड़ी, कुमटिया आदि के फल सब्जियों के रूप में प्रयोग होते हैं।*

- संकलित

चीन की जल कूटनीति व दक्षिण चीन सागर

डा० कामना जैन
सीनियर असि. प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के विद्वानों के मध्य चर्चा है कि अगला विश्व युद्ध पानी के लिए होगा। वर्तमान में जिस प्रकार से शुद्ध पेय जल के स्रोत कम होते जा रहे हैं, कई नगरों व क्षेत्रों में पानी के प्राकृतिक स्रोत सूख चुके हैं एवं अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में जल-कूटनीति का विस्तार हो रहा हैं, ताकतवर देश प्राकृतिक जल क्षेत्रों में अपनी आर्थिक-सामरिक शक्ति व प्रभाव बढ़ाने हेतु प्रतिद्वंदिता कर रहे हैं, उससे उपरोक्त कथन साकार होता प्रतीत होता है। यहाँ पर मुख्य चर्चा दक्षिण चीन सागर में चीन की बढ़ती लालसा व उसकी जलीय कूटनीति को समझने का एक संक्षिप्त प्रयास है।

अपनी स्वतंत्रता के पश्चात् से ही चीन ने सदैव साम्राज्यवादी एवं विस्तारवादी नीतियों का अनुसरण किया है। और पिछले एक दशक से वह जल-कूटनीति को अपनाकर अपनी ताकत बढ़ाने में लगा है। वह दो प्रकार से अपनी जल कूटनीति का विस्तार कर रहा है-

1. तिब्बत, जिसे दुनिया का तीसरा ध्रुव या वाटर टैंक कहा जाता है, से निकलने वाली सिंधु, सतलुज, ब्रह्मपुत्र, मेकांग आदि बड़ी नदियों पर बाँधों की ऋंखला बनाकर पड़ोसी देशों को परेशान कर रहा है।

2. दक्षिण चीन सागर तथा प्रशांत महासागर में जलीय सीमाओं का अतिक्रमण कर रहा है।

इस जलराशि का उपयोग वह सिंचाई, विद्युत, पेयजल, औद्योगिक व्यावसायिक तथा घरेलू उपयोग के लिए बढ़ती पानी की जरूरतों को पूरा करने के साथ साथ पड़ोसी देशों पर सामाजिक-आर्थिक व राजनैतिक दबाब डालकर उन्हें अपनी शर्तो पर काम करने के लिए मजबूर करना चाहता है। लगभग 52 लाख वर्ग कि0मी0 जल क्षेत्र में फैला दक्षिणी चीन सागर प्रशांत महासागर का हिस्सा एवं भौगोलिक जलमार्ग है, जहाँ से दुनिया के समुद्री व्यापार का 40 प्रतिशत व्यापार किया जाता है। इस क्षेत्र से निकलने वाले जलयानों से इसके तटीय क्षेत्रों की आर्थिक गतिविधियाँ तो बढ़ती ही हैं साथ ही उन्हें टैक्स द्वारा भी काफी लाभ प्राप्त होता है। इस क्षेत्र के व्यावसायिक महत्व को देखते हुए, इसे अपने नियंत्रण में लेकर चीन अपनी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सामजिक स्थिति मजबूत करना चाहता है। और यही वजह है कि चीन के आसियान देशों के साथ समुद्री सीमाओं के निर्धारण को लेकर विवाद निरंतर बढ़ रहे हैं।

इस क्षेत्र में उपलब्ध प्राकृतिक जलीय संसाधन भी विवाद का कारण है। US Energy Information Administration के अनुसार इस क्षेत्र में तकरीबन 12 अरब बैरल से अधिक तेल, लगभग 200 ट्रिलियन क्यूबिक फीट गैस, समुद्री रत्न, मूँगे के विशाल भंडार हैं। मछली व्यापार में शामिल देशों के लिए भी यह क्षेत्र अत्यंत लाभप्रद है। वृहत् संख्या में कछुए तथा दवाइयों के लिए उपयोगी शैवाल व वनस्पतियाँ भी यहाँ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं।

चीन को निम्न लाभ होंगे-

1. अपनी सैन्य व सामाजिक ताकत बढाकर विश्व महाशक्ति बनने की दिशा में मजबूत बढ़त
2. क्षेत्र में व्याप्त अमूल्य प्राकृतिक संपदा पर एकाधिकार कर उसके दोहन द्वारा आर्थिक लाभ
3. क्षेत्र में होने वाले समुद्री व्यापार को अपने आधिपत्य में लेना
4. पड़ोसी देशों पर कूटनीतिक दबाव बनाए रखना
5. इस क्षेत्र में पश्चिमी देशों अमरीका, भारत, जापान, ऑस्ट्रेलिया, तथा दक्षिण कोरिया के बढ़ते प्रभाव को कम

करना। '9-line' (U आकार की नाइन डैश लाइन) के जरिए चीन ने दक्षिण चीन सागर की घेरा बंदी करायी है। यह लाइन चीन में 1947 में जापान के आत्मसमर्पण के बाद खिंची थी। हालांकि फिलीपीन्स के शिकायत दर्ज करने पर अपना निर्णय देते हुए अन्तर्राष्ट्रीय न्यायाधिकरण, हेग ने चीन द्वारा दक्षिण चीन सागर में 9 बिंदुओं पर U आकार की रेखा (9-lines) के दावे को काल्पनिक व गलत बताया है क्योंकि इस एतिहासिक दावे का कोई कानूनी आधार नहीं है। दक्षिण चीन सागर के साथ-साथ चीन हिंद महासागर में भी अपनी जलीय ताकत बढ़ाने के लिए म्यांमार, श्रीलंका, मालदीव, बांग्लादेश, सिंगापुर, पाकिस्तान आदि देशों के साथ लगातार गठजोड़ मजबूत करने में प्रयासरत है। चीन को पता है कि वह एक महाशक्ति तभी बन सकता हैं जब आर्थिक क्षेत्र के साथ-साथ जल-थल-नभ में भी उसकी ताकत अजेय व अतुलनीय हो जाए और चीन तेजी से इस दिशा में अग्रसर है। आने वाले समय में यह क्षेत्र दुनिया के लिये जंग का मैदान बन सकता है। अत: चीन, आसियान देश एवं अन्य सभी पूर्वी एशियाई देशों के लिए लाभप्रद यही है कि सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में विवाद को सुलझा लिया जाए और सभी सम्बन्धित देशों के सामुद्रिक हितों, सुरक्षा व सम्प्रभुता की रक्षा संभव हो सके अन्यथा पानी में ही जब युद्ध व विध्वंस की आग लग जाएगी, तो फिर उसे बुझाने में कौन समर्थ होगा?

(विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री से संकलित)

●●●

भारत की परंपरागत जल संरक्षण पद्धतियाँ - 2

मरूभूमि की मृदुधारा - बेरी (राजस्थान) *- राजस्थान के सरहदी इलाकों में पाये जाने वाले परंपरागत जल स्रोतो में से ही एक अत्यंत उपयोगी स्रोत 'बेरी' है जो आज भी मरुभूमि में मीठे जल का साधन बनी हुई है। बेरियो वास्तव में एक प्रकार की 'कुइयाँ' हैं। जल संग्रहण क्षेत्र (आगोर) से पानी रिस-रिस कर बेरी में एकत्रित होता है। बेरी उन स्थानों पर बनाई जाती है जहाँ पानी के रिसाव को रोकने के लिये जिप्सम परत अधोसतही स्तर पर हो। यह परत जल के अवशोषण को रोकती है और उसे भूजल में मिलने नहीं देती। बेरी के भर जाने पर किनारे पर बनाये गये एक छिद्र से पानी की अतिरिक्त मात्रा पुन: आगोर में चली जाती है। बेरी के ऊपरी हिस्से मे मुँह का व्यास 3-5 फीट, अंदरूनी व्यास 5-10 फीट और गहराई औसतन 50 से 60 फीट होती है।*

राजस्थान में जलसंचयन की गौरवशाली परंपरा 'बेरी' गाँव-गाँव पाइपलाइन आने से उपेक्षा की शिकार होकर रखरखाव की कमी के कारण विलुप्ति की कगार पर पहुँच गई पर अब स्थानीय नागरिकों की पहल से राजस्थान सरकार ने पुन: सैकड़ो साल पुरानी पारंपरिक बेरियों के जीर्णोद्धार का बेड़ा उठाया है। बाडमेर, जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर आदि स्थानों में 'बेरियो' के पुनरुद्धार तथा पश्चिमी राजस्थान के अन्य जिलों जैसे जालोर, पाली, सिरोही आदि जिलों में भी अन्य परंपरागत जल स्रोतो को चिन्हित करने का कार्य चल रहा हैं।

टाँका (राजस्थान) *- यह वर्षा जल संग्रहण हेतु निर्मित एक भूमिगत पक्का कुंड होता है। यह सामान्यतया गोल या बेलनाकार तथा ऊपर से ढ़का होता है। इसके संग्रहीत जल का उपयोग पीने, घरेलू कार्यो व पालतू पशुओं की जल संबंधी आवश्यकता पूर्ति के लिये किया जा सकता है। टाँके का निर्माण व्यक्तिगत (पारिवारिक आवश्यकताओं के लिये) या सार्वजनिक उपयोग के लिये हो सकता है। वर्षाजल को शुद्ध व सुरक्षित रखने के लिए यह एक अत्यंत उपयोगी व्यवस्था है।*

'टाँके' के जलग्रहण क्षेत्र (आगोर) से वर्षाजल टाँके के अंदर संग्रहीत होता है। टाँको का जलग्रहण क्षेत्र प्राकृतिक होता है परन्तु कई स्थलो पर भूमि को टाँके की ओर हल्का ढलान देकर कृत्रिम आगोर की व्यवस्था भी करनी पड सकती है। प्रवेश द्वार पर जाली लगाकर कचरे को व छोटे जीव जंतुओं को टाँके के अंदर जाने से रोकने की व्यवस्था होती है। टाँके से प्रवेश द्वार के दूसरे छोर पर टाँके में क्षमता से अधिक जल की निकासी के लिये 30 X30 सेमी का जालीदार निकासद्वार बनाया जाता है। टाँके से पानी निकालने के लिये उस की छत पर लगे ढक्कन को खोलकर रस्सी व बाल्टी की सहायता से पानी खींचा जाता है।

- संकलित

मुगलकालीन बादशाह बाबर का बागवानी प्रेम व जल व्यवस्था

डा० अर्चना चौहान
असि. प्रोफेसर, चित्रकला विभाग

मुगलकालीन शासक बागवानी के अत्यन्त शौकीन थे, उनके आगमन से पूर्व जो बाग लगाये गये वह मुगलकालीन उद्यानों की तुलना में अत्यन्त पिछडे हुए थे। मुगल शासको ने अपनी रूचि के अनुसार इसमें कला एवं योजना की दृष्टि से अनेक आवश्यक सुधार बागों की सुन्दरता में अत्यधिक वृद्धि की थी। मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर के हिन्दुस्तान आने से पहले भवन निर्माण कला और उद्यान कला दो अलग-अलग कलाएँ थी किन्तु बाबर ने दोनों को इस तरह जोड़ दिया कि बिना उद्यानों के इमारतों की कल्पना ही कठिन हो गई। बाबर को बाग लगाने का बड़ा शौक था और कई बड़े-बड़े बाग उसने काबुल में लगाये थे समरकन्द के विशाल उद्यानों को उसने स्वयं देखा था। फारसी के कवियों जैसे फिरदौसी, सादी, हाफिज और खैय्याम की रचनाओं में उसने बागों के रोचक उल्लेखों का अध्ययन किया था, भली-भाँति परिचित था। इसके अनुसार बाग को चार समान भागों में नहरों द्वारा बाँट दिया जाता था ठीक बीचों बीच में आवास का महल या आमोदालय बनाया जाता था, जिससे बाग उसके चारों ओर रहे। नहरों में फव्वारे लगाये जाते थे पत्थर की बीथिकाएँ बनायी जाती थी, जिसके दोनों और ऊँचे-ऊँचे वृक्षों की पत्तियां रोपी जाती थी क्यारियों में फूलदार पौधे लगाये जाते थे। पानी को एक तल से दूसरे तल पर विविध-विधानों द्वारा गिराया जाता था। कलकल करते ये कृत्रिम झरने और फव्वारें सुन्दर ही नहीं लगते थे वरन् ये वातावरण को ठण्डा और मनोरम बना देते थे। बाबर द्वारा निर्मित उद्यानों में सिंचाई हेतु कृत्रिम नालियों, तालाबों तथा झरनों की व्यवस्था की गयी। इन उद्यानों के मध्य चबूतरों का निर्माण या तो सबसे ऊँचे या सबसे नीचे स्थल पर किया जाता था। इन पर चढ़कर लोग उद्यान की छटा का अवलोकन करते थे। बाबर ने 'बाग-ए-बुलन्द' तथा 'बाग-ए-दिलकुशा' नामक बाग लगवाये थे। भारत में प्रथम मुगल बाग की स्थापना बाबर ने आगरा में की थी और उसे हस्त बहिस्त अथवा नूर-ए-अफसान का नाम दिया था, जो आजकल रामबाग के नाम से प्रख्यात है। उसने रहट द्वारा पानी खींचने की व्यवस्था की। पत्थर की नालियों द्वारा यह पानी बाग में चारों ओर ले जाया गया स्थान-स्थान पर पत्थर से ही तालाब और झरने बनाये गये। इस व्यवस्था द्वारा पानी को दूसरे तल पर उतारा गया। वहाँ फिर नालियों द्वारा उसे चारों ओर ले जाया गया, फिर तीसरे तल पर यही व्यवस्था की गई अर्थात वास्तु के साथ दो अन्य तत्वों-बाग और पानी की कृत्रिम व्यवस्था को अधिकाधिक सुन्दर रूप में समृद्ध कर दिया गया। इमारत बाग के मध्य में ऐसे बनायी गयी जैसे सोने की अगूँठी में नगीना जड़ दिया गया हो। उसके साथ बहते हुए पानी की व्यवस्था नालियों, फव्वारों और झरनों ने चार-चाँद लगा दिये। बाबर के साथ बाग व्यवस्था के विशेषज्ञ और जल साधनों के इन्जीनियर भी सहयोग देते थे। मुगल इमारत अब एकाकी खड़ी दिखाई नहीं देती थी वरन् पत्थर की नालियों और तालाबों से घिरी हुई बाग के मध्य में प्रस्तुत की जाती थी। बाग और बहते हुए पानी की कृत्रिम व्यवस्था धीरे-धीरे मुगल वास्तुकला के अभिन्न अंग बन गये।

●●●

- *जल संचयन, संरक्षण आज के समय की बड़ी जरूरत है। देश का 70 प्रतिशत हिस्सा पानी से घिरा होने के बावजूद स्वच्छ जल उपलब्ध न हो पाना विकट एवं गंभीर समस्या है। नीति आयोग द्वारा जारी 'समग्र जल प्रबंधन सूचकांक' रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है कि सन् 2030 तक दश में पानी की मांग जल की उपलब्धता के सापेक्ष दुगुनी हो जायेगी। आंकडे बताते है वर्तमान में भी देश में लगभग 60 करोड़ लोग पानी के गंभीर संकट का सामना कर रहे हैं और करीब दो लाख लोग स्वच्छ पेयजल न मिलने से प्रतिवर्ष जान गंवा देते हैं।*

प्रकृति-सर्वोच्च शक्ति

डॉ० संगीता सिंह
प्रवक्ता, जन्तु विज्ञान, प्रबंध तंत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्या-अर्थात पृथ्वी मेरी माता है मैं पुत्र हूँ। ईश्वर की सर्वोत्तम कृति-'मनुष्य', जिसको प्रकृति ने तेज मस्तिष्क दिया, सोचने समझने की क्षमता दी किंतु इन सब के साथ स्वतः ही आ गया उसमे अहंकार, लालच और स्वयं को सर्व शक्ति शाली समझने को भ्रम। एक झटके में ही प्रकृति ने औकात याद दिला दी। एक मामूली से वायरस ने पूरी दुनिया की रफ्तार रोक दी। ऐसा पहली बार नहीं है जब मानव की बेलगाम बढ़ती इच्छाओं पर प्रकृति ने लगाम लगाई है। जनसंख्या बढोत्तरी ज्यामितिय (Geometrically) तरीके से होती है जैसे- 1, 2, 4, 8, 16, 32, 64, भोजन व अन्य प्राकृतिक संसाधन अंक गणितीय (Arthmatically) गति से जिससे भोजन व प्राकृतिक संसाधनो के बीच संतुलन गडबड़ा जाता है और प्रकृति को उसमें संतुलन स्थापित करना पड़ता है। प्रकृति, इस जनसंख्या पर कुदरती उपायों से रोक लगाती है-भूख, महामारी, अकाल, प्राकृतिक आपदा, युद्ध जैसी विभीषिका उन्हीं तरीकों में शामिल है। ये प्रकृति का जनसंख्या व अपने संसाधनों में संतुलन एवं सांमजस्य बनाने का तरीका है। अतीत में हुए अकाल, महामारी, युद्ध, प्राकृतिक आपदा, सुनामी, बाढ, भूकंप आदि इसके उदाहरण हैं।

आज डार्विन का 'अस्तित्व के लिए संघर्ष' भी पूर्णरूपेण लागू होता दिख रहा है। आज इस कोरोना में जिस व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता (Immunity) मजबूत है, वही जीवित रहेग उसी की संतति इस पृथ्वी पर बढ़ेगी। डार्विन बात करते है प्रजनन क्षमता की लेकिन आज हमें इसमें मानसिक क्षमता, बौद्धिक क्षमता एवं व्यवहारिक क्षमता जैसे पहलू भी जोड़ने होंगे। प्राकृतिक चयन के सिद्धान्त (Theory of Natural Selection) के अनुसार प्रकृति उसी का चयन करेगी जो उपरोक्त मानकों पर खरा उतरेगा।

एक दौर ऐसा भी था जब लोग बिना किसी द्वेष व संघर्ष के शांति के साथ जीते थे। ऐसे सरल जीवन के लिए वह अपना राजपाट, अपनी समृद्धि, हैसियत एवं महत्वाकांक्षा को त्याग देते थे। ऐसे लोगों को हम सन्यासी या हिमालय की कंदराओ में रहने वाले साधु, सिद्ध पुरुषों की तरह मानते थे। गौतम बुद्ध तथा भगवान महावीर इसी के उदाहरण हैं। आज कोरोना की वजह से वही परिस्थितियाँ फिर से उत्पन्न हो गई हैं। आज लोग पुनः सरल जीवन जी रहे हैं। पारिवारिक मूल्यों का अर्थ समझ रहे हैं। लोग संघर्ष और शक्ति के दिखावे से पूरी तरह दूर हो चुके हैं या हो रहे हैं। हर घर में एक महावीर के उदय होने की संभावनाए बढ़ गई है। संघर्ष की जगह आपसी सहयोग, सामंजस्य एवं सद्भावना का परिचय दे रहे हैं। महत्वकांक्षा रहित होकर लोग जीवन के प्रति नये दृष्टिकोण को अपना रहे है। जीवन अपनी गति से बीत रहा है। सीमित संसाधनों के अनुरूप अपनी जरुरतों को भी सीमित कर रहे हैं। बहुत से तो जीवन में पहली बात घर के आँगन में बैठ कर कोयल की कूक, चिड़ियों की चहचहाहट, बारिश के बाद मिट्टी की सौंधी खुशबू, फूल से फल बनते देख रहे हैं। साथ ही साथ अपनी दिनचर्या में सुधार कर अपने को ज्यादा बेहतर बनाने के प्रयास में लगे हुए हैं।

मनोवैज्ञानिक क्रापादकिन कहते है-सहयोग ही जीवन है, शांति ही जीवन है। वह कहते है संघर्ष क्षणिक है, सहयोग चिरस्थाई है। ऐसा सहयोग जिसमें चेष्टा नही सहजता होती है, जिसमें महत्वाकांक्षा नही समानता होती है, जिसमें द्वंद्ध नहीं मानवीय भाव होता है। एक सकारात्मकता होती है। जिस प्रकार माँ कठोर रूख अपना कर संतान को सही रास्ते पर लाती है उसी प्रकार आज प्रकृति यही व्यवहार कर रही है। आज खुले है तो पशुपक्षी, नदी, पहाड़, पेड-पौधे, जंगल आदि। केवल एक मनुष्य के घर के अदंर कैद होते ही सारी प्रकृति स्वतः ही संतुलित एवं प्रदूषण रहित होती नजर आ रही है।

वैश्विक कोरोना समस्या ने संपूर्ण मनुष्य जाति को अवसर प्रदान किया है कि प्रत्येक मनुष्य कुछ नया सोचे, योजना बनाए, चर्चा करें और आगे बढ़कर कदम उठाएं कि किस प्रकार हम इस धरती को रहने योग्य बनांए। इसलिए अच्छा है कि समय रहते हम समझ ले कि 'मानव' होने का सही अर्थ क्या है। यह धरती केवल हमारी संपदा नहीं है इस पर प्रत्येक जीव, पशु, पक्षी, पेड़ पौधे आदि सभी का उतना ही अधिकार है। 'जीओ और जीने दो' के सिद्धान्त पर चलना होगा वरना प्रकृति जानती है किसका दोष है, किसको दंड देना है आर्थर वेफटे ने सही कहा था– ये ग्रह मर रहा है, मानव जाति इसे नष्ट कर रही है.....अगर पृथ्वी मरती है, तुम मरते हो, अगर तुम मरते हो पृथ्वी जीती है। हम इतने अभिमानी कैसे हो सकते है? यह ग्रह हमेशा से हमसे शक्तिशाली था, है और रहेगा। अगर हम अपनी सीमा लाँघते है तो ये ग्रह हमारा ही विनाश कर देगा समय रहते ही हमें चेतना होगा और जानना होगा, पृथ्वी हमारी नहीं, हम पृथ्वी के है....

●●●

भारत की परंपरागत जल संरक्षण पद्धतियाँ - 3

विरदा (गुजरात)– *गुजरात के कच्छ इलाके जहाँ लम्बे लम्बे घास के मैदान और लवणीय सूखी सफेद धरती, सफेद रेगिस्तानों में अद्‌भुत है मालधारियों द्वारा पानी बचाने की यह पद्धति अद्‌भुत है। मालधारी बड़ी संख्या में पशु रखते हैं। उन्होंने अपने लम्बे अनुभव व जरूरत से इस इलाके में पानी के स्रोत खोजे और पानी की व्यवस्था की। मालधारी पानी की जगह खोजने व खुदाई करने में माहिर हैं। इसमें वे ऐसी झीलनुमा जगह चयन करते हैं, जहाँ पानी का बहाव हो। इसमें छोटे उथले कुएँ बनाते हैं, और उनमें बारिश की बूँदें एकत्र की जाती हैं। नीचे भूजल खारे पानी का होता है, उसके ऊपर बारिश के मीठे पानी को एकत्र किया जाता है, जिसे साल भर खुद के पीने और मवेशियों के लिये इस्तेमाल किया जाता है।*

नौले (उत्तराखण्ड) *– उत्तराखंड में जल मंदिरो यानि नौलों का इतिहास पांडवों से जोड़कर देखा जाता हैं जिनके वनवास व अज्ञातवास के समय बिताये गए क्षेत्रों में पीने के लिए जल स्रोतों के पानी को एकत्र करके यदि जल की मात्रा अर्थात उसका प्रवाह नियमित और ठीक–ठाक मात्रा में होता था तो जल को सूर्य के ताप से बचाने के लिए उन्हें ग्राम–समाज उसे धारे–पंदेरे या मगरे का रूप देता था और यदि पानी की मात्रा कम होती थी तो सूर्य की किरणों से बचाकर उसे नौले का रूप दिया जाता था। बाद में मध्ययुगीन शासको कत्यूरी, पवार, चंद वंश ने अपनी प्रजा के लिए नौले घरों का निर्माण बहुतायत से कराया। उत्तराखंड में ऐतिहासिक समकोण के अलावा लगभग हर नौले की एक कहानी हैं जो पारम्परिक नौले धारे की संस्कृति को परंपरागत समाज से जोड़े रखती हैं जो आज बिलुप्त होने के कगार पर हैं। इस अभ्यास से पानी के वाष्पीकरण को रोकने में मदद मिली। नौला और धारा के अलावा, पहाड़ों की ढलानों पर निर्मित छोटे–छोटे कृत्रिम तालाब और खल भी कई स्थानों पर नियमित रूप से बनाए जाते थे। ये तालाब न केवल वर्षा जल संचयन के पारंपरिक तरीके थे, जो भूजल स्तर को बनाए रखने में मदद करते थे, बल्कि जंगलों में घरेलू और जंगली जानवरों को पानी भी प्रदान करते थे।*

– संकलित

●●●

नदी, नहर, नद, झील, सरोवर वापी कूप कुंड नद निर्झर।
सर्वोच्च सौंदर्य प्रकृति का, कल–कल ध्वनि संगीत मनोहर।।

– संकलित

अप्सु अन्तः अमृतम्

वैशाली
बी.ए. VI सैम

ऋग्वेद सहिंता में वर्णित है '**अप्सु अंतः अमृतम्**' अर्थात जल में अमृत है वेदों में पानी को 'शिवतमः रसः' कहा है अर्थात जल सबसे अधिक कल्याणकारी रस है। 'उश्तीरिव मातरः' माँ के दूध जैसा पुष्टिदायक है। संध्या उपासना में आचमन करते हुए हम सबसे पहले कहते है – ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि–हे भगवान्, यह सुखदाता जल प्राणियों का आसरा हो। जिन पाँच तत्वों से प्राणियों के शरीर बने है, उनमें से पानी निकाल दें तो बाकी चारो तत्व भी मर जाएंगे। हवा में पानी न हो तो एक अंकुर तक न फूटे। अंतरिक्ष में पानी न हो तो सूर्य के ताप से ही सब कुछ जल जाए। पानी रहने से ही धूप का भी महत्व है।

जल ही जीवन है, हर एक बूंद मानव कल्याण के लिए अति महत्व है, जल के बिना जिन्दगी की कल्पना भी नही की जा सकती। इसकी हर बूँद मानव सभ्यता का भविष्य तय करेंगी। अतः जल का संरक्षण मानव मात्र का सामूहिक दायित्व है।

•••

जल एक विरासत, दूसरी पीढ़ी को सौपना जरूरी

दिपाली
बी.ए. II सैमे.

पानी की एक–एक बूँद कीमती है क्योंकि जल ही जीवन है। प्रकृति ने जल हमें एक चक्र के रूप में प्रदान किया है, हम भी इस चक्र का महत्वपूर्ण हिस्सा है। अतः इस चक्र को बनाये रखने के लिये हमको इस के संरक्षण के विषय में सोचना चाहिए। आज के समय में मनुष्य अपने स्वार्थ हेतु जल को अनावश्यक लापरवाही से बहा रहा है। अगर यह स्थिति लगातार ऐसे ही बनी रही तो, यह बहुत ही भयावह हो जायेगी। हमारे देश के लोग भाग्यशाली है, क्योंकि यहाँ की हर नई पीढ़ी को जल जैसी अमूल्य वस्तु विरासत में मिली है। अतः हमारा भी फर्ज बनता है, कि हम अपने भविष्य में आने वाली पीढ़ी को जल जैसी अमूल्य वस्तु को सुरक्षित सौपें।

•••

पानी की बोतल समझाती पानी का महत्व

साक्षी
बी. ए. VI सैमे.

आज दुनिया में हर तरफ पानी के लिए की हाहाकार मची है, दुनिया का चाहे कोई भी देश हो, बड़ा या छोटा सब आज के दौर में जल संकट जूझ रहे है। दुनिया के बड़े–बड़े नेता आने वाले समय में अपने देश में पानी की आपूर्ति बनी रहे उसके बारे में गहन विचार में लगे है। जब हमारे पास पर्याप्त पानी होता है तब हम उसकी परवाह नहीं करते तब हम उसकी कीमत नहीं समझते। अब ऐसा नहीं चलेगा। समय बदल चुका है, अब हमें पानी का संरक्षण और संचयन करना होगा ताकि आने वाली पीढियों के लिए पानी बचा रहें। जब हम कही घूमने जाते है और हमें पीने के लिये पानी की बोतल, खरीदनी पड़ती है, हम सोचते है 'इतना सा पानी 20 रूपये का', तब हमें वह पानी महँगा लगता है और जब हम उसे बर्बाद करते हैं तब बिल्कुल ध्यान नहीं देते। भविष्य सुरक्षित रखने के लिए हमें पानी की कीमत को समझना और उसका संरक्षण करना होगा।

जल संरक्षण-जीवन संरक्षण

गरिमा धीमान
बी.एस.सी. IV सैमे.

मानवता के लिए प्रकृति का सबसे कीमती उपहार पानी है क्योंकि धरती पर जीवन की कल्पना पानी के बिना कभी नहीं की जा सकती है। हमें न केवल अपने लिए बल्कि अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिये भी जल संरक्षण की जरूरत है। पृथ्वी को ''नीला ग्रह'' कहा जाता है, क्योंकि यह ब्रह्मांड का एकमात्र ग्रह है जहाँ पर्याप्त मात्रा में प्रयोग करने योग्य जल मौजूद है। पृथ्वी के सतह के स्तर का लगभग 71 प्रतिशत पानी है। इस पृथ्वी का अधिकांश पानी समुद्रों और महासागरों में पाया जाता है पर नमक की अत्यधिक अपस्थिति के कारण उन पानी का उपयोग नहीं किया जा सकता है। पृथ्वी पर पीने योग्य पानी का प्रतिशत बहुत कम है। इस पृथ्वी पर कुछ हिस्सों में लोगों को शुद्ध पेयजल इकट्ठा करने के लिए लम्बी दूरी जय करनी पड़ती है। सभी को पर्याप्त शुद्ध जल मिल सके, इस दायित्व का निर्वाह हम सभी की संयुक्त जिम्मेदारी है।

•••

बूँद-बूँद बरतेंगे

काजल त्यागी
बी.ए. IV सैमे.

'जल ही जीवन है' पानी की एक-एक बूंद को बचाना आज की जरुरत है अगर हमने आज पानी की बचत नहीं की तो इसकी एक-एक बूंद के लिए हमारे आने वाली पीढ़ी को तरसना पड़ेगा। दिन, प्रतिदिन पानी का स्तर घट रहा है। पानी का दुरुपयोग आम है-कहीं खुले नल, कहीं बिना कारण सफाई के लिए पानी का इस्तेमाल इसी के उदाहरण हैं। इसे रोकने के लिये हर व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। जल के बिना मनुष्य के जीवन की कल्पना तक नहीं की जा सकती है। मनुष्य, पशुओं, पेड-पौधो सभी को जल की जरूरत है। अत: अगर कल को बचाना है तो आज जल की बचत के लिये हम सबको आगे आना होगा।

बूँद-बूँद नही बरतेंगे, तो बूँद-बूँद को तरसेंगे।

•••

बचायें हर बूँद

आफरीन
बी.ए. IV सैमे.

जल ही जीवन है। पानी की हर एक बूँद कीमती होती है। ''जल है तो कल है।'' जल को व्यर्थ न होने दे तथा पानी की बर्बादी को रोके! बिना पानी के हम रह नहीं सकते। हम सब एक साथ मिलकर पानी की हर एक बूँद को बचाएँ। इसके लिये दैनिक जीवन में कुछ बातों का ध्यान रखना जरूरी है-

- ब्रुश करते समय नल तभी खोले जब पानी की जरुरत हो।
- नहाते समय शॉवर की बजाए बाल्टी एंव मग का प्रयोग करें तो, काफी पानी की बचत होगी।
- बर्तन धोते समय भी नल को लगातार न खोले बल्कि बाल्टी में पानी भर कर काम किया जा सकता है।
- वॉशिंग मशीन में रोज-रोज थोडे-थोडे कपडे धोने की बजाए इकटट्ठे होने पर ही धोए।

''जल संरक्षण है मेरा सपना, ताकि खुशहाल बने भारत अपना''

जलस्रोत संरक्षण

पारूल
बी.एस.सी. VI सैमे.

पानी के अनावश्यक उपयोग को कम करना एवं इसका कुशलतापूर्वक प्रयोग करना एक अभ्यास है। जल का महत्व हम जितनी जल्दी समझ जाये हमारे लिए उतना अच्छा है। धरती के सीमित जल-भंडार को बचाने के लिए आज सभी को जल संरक्षण की ओर अपना ध्यान आकृष्ट करने की जरूरत है। विशेषज्ञों के अनुसार, राष्ट्रीय जल-आपातकाल के खतरों का मुकाबला करने के लिए जल संरक्षण की पारंपरिक विधियाँ एक मात्र स्थायी विकल्प है।

जल संरक्षण आज बहुत जरूरी हो गया है। अपने रोजाना जीवन में को दुरुप्रयोग पर रोक लगाने की जरूरत है। दुनिया के कई देश जल की भारी कमी का सामना कर रहे है। भारत के कई राज्यों में भी पानी के लिए लोगों को मीलों दूर तक जाना पड़ता है। जल का हम सही उपयोग व वर्षा जल का संग्रहण करें तथा जल संरक्षण के लिए नदियो और अन्य पानी के स्रोतों को प्रदूषित नहीं करें, तभी हम वर्तमान जल संकट का समाधान पा सकेंगे।

●●●

Water Conservation- A Responsibility of All

Garima Satpuri
B.A. IV Sem.

Water is the first and basic need for the every existence of human beings. Water conservation means simply making use of water in an appropriate and proper manner. Responsbility for this task is to be owned by individuals as well as Governments.

People can use variety of methods to conserve water such as. Planting more trees can help water to penerate into the soil and replenish the water table. We need to cut shower and tub bath instead one can go for bucket. Irigation hours and frequency can be reduced. Rain water harvesting has to become compulsary for every one. We must turn off the pipes while brushing the teeth or washing face, instead of we can use mug.

Government should take the following steps to conserve water for future such as-1. Population control should be there. 2. Across coastal areas, there should be more desalination plants. 3. All the environmental laws should be strictly implemented. 4. Best sewage treatment practices should be taken into action. 5. Government should make people aware about water conservation through media, rally, environmental awareness program etc.

Everyone should understand their own responsibility in conserving water and should avoid using excess water to save next generation from facing water scarcity. Lets "save water today, it will save us later."

●●●

It take lots of blue to stay green

Kanika Chaudhary
B.Sc. VI Sem.

Water is necessary for life. We can't survive without water and we need it to produce food and even energy. But how we manage water is a big problem. We need

a global transformation of the way the world manages fresh water. The world water council reports that human population of the planet is on track to grow 40-50 percent within next 50 years, putting additional pressure on our already shrinking supply of fresh water. Hotter planet means an increased demand of water. Heat causes water to evaporate more quickly. Water conservation can go a long way to help allevaite these impending shortages. Some suggested measures are-

1- Check the water taps for leaks regularly
2- Take shorter showers.
3- Install water-saving shower heads or flow restricters.
4- Water the plants wisely
5- Purchase your washing machine wisely.

●●●

Don't be fish out of water

Vijaylaxmi Soni
BSc. VI Sem.

Water is life! If there is no water, there would be no life! As all the life forms of all species of flora and fauna depend on water so, it is our responsibility to conserve this life nectar. We must ensure that there is no pollution of water bodies by dumping any waste such as sewage, effluents, and other toxic substances. We must also ensure there is no emission of green-house gases into the atmosphere. Water conservation is the only way to save water for future to solve the problem of water scarcity. There is a major shortage of water in many countries, which has caused the common people to travel long distances to fetch water required for drinking and other daily chores. Water is a first need of everyone, it must be conserved. **If we don't learn to conserve we will all be fish out of water**.

●●●

Water is Future

Manisha Rawat
BSc. VI Sem

Water is an integral part of our lives. We cannot imagine our survival without water. It not only fulfils our needs but is also necessary for the ecosystem. A number of living organisms are dependent on water. Manufacturing industries, oil companies, chemical factories all are dependent on water directly or indirectly. Direct purposes include all living activity based on water-argiculture, bathing, cooking, drinking and mopping whereas indirect purposes include production of food, paper and chemicals.

Water is present in abundance on earth but only 3 percent is present in the form of fresh water out of which half of water can be used because remaining is locked up in glaciers. Therefore, concern for availability of freshwater becomes crucial. Today, we are going through water crisis. There are two reasons for this-increasing population and mismanagement of water. The increasing population needs water to wash and bathe, it also needs industries and houses to meet its needs. Water is needed for all these, while the source of water is the same. Even if humans manage water wisely according to the increasing needs, the water crisis can still go up, but today's man is worried but not ready to work in this direction.

Rain water is drinkable and useful but 80% of it drains in sewers and goes back to sea. If that water is intercepted in the forests, vegetation or ponds, then we can overcome the water crisis. It is

necessary to make the forests green and rich. Secondly, ponds should be clean. Thirdly, it is necessary to transport the rainwater to the ground. It is also necessary to keep the holy rivers clean and free from chemical waste. The sooneer we change our ways, the sooner we will be able to conserve water for future.

•••

Jal Hai To Kal Hai

Vanshu Sharma
BSc. IV Sem

Water is the most precious gift for humanity by nature. Our life is possible only because of water and water conservation is the only way to save out future. It is responsbility of all to save water because if we save water then we will also be safe.

The main reason for water scarcity and water pollution is the population increase. It has been recorded that about 17000 farmers have committed suicide due to lack of water in their areas, which is a cause of great concern for the entire nation, By the purpose of "save water, save life and save the world" we need to come together and work unitedly. It is right to say that small efforts of all people can give a bigger result, but there is urgent need to make some positive lifestyle changes by all of us.

•••

Conserve Water, Conserve Life

Ankita Chauhan
BSc IV Sem

You say you love and care for environment..... so let me ask you this.....Why do I keep getting shocked? Will I ever get help? What did I do deserve this?

As we all know that there are major problems towards our environment, resources etc. Water conservation is very important as it gives life to all the people who live on the earth. Being a human being we have certain duties towards the earth. A very small part of water available is fit for human use so it is our resposibility not to waste water. In my opinion, there are many ways to save water and minimize the shortage of water. We should use required amount of water and avoid wastage. Apart from that, we can make people aware about water conservation. There is nothing that people need in their lives more than water. Save water and it will save you.

•••

Water A Gift of God, Conserve It.

Mansi Dhiman
BSc. VI Sem

God has gifted us some precious resources, and one of them is water. Water is important part of our life but still we are not able to conserve it. Our earth had 3/4 th surface covered with water, but then also we have scarcity of water in many parts of the world.

Now world is moving towards water crisis due to excessive use of water by humans. There are too many factors responsible for this. Polluting water, over-population lack of proper storage etc. Today, many protests are being made for water conservation, here, comes the role of young genera-

tion. They can help the world to know about the various measures to conserve water for our survival and explain them how important it is to conserve water. There are many ways such as.

a) Aforestation it helps to replenish water table.
b) Use of drip irrigation or sprinklers for optimum utilisation of water in agriculture, It reduces water consumption and helps to conserve water.
c) Rain-water harvesting.

●●●

Saving lives on the blue planet

Rupali Tyagi
B.Sc. VI Sem

Water is the first need for anyone and since our lives depent entirely on water, it is our duty to think about water conservation and how we contribute to it.

Our earth is covered with 97% of salt water and we can't use this water for drinking purpose. The remaining 3% of the water is cool but the 2% is also blocked by glaciers and ice caps. So we only have 1% of water left. So, we can feel now how water conversation is important to us. Consumption of uncleaned water leads to many diseases such as cholera and diarea.

Tiny drops of water makes the ocean vast. So every drop of water saved is a step towards saving the lives on the blue planet. The scientist communities need to work on advanced agricultural reforms in irrigation, development of drought resistant, croop varieties, and desalination of seawater. Proper planning of cities and efforts to keep the water bodies clean are some of the absolute requirements. As individuals we have a huge role to play in water conservation.

●●●

If we pollute the air, water and soil that keeps us alive and well and destroy the bio-diversity that allows natural systems to function, no amount of money will save us.

जल संरक्षण के संदर्भ में अनुपम मिश्र का योगदान

डॉ० किरन बाला
सीनियर असि. प्रोफेसर, समाजशास्त्र

पंचतत्वों में से एक जल तत्व मानव जीवन का प्रमुख आधार है, जल के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं कि जा सकती, इसकी महत्ता को इस तथ्य से समझा जा सकता है कि अधिकांश बड़ी-बड़ी सभ्यताएँ एवं प्राचीन नगर नदियों के तट पर ही विकसित हुए। भारत में जल संरक्षण एवं सवर्द्धन की समृद्ध परम्परा रही है। भारतीय सनातन संस्कृति में जल की महत्ता इस रूप में स्वीकार की गई कि प्रकृति से जितना लिया जाता है उतना ही देने की इच्छा मन में रखनी चाहिये।

जल संरक्षण के परम्परागत स्रोतो में तालाबों, कुण्डों, झीलों, बाबड़ियों का निर्माण मुख्य था। जल प्रबन्धन के इस उपायो से भू जल का स्तर कभी भी कम नहीं होता था और वर्ष भर पीने के पानी की उपलब्धता बनी रहती थी, विकास भौतिकता की दौड़ में इस तकनीति को उपेक्षा की दृष्टि से देखा गया और हमने अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मार दी। जल संरक्षण के परम्परागत स्रोतो के संवर्द्धन में प्रसिद्ध पर्यावरणविद् एवं गांधी वादी विचारक अनुपम मिश्र का योगदान अग्रणी एवं महत्वपूर्ण है, उन्होंने भारत के प्राचीन परम्परागत जल प्रबन्धन की ओर लोगो का ध्यान आकर्षित किया और इस प्राचीन तकनीकि को पुनः स्वीकार करने के लिये विवश किया। पर्यावरण संरक्षण के प्रति जनचेतना जगाने का और सरकारों का ध्यान आकषित करने का काम अनुपम मिश्र तब कर रहे थे जब देश में पर्यावरण रक्षा का कोई विभाग नही खुला था। आरम्भ में बिना सरकारी मदद के ही उन्होंने जल संरक्षण की चुनौतियों को बारीकी से समझा और इनके संवर्द्धन के लिए अथक प्रयास किये। उनकी कोशिशों में सूखाग्रस्त अलवर में जल सरंक्षण का काम शुरू हुआ। उनके इस कार्य को दुनिया भर में सराहना मिली, सूख चुकी आखिरी नदी के पुर्नजीवन में उनका प्रयास अविस्मणीय है। इसी तरह राजस्थान और उत्तराखण्ड के कुछ क्षेत्रों में परम्परागत जल स्रोतो को पुर्नजीवित करने की दिशा में उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किये।

अनुपम मिश्र की पुस्तकों में 'आज भी खरे है तालाब, राजस्थान की रजत बूंदे' जल संरक्षण की भारतीय दृष्टि की अनुपम कृति है। इनके शोध के अनुसार आज से 100 साल पहले देश में करीब 11 से 12 लाख तालाब थे। जो वर्षा ऋतु में पूरे भर जाया करते थे। बाबडियों के रूप में जल संरक्षण किया जाता था। जिसमें ऐसे सीढ़ीनुमा कुंड का निर्माण किया जाता था, वर्ष भर उस कुंड में पानी इकट्ठा हो जाता। आज भी खरे है तालाब पुस्तक में अनुपम मिश्र ने समूचे भारत के तालाबो, जल संचय पद्धतियों, झीलों तथा पानी की अनेक भव्य परम्पराओं की समझ, दर्शन एवं शोध को लिपिबद्ध किया है। ये परम्परागत जल संरचनाए आज भी हजारो गावों एंव कस्बो की जीवन रेखा हैं, यह पुस्तक जल संकट से निपटने में और इस समस्या की गहरी समझ विकसित करने के लिये शोधार्थियो के लिये गाइड का काम करती है। पुस्तक भारतीय जल चेतना एवं जल संरक्षण के उत्तरदायित्व के निवर्हन हेतु मार्गदर्शक है। अनुपम मिश्र जी ने इस पुस्तक का किसी प्रकार का कॉपीराइट नहीं रखा इसी वजह से ब्रेल लिपि सहित 19 भाषाओं में दूसरा अनुवाद किया जा चुका है। सामाजिक सरोकारे से जुड़ी पुस्तकों में महात्मा गांधी की पुस्तक 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' के बाद सिर्फ यही पुस्तक ब्रेल लिपि में उपलब्ध है।

अनुपम मिश्र जी का दिसम्बर 2016 में निधन हो गया जो पर्यावरण सरंक्षण के आन्दोलन की गहरी क्षति है, तालाबों के पिता कहे जाने वाले अनुपम मिश्र को जल संवर्द्धन के लिए हमेशा याद किया जायेगा। आज न केवल जल को संरक्षित किये जाने की आवश्यकता है बल्कि इसे प्रदूषित होने से भी बचाना उतना ही आवश्यक है। इसके लिये बेहतर होगा कि जल के परम्परागत स्रोतो को पुर्नजीवित किया जाये। अन्यथा भविष्य में जल संकट और भी गहरा सकता है और यह भविष्यवाणी सत्य साबित हो सकती है कि तृतीय विश्व युद्ध जल के लिये होगा।

●●●

पर्यावरण संवेदना और साहित्य

डॉ० सीमा रॉय
प्रवक्ता, हिन्दी

'हिम गिरी के उत्तुंग शिखर पर, बैठ शिला की शीतल छांह,
एक पुरुष भीगे नयनों से, देख रहा था प्रलय प्रवाह।'

पृथ्वी मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है, लेकिन हमारे लालच को पूर्ण करने में वह सक्षम नहीं है। आज के मानव की आकांक्षा इतनी बुलंद हो चुकी है कि चंद्रमा और मंगल ग्रह पर पानी की खोज के लिए करोड़ो-अरबों रूपये विकसित देशो की दौड़ में शामिल होने के लिए खर्च कर देना चाहता है। महत्वाकांक्षी, होना अच्छी बात है पर महत्वाकांक्षा इतनी अधिक भी नहीं होनी चाहिए कि मंगल ग्रह और चन्द्रमा पर पानी तलाशते-तलाशते वह अपने ग्रह (पृथ्वी) के जल को भी न बचा पाये।

मानव, हमेशा से भविष्य के लिए ऐसा कुछ खोज करने की कोशिश में रहता है जो उसकी महत्वाकांक्षाओं से कहीं अधिक हो। परन्तु अपने स्वार्थ पूर्ति के उद्देश्य से वह प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा और उनके बचाव जैसे कार्यो में त्वरित गति से अपनी क्षमता का प्रयोग नहीं कर पाता। जल और मानव जीवन के संबंधों का उल्लेख साहित्य में हमेशा से होता रहा है। वैदिक काल में भी पर्यावरण को जीवन की आधारशिला माना गया है। प्रकृति से उनका गहरा जुड़ाव था तथा तुलसी, बरगद और पीपल जैसे पेड़ लगाना उनके कर्त्तव्यों में शामिल था। मानव, जीव जन्तु, पर्वत, वृक्ष, सरिताएँ, ऋतुएँ आदि से परस्पर जुडे हुए थे।

मनुष्य शरीर की रचना प्रकृति के पाँच तत्व- पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश के द्वारा हुई है। उपर्युक्त समस्त तत्वों से हम अपनी जीवन की प्रत्येक कार्यकलाप करते है और अन्त में इसी में समाहित हो जाते है। आज हम उस पंच तत्व को समझे जिसे तुलसीदास जी ने 'रामचरित मानस' में यह कहकर सम्बोधित किया कि-

'क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा, पंच रचित अति अधम सरीरा'

मानव अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर अपनी उसी प्रकृति को नष्ट कर रहा है जिस पर जीवन आधारित है। हिन्दी साहित्य में पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं, प्रकृति के सौन्दर्य चित्रण व मानवीकरण से लेकर पर्यावरण प्रदूषण व अन्य महत्वपूर्ण समस्याओं पर चिन्तन किया है। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक के साहित्यकारों के अनुसार प्रकृति एवं मानव एक दूसरे के पूरक है। प्रकृति है तो जीवन है और इसका अनियंत्रित दोहन होगा तो जीवन ही नष्ट होगा। बढ़ती आबादी प्राकृतिक संसाधनो का अधिक मात्रा में दोहन और इसके प्रति उदासीनता ने आज मनुष्य के समक्ष जल संकट खड़ा कर दिया है। प्राकृतिक संसाधनों में जल हमारे लिए सर्वाधिक मूल्यवान है। यह ऐसा पदार्थ है, जो कि किसी भी देश के लिए धरोहर से कम नहीं है। आज मनुष्य जीवन ही नहीं बल्कि धरती पर अन्य जीव-जन्तुओं की रक्षा हेतु जल संरक्षण के लिए कोई ठोस कदम उठाने होगें, अन्यथा दिन प्रतिदिन स्थिति विकराल संकट की ओर बढ़ती जायेगी।

साहित्य में जल का अत्यंत महत्व रहा है, प्राचीन काल से ही प्रकृति की पूजा, मनुष्य जीवन का आधार रही है। हिन्दी साहित्य में प्रारम्भ से ही प्रकृति के अनावश्यक दोहन-शोषण का विरोध किया है। हिन्दी सात्यिकारों ने जैसे - कबीर, तुलसी, सूरदास या मीराबाई या आधुनिक काल के प्रेमचन्द, जय शंकर प्रसाद, अज्ञेय सभी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से पर्यावरण के प्रति संवेदनाओं को स्पष्ट किया है। भारतेन्दु हरीशचन्द्र द्वारा लिखित 'प्रेम माधुरी' में वर्षा ऋतु के आगमन पर प्रकृति की हरियाली छटा का वर्णन किया गया है।

कुकै लगी कोइलै कदम्बन पैबै फेरि, धोये-धोये पात हिल-हिल सरसै लगे।

हिन्दी साहित्य में छायावाद को तो प्रकृति का उद्यान माना जाता है। हिन्दी के कवियों जैसे-आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की रचनाओं में 'अशोक के फूल', शिरीष के फूल, 'आम फिर बौरा गये' और 'कुटज' आदि में वृक्ष के महत्व के साथ-साथ मानव जीवन से जुड़े सम्बन्धों को दर्शाया गया है। प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानन्दन पंत की रचनाओं का आधार ही पेड़-पौधें, नदियाँ, पहाड़, खुला आकाश और प्रकृति-चित्रण रहा है। नौकाविहार कविता में इसी छटा को व्यक्त किया है-

ज्यों-ज्यों लगती नाव पार, उर के आलोकित शत विचार।
इस धार-सा ही जग का क्रम, शाश्वत इस जीवन का उदगम्, शाश्वत है गति, शाश्वत संगत!
शाश्वत नभ का नीला विकास, शाश्वत शशि का यह रजत हास।

इसी परम्परा में नये रचनाकारों ने भी कविता, उपन्यास, कहानी, संस्मरण, रेखाचित्र और यात्रावृतांत के द्वारा पर्यावरण के प्रति चेतना को एक नया आयाम दिया है। वास्तव में आज पर्यावरणीय संवेदना के प्रति उसी तरीके के संरक्षण की भावना की आवश्यकता है जो वैदिक साहित्य में हुआ करती थी। कवियों ने ऋतुओं को आधार बनाकर जो बारहमासा रचा था। आज उसको समझनें की आवश्यकता है। मूलत: जीवन के आधारभूत तत्व के रूप में प्रकृति को समझने, उसे स्वीकारने और उसके प्रति संवेदनशील बने रहने का सशक्त-व्यापक भाव रखना होगा। हमें अपने पुराने-नये तमाम साहित्यिक व सांस्कतिक स्रोतों से छनकर आकार ग्रहण करना होगा जहाँ प्रकृति के रिश्ते का विचारात्मक अवदान प्रदान करना होगा।

हिन्दी साहित्य मानव को प्रकृति से तादात्म्य स्थापित कर उसके उचित उपयोग का रास्ता दिखाता है। मानव का सम्पूर्ण अस्तित्व प्रकृति से ही जुड़ा है और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रकृति पर पूर्णत: निर्भर है। इसलिये हिंदी कवियों एवं साहित्यकारों के लेखन में जल, प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण का महत्व परिलिक्षित होता है।

●●●

भारत की परम्परागत जल संरक्षण पद्धतियाँ - 4

जलाशय *- दक्षिणी भारत भी जलसंचय की व्यवस्थाओं और रखरखाव में अग्रणी रहा है। कर्नाटक में जल भंडारण अनगिनत छोटे-बड़े जलाशयों की श्रृंखला के माध्यम से किया जाता था। नौवीं शताब्दी के नीतिमार्ग अभिलेख में इनका उल्लेख अराकेरे, देवीकेरे, केलकेरे, कट्टे और कोल आदि नामों से मिलता है। ये तालाब अरोकेरे (अर्द्धतालाब) बोलकेरे (प्रतिबंधित क्षेत्र के पोखर) देवीकेरे, देव गेरे या देवराकेरे (मंदिरो के लिये बने विशेष तालाब) आदि नाम तालाबों के स्थानीय उपयोग के आधार पर रखे जात थे। जल संग्रहण के लिये 'कट्टे' निर्मित किये जाते थे जिनमें से कुछ का उपयोग केवल पीने के पानी के लिये और कुछ का इस्तेमाल नहाने,धोने आदि अन्य कार्यो के लिये किया जाता था। गड्डे या निचले इलाके में संग्रहीत जल को 'कुटे' या कोल कहा जाता था। इसके पानी का उपयोग मवेशी व मनुष्य दोनों कर सकते थे। भूमि के नीचे से फूटते सोले के जल के उपयोग के लिये 'पिल्ला भावी' या गादाँदा (छोटे कुए) बनाये जाते थे। विभिन्न जल संग्रह व्यवस्थाओं के निर्माण और रख रखाव की पहल तत्कालीन राजाओं, अमीर व्यक्तियों और ग्राम संस्थाओं की ओर से की जाती थी। जलस्रोतों के रखरखाव के लिये विवाह आदि समारोहों पर कर वसूला जाता था तथा इनके दुरुपयोग को रोकने तथा प्रदूषण मुक्त रखने के लिये कड़े नियम थे। वर्तमान जल संकट के मूल में काफी हद तक इन परंपरागत जल संग्रहण संबंधी व्यवस्थाओं की उपेक्षा व अतिक्रमण है और समाधान की दिशा में बढ़ने के लिये इन्हें पुनर्जीवित किये जाने के प्रयास करने की जरूरत है।*

- संकलित

विजयी भवः

डा० अर्चना मिश्रा, प्राचार्या

मेरे भारत! विजयी भवः।
निराशा का निविड़ अंधकार
वसुन्धरा गतवैभव,
रोग, शोक, मृत्यु का
चतुर्दिक विकट तांडव,
आज पुनः आह्वान तुम्हारा-
करता होकर विश्व विकल,
मेरे भारत! विजयी भवः।
अनोखा है यह रण!!
मानव हैरान है, शत्रु का न ज्ञान है,
न जाने किधर से होगा आक्रमण,
गहन अंधकार में, अदृश्य शत्रु का
करना है अचूक भेदन,
मेरे भारत! विजयी भवः।
कर महाशक्ति का आवाहान,
हो जन-जन की शक्ति का जागरण
ले विजय-संकल्प, साध अनुशासन,
जीत का कर शंखनाद, छेड़ दे तू रण
मेरे भारत! विजयी भवः।
चुनौती है प्रबल, टूटे न आत्मबल
अन्तर्मन के आलोक में प्रत्यंचा तान
कर अमोघ लक्ष्य साधन
रिपुदल का कर मर्दन
जगती को दे नव जीवन
मेरे भारत! विजयी भवः
सोया विश्व जगाया देकर ज्ञान सनातन,
साधी सागर की लहरें कर सेतुबंध,
खोज दशमलव सकलविश्व में-
गतिशील किया विज्ञान चक्र,
स्मरण कर निज गौरव,
जागृत कर अमित आत्मबल,
विजय पथ पर तू चल,
मेरे भारत! विजयी भवः।
'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की संवेदना,
'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की कल्याण कामना,
आत्मसात् कर वसुधैव कुटुंबकम् का स्वर्णिम मंत्र,
आज कर निर्णायक प्रहार
अखिल विश्व को उबार
मेरे भारत! विजयी भवः।

'सबक'

डा० अलका आर्य
प्रोफेसर, चित्रकला विभाग

चलो अब
कुछ अच्छे सबक
हमेशा के लिये सीख ले
इस कोरोना संक्रमण काल में
प्रकृति के मुरझाए मन को
अपनी चेतना के जल से सींच ले..।।
रोक कर प्रदूषण की अनियंत्रित रफ्तार।
धूल-धुएं, कूड़े और कचरे का -
असीमित अंबार।
करें मिलजुलकर यह विचार
कि कैसे होगा इस धरा का उद्धार... ?
गाँव और शहर-शहर...
प्रकृति का होता विकराल कहर....,
त्याग कर निजी स्वार्थ हे मानव-
तू अब कहीं तो ठहर.....।
घरों की चार दीवार में होकर कैद...,
इस विश्व त्रासदी पर
विजय को प्राप्त कर ले।
हो चुका बहुत -
प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध शोषण....,
वायु, जल, पेड़ पहाड़ झरनों और नदियों का
अतिशय भक्षण..... !
ढायेंगे कहर....
ये महामारी, सुनामी, बाढ़ और भूकम्प
कि थाम ले अब तो,
आधुनिकता की इस अंधी दौड़ को अविलंब।
नहीं तो मच जायेगा
चहुँ ओर विश्व में त्राहीमाम...
होगा जब-
जल, वायु और जंगल को लेकर भीषण संग्राम।
है समय अभी-
आपदा को अवसर में बदल ले-
अपनी अनंत इच्छाओं की सीमा रेखाएं खींच ले।
चलो अब कुछ अच्छे सबक, हमेशा के लिये सीख लें।।

एक सड़क

डॉ० अर्चना चौहान
असि० प्रोफेसर, चित्रकला विभाग

आज खामोश सड़क कुछ कहने लगी.....
हाँ शान्त व खामोश सड़क
खामोश ही कहूँगी.....,
बालकोनी झाँकती सड़क को
पता नही इतने सालों बाद
आज सड़क को चैन से सोता देखा
जो कि हमेशा शिकायत करती रही कि.....
कितना आवागमन है मेरे ऊपर,
सीने को चीरती दिन-रात मोटर कार.....
हमेशा दौड़ता भागता ये इंसान
सड़क सोच में पड़ जाती...,
क्या कभी ये आदमी रूकेगा... ?
अपने-अपनों के लिए,
लेकिन अपने से भी भागा
जा रहा है..... ।
सड़क भी दौड़ी लगातार-
इस इंसान के साथ-साथ,
एक भ्रम का मंजर,
क्या इंसान के पैर में चक्र है
या फिर सड़क में चक्र ?
अचानक.....ये क्या ?
सड़क ने प्रकृति से मिलकर
जैसे कोई साजिश रच दी

अपनो से मिलने के लिए
पगडंडिया बनी.....
पगडंडियों ने सड़क का
रूप लिया.....
लेकिन इस भौतिकवादी युग में
इंसान भूल गया.....
माता-पिता तरसते रहे गये
सड़क की राह देखते-देखते
कभी समय नही.....
सड़क बाहें फैलाये खड़ी
अपनों से मिलाने में आतुर
बालकॉनी से झाँकती
मैं सड़क को.....
सड़क देखकर मुस्कुरा गयी
तब धीरे से बोली
तुम्हें एहसास हो रहा.....
अपनों के साथ रहने का
आज खुश होती सड़क
चैन से सोती सड़क
मानो सदियों से न सोई हो
खामोश सड़क.....
अपनी सड़क.....

•••

जल ही जरूरी है (हास्य कविता)

डॉ० अन्जु शर्मा
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग, प्रबंध तंत्र

जीवन जीने के लिये, खाने-पीने के लिए भी,
जल ही जरूरी है न और कुछ चाहिए।।
व्यर्थ बहाया तो, फिर खूब पछताओगे,
खाने को क्या फिर कोल्डड्रिंक से बनाओगे ?
खेती-बाड़ी कुछ भी न, होगी इस धरती पर।
जानबूझ कर इसे रेगिस्तान बनाओगे ?
रोटी, ब्रेड, पिज्जा और चाऊमीन भी मिलेगी नहीं,
फल फ्रूट खाने को भी, तुम तरस जाओगे।।

कपड़े धुलेंगे नही, न साफ सफाई होगी,
कपड़ो को फिर क्या, ड्राइक्लीन ही कराओगे ?
जल जो न होगा तो फिर, बिजली भी होगी नहीं,
ए.सी. कूलर, पंखे की हवा को कैसे खाओगे ?
व्हाट्सएप, फेसबुक के दीवाने बने घूमते हो।
बिन बिजली के फोन भी चार्ज न कर पाओंगे।
जीवन जीने के लिए, खाने-पीने के लिये भी
जल ही जरुरी है, न और कुछ चाहिये।

•••

तरस जाओगें बूँद बूँद को...

शमा प्रवीन, बी.ए. IV सैमे.

इक बार सोच के देख जरा, क्या जल बिना तुम जी पाओगे?
तरस जाओगे बूंद-बूंद को.... गर व्यर्थ जल को बहाओगे।
कब तक देखोगे तुम, जल की बर्बादी के तमाशे,
जब जल खत्म हो जायेगा, मरोगे तुम प्यासे-प्यासे।
सूख रही नदियाँ नाले, जल स्तर भी गिर रहा,
आँख खोलकर देख जरा, तू जल संकट घिर रहा।
आज नहीं संभले तो कल, रोओगे पछताओगे,
तरस जाओगे बूँद-बूँद को, गर व्यर्थ जल को बहाओगे।
जल बिना जगत सूना है-जल ही अनुपम धन है,
जल बिन ये जीवन न होगा, जल ही तो जीवन है।
अपने बच्चों के हिस्से का, जल तुम व्यर्थ बहा रहे,
आने वाली नस्लों के लिए कैसे दिन तुम ला रहे?
फिजाओं में जहर भरके, नदियों को नाली करके,
भू जल को खाली करके तुम कैसे मुँह दिखाओगे,
तरस जाओगे बूँद-बूँद को....गर व्यर्थ जल को बहाओगे।

मत करो मुझे बर्बाद

जेबा, बी.ए. VI सैमे.

मत करो मुझे बर्बाद, इतना तो तुम रखो याद,
प्यासे ही तुम रह जाओगे, मेरे बिना जी न पाओगे।
कब तक बर्बादी का मेरी तुम तमाशा देखोगे,
संकट आएगा जब तुम पर, तब मेरे बारे में सोचोगे।
संसार में रहने वालों को मेरी जरूरत पड़ती है,
मेरे बिना इस दुनिया में जीना सबका मुश्किल है
अपनी नहीं कल की सोचो, भविष्य भी इसमें शामिल है।
इतना तो रखो याद, मेरे बिन जी न पाओगे।
करो फैसला मिलकर आज मत करो मुझे बर्बाद

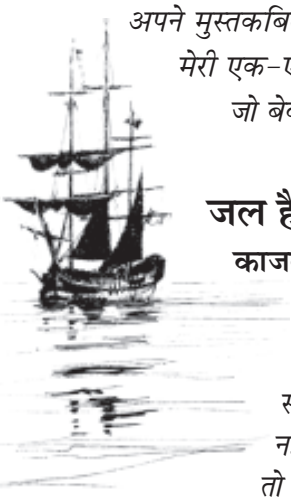

नीर का मत कर नाश

नेहा, बी.ए. VI सैमे.

जल ही जीवन जल ही कल है,
इस जल को हमें बचाना है।
बूंद-बूंद की कीमत क्या है, ये सबको बतलाना है।
जल जीते हम जहान में, तन का इससे तार जुड़ा
नीर का मत कर नाश ओ नेहा!
ये नारा फैलाना है।

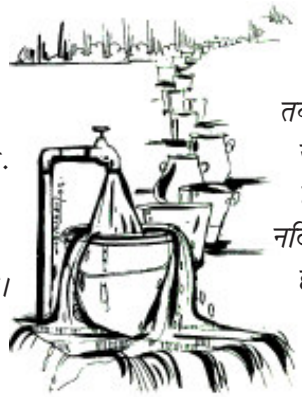

कहते हैं मुझे नीर, जल और पानी

राबिस्ता बानो, बी.ए. VI सैमे.

कहते हैं मुझे नीर, जल और पानी,
मेरे साथ-2 बढ़ी दुनिया की कहानी।
सिर्फ दो तत्वों से बना तत्व नहीं हूँ मैं,
हर जगह हूँ मगर कहीं नही हूँ मैं।
मेरे बिना नही इस जग की कहानी।
अगर मेरे लिए बदला नहीं तुम्हारा ढंग,
तो मेरे लिये ही होगी विश्व में तीसरी जंग।
महज और HO_2 से बनता नहीं,
मेरी एक बूँद बनने में सदिया हैं लगती।
मैं जमजम भी मैं गंगा भी,
मेरी कीमत जाने सिर्फ प्यासा ही
मेरी कीमत आज भी कुछ समझियें,
अपने मुस्तकबिल के लिये मुझे बचाइये।
मेरी एक-एक बूँद को तरस जाओगे,
जो बेवजह मुझे यूँ ही बहाओगे।

जल है तो कल है

काजल त्यागी, बी.ए. IV सैम

जल है तो कल है-
जो जल को बचायेगा-
समझदार वही कहलायेगा।
नई पीढ़ी को मुँह दिखाना है
तो जल को जरूर बचाना है।
जब जोर से लगी हो प्यास और
जल न हो आस-पास।
तब समझेंगे जल की कीमत आप।
जल से धरती और जल से जीवन
है अनमोल ये निर्मल शीतल जल
नदियों में बहता अविरल कल-कल
है सत्य यही अटल-कि जब होगा
जल-तभी बचेगा कल।।

महाविद्यालय शिक्षक परिवार

प्रथम पंक्ति (बायें से दायें) – श्रीमती अंशू गोयल, डा० उमा, डा० संगीता सिंह, डा० अस्माँ सिद्दीकी, डा० किरन बाला, डा० अनुपमा गर्ग, डा० अर्चना मिश्रा (प्राचार्या), डा० अलका आर्य, डा० भारती शर्मा, श्रीमती शैली सिंघल, डा० कामना जैन, डा० अर्चना चौहान, सुश्री अंजली प्रसाद

द्वितीय पंक्ति (बायें से दायें) – डा० शिखा शर्मा, कु० अनुभा, श्रीमती प्रीति, डा० पारुल चड्ढा, कु० साजिया, डा० अंजू शर्मा, कु० दीपा पंवार, श्रीमती मीनाक्षी कश्यप, डा० शालिनी वर्मा, श्रीमती पल्लवी सिंह, श्रीमती दिप्ती नागपाल, डा० सीमा राय, डा० ज्योतिका

द्वितीय पंक्ति (बायें से दायें) – श्रीमती नेहा शर्मा, कु० मेहनाज, कु० परवीन, कु० हिमांशी, कु० सीमा, कु० चन्दा

महाविद्यालय शिक्षणेत्तर परिवार

प्रथम पंक्ति (बायें से दायें) – श्री शिव मंगल, श्री अजय अविनाश, श्री निशान्त पंडित, श्री अनुज कुमार सिंघल, डा० अर्चना मिश्रा (प्राचार्या), श्रीमती प्रीति शर्मा, श्रीमती नीतू तायल, कु० प्रयंका, श्रीमती सुषमा कटारिया, सुश्री सुषमा

द्वितीय पंक्ति (बायें से दायें) – श्री सन्दीप भटनागर, श्री राजपाल सिंह, श्री रामराज शर्मा, श्री पंकज कुमार सिंघल, श्री तेलूराम, श्री विनोद कुमार कटारिया, श्रीमती शुभलेष, श्रीमती नीलम देवी, श्रीमती शर्मा देवी

द्वितीय पंक्ति (बायें से दायें) – श्री मुकेश कुमार, श्री राजेश कुमार, श्री गगन रस्तोगी, श्री रविन्द्र कुमार, श्री उमेश कुमार, श्री सूरज बिड़ला

पत्रिका समिति

(बायें से दायें) – कु० पलक त्यागी, डा० अस्माँ सिद्दिकी, डा० अलका आर्य, डा० अर्चना मिश्रा (प्राचार्या), डा० अनुपमा गर्ग, कु० आरती गुप्ता

अनुशासन समिति

प्रथम पंक्ति (बायें से दायें) – अलिशा, जोया नाज अंसारी, मेघा गुलाटी, वंशिका सैनी, हिमानी, लक्ष्मी, शीबा, शिवानी, जेबा, नेहा।
द्वितीय पंक्ति (बायें से दायें) – वंशिका, पलक त्यागी, ईशा खान, साक्षी, रेनू, मनीषा, दीपा, पायल,
द्वितीय पंक्ति (बायें से दायें) – डा० अर्चना चौहान, डा० कामना जैन, डा० अर्चना मिश्रा, डा० उमा रानी, श्रीमती पल्लवी सिंह

राष्ट्रीय सेवा योजना गतिविधियाँ

रैली में नुक्कड़ नाटक एवं नमक आंदोलन का नाट्य मंचन

'स्वच्छ भीतर स्वच्छ बाहर' शंखनाद

विवेकानन्द समिति पुरस्कार

एड्स जागरुकता – रेड रिबन क्लब

'प्लास्टिक भारत छोड़ो' रैली

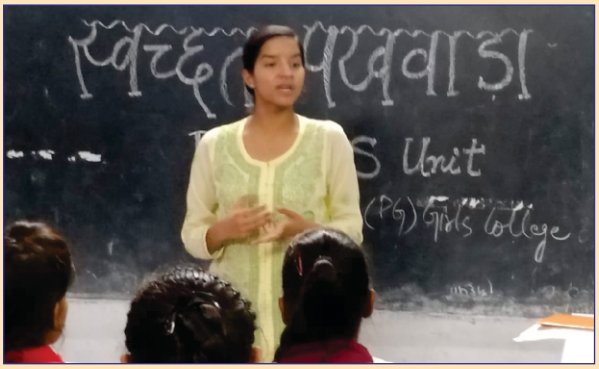

समर इन्टर्नशिप कार्यक्रम

बालिका दिवस

राष्ट्रीय सेवा योजना गतिविधियाँ

विशेष शिविर : अतिथि व्याख्यान

दण्ड चालन कार्यशाला

राष्ट्रीय समरसता दिवस

योगाभ्यास कार्यशाला

स्थापना दिवस समारोह

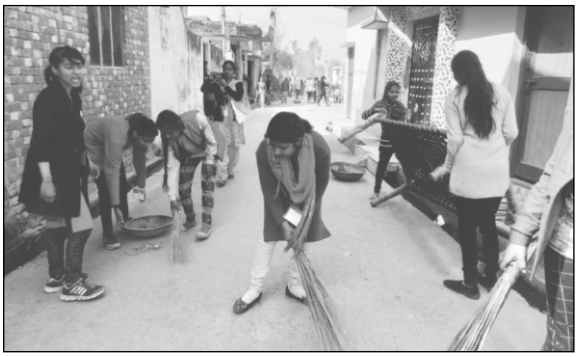

स्वच्छता पखवाड़ा : श्रम ही सेवा

दांडी यात्रा

विशेष शिविर समापन समारोह

समाचारों में राष्ट्रीय सेवा योजना

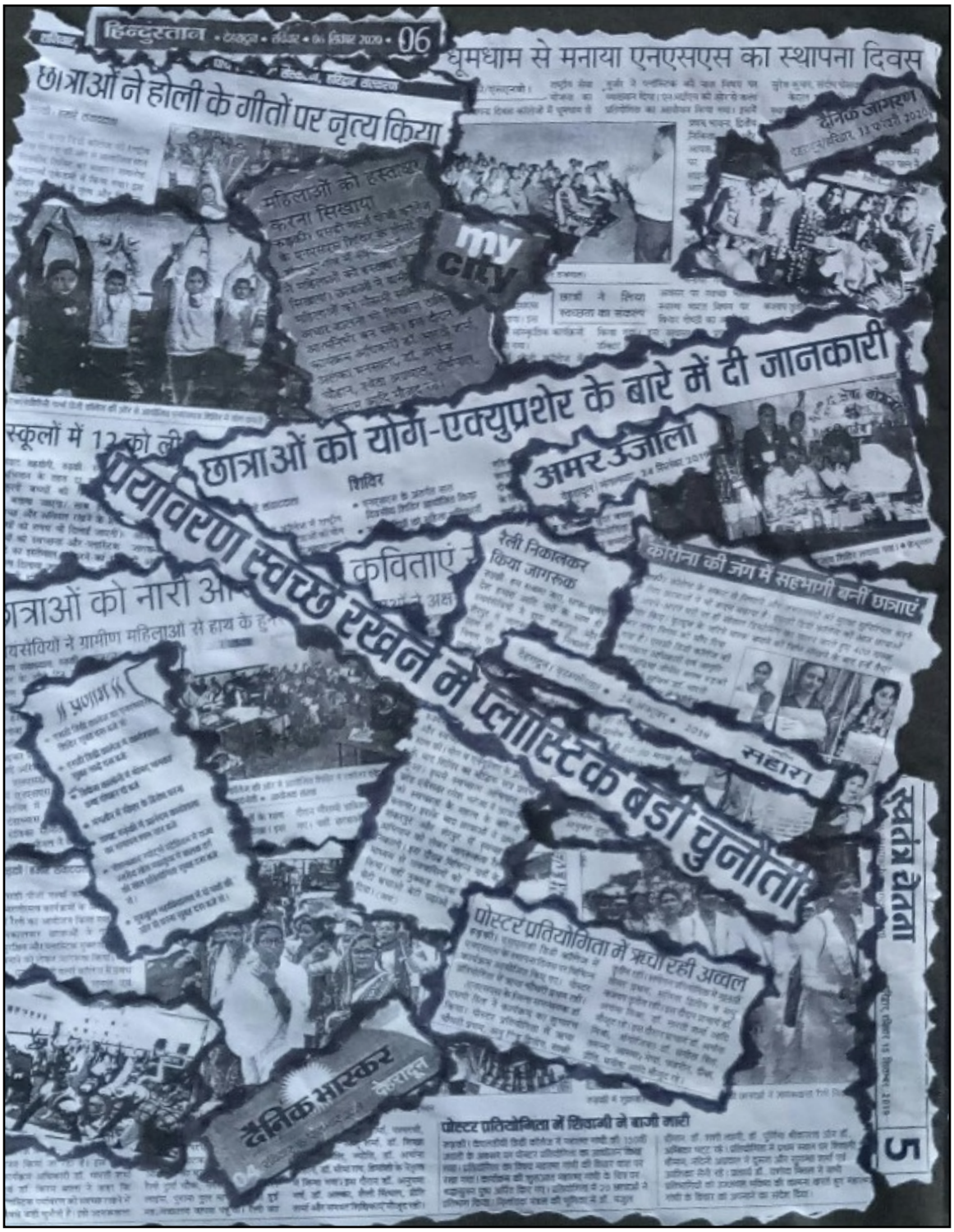

संयोजनः सुश्री सीमा रानी
स्त्रोतः रिपोर्ट एवं मीडिया कमेटी

समाचारों में महाविद्यालय

संयोजनः सुश्री सीमा रानी
स्त्रोतः रिपोर्ट एवं मीडिया कमेटी

समाचारों में महाविद्यालय

संयोजनः सुश्री सीमा रानी
स्त्रोतः रिपोर्ट एवं मीडिया कमेटी

हिंदी साहित्य में वर्णित पर्यावरण चेतना की वर्तमान में प्रांसगिकता

डॉ० अंजू शर्मा
प्रवक्ता, हिंदी विभाग, प्रबंध तंत्र

वर्तमान में कोरोना महामारी का विकराल रूप भारत ही नहीं वरन सभी देशों में दृष्टिगोचर हो रहा है जिसका प्रमुख कारण मानव द्वारा प्रकृति के साथ की गई अमानवीय क्रियाएं ही हैं। विकास तकनीकी, औद्योगीकरण व नगरीकरण के कारण मानव ने स्वार्थ वश वनों की अंधाधुंध कटाई की जिससे वन्यजीवों की बहुमूल्य प्रजातियां या तो समाप्त हो चुकी है या समाप्त होने की कगार पर है। कीटनाशकों के प्रयोग से धरती विषैली हो चुकी है, भूमिगत जल का स्तर गिर गया है, साथ ही विषैला भी हो चुका है यही कारण है कि वर्तमान में जल शुद्धिकरण के लिये विविध यंत्रो का भी प्रयोग अनिवार्य हो चुका है।

हिंदी साहित्य में प्रकृति एवं पर्यावरण का सदैव अहम् स्थान रहा है। प्रकृति के सौंदर्य वर्णन से लेकर पर्यावरणीय चिंताओं तक को वैदिक काल से साहित्य में शामिल किया जाता रहा है। वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण एक बहुत बड़ा मुद्दा है और आधुनिक साहित्य में इसकी चिंता झलकती है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के शब्दों में साहित्य समाज का दर्पण है अर्थात जो कुछ समाज में घटित होता है, उसका सीधा प्रभाव साहित्य पर पड़ता है। फिर भला साहित्य इससे अछूता कैसे रह सकता है कहानी, गीत, कविता सहित विभिन्न साहित्यिक विधाओं में पर्यावरण चेतना विविध रूपों में दृष्टिगोचर होती है।

कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास, जायसी आदि कवियों ने अपनी रचनाओं में प्रकृति का रहस्यात्मक वर्णन किया है। रामचरितमानस में तो तुलसी जी ने सीता जी को वृक्षारोपण करते हुए भी दिखाया है। तुलसीदास जी कहते हैं- **''तुलसी तरुवर विविध सुहाये।, कहुँ कहुँ सिय, कहुँ लखन लगाए।।**

यही नहीं मैथिलीशरण गुप्त जी ने भी प्रकृति की सुंदरता का वर्णन साकेत, यशोधरा, सिद्धराज आदि ग्रंथों में किया हैं। चंद्रमा की चांदनी और रात्रि का सुंदर वर्णन करते हुए वह कहते हैं कि-

''चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल ही है जल थल में, चांदनी बिछी हुई है अवनी और अंबर तल में।।''

छायावाद के प्रमुख स्तंभ प्रसाद, पंत, महादेवी, निराला जी की कविताओं में यत्र-तत्र हमें प्रकृति की भव्यता के दर्शन होते हैं। यही नहीं प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानंदन पंत जी तो प्रकृति की रम्यता से इतने मुक्त हो जाते हैं की प्रेयसी का प्रेम भी उन्हें तुच्छ प्रतीत होता है वह कहते हैं कि-

''छोड़ द्रुमों की मधु छाया, तोड़ प्रकृति से भी माया।
बाले तेरे बाल जाल में, कैसे उलझा दूं लोचन।।
भूल अभी से इस जग को।''

आधुनिक काल के कवियों की अगर बात की जाए तो उन्होंने प्रकृति के विदोहन के पश्चात होने वाली हानियों का चित्रण तक अपनी कविताओं में किया है। अपने स्वार्थ से वशीभूत मनुष्य ने नित नवीन वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा प्रकृति को नष्ट करने का कुत्सित प्रयास किया है। इसका एक उदाहरण कोरोना महामारी है जिसके कारण मानव स्वयं को घरों में बंद करने को मजबूर है। अज्ञेय जी के शब्दों में **''मानव का रचा हुआ सूरज मानव को भाप बन कर सोख गया।''** और अगर देखा जाए तो वास्तविकता भी यही है कि प्रकृति के प्रहार के सामने मनुष्य स्वयं को असहाय महसूस कर रहा है। कविवर रामधारी सिंह दिनकर जी के शब्दों में-

''बुद्धि के पवमान में उड़ता हुआ असहाय, जा रहा तू किस दिशा की ओर को निरूपाय
लक्ष्य क्या? उद्देश्य क्या? क्या अर्थ, यही नहीं ज्ञात, तो विज्ञान का श्रम व्यर्थ।।''

पर्यावरण में पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, समुद्र, नदिया, जलप्रपात, आकाश, तारे, चंद्रमा, सूर्य, मेघ, बिजली और बादल का सौंदर्य तथा प्रासंगिकता स्वाभाविक होती है, बिना उनके मानवीय जीवन अधूरा है। और प्रकृति मानव को चेता रही है कि आनंद से जीवन बिताना है तो पर्यावरणीय उपादानों से प्रेम का आचरण करना जरूरी है अन्यथा भविष्य में स्थिति और भी भयावह हो सकती है। किसी अज्ञात कवि ने क्या खूब कहा है कि-

''पर्यावरण संतुलित रखना, है कर्तव्य हमारा। हो ना प्रदूषित पवन, वारि, ध्वनि, बहे सुखों की धारा।।''

●●●

देशबन्दी एवं ऑनलाइन शिक्षण

मनीषा डाबर
बी.ए. IV सैमे.

आज हम सभी लॉकडाउन को सफल बनाने में लगे हुए है। कोरोना वायरस के संक्रमण को रोकने के लिये जारी लॉकडाऊन का असर शिक्षा पर भी पड़ा है इसे देखते हुए स्कूलों से लेकर उच्च शिक्षण संस्थाओं तक ने ऑनलाइन पढ़ाई की वैकल्पिक व्यवस्था की है। इसमें बच्चों को वाट्सएप, यू टयूब के साथ-साथ स्कूल, कॉलेज की वेबसाइट से जोडकर इटंरनेट के माध्यम से शिक्षा दी जा रही है क्योंकि छात्र छात्राएं अपनी पढ़ाई की तैयारी नहीं कर पा रहे थे, इसलिये ऑनलाइन ही एक ऐसा माध्यम है, जिसके जरिए बच्चे घर बैठे ही पढ़ाई कर सकते है, कई अध्यापक बच्चों को घर बैठे ही ऑनलाइन के जरिए शिक्षा देते है जिससे लॉकडाउन का पालन भी होता है और बच्चों के खाली समय का उपयोग भी होता है। ऑनलाइन शिक्षा इसलिये भी कॉफी उपयोगी है क्योंकि ऑनलाइन एजुकेशन में हम किसी भी वीडियों को बार-बार रिपीट करके समझ सकते है और यदि हम अपने शिक्षक के द्वारा लाइव शिक्षा प्राप्त कर रहे है तो उनकी रिकॉडिंग भी कर सकते है और अपनी शिक्षा को और भी बेहतर बना सकते है। ऑनलाइन शिक्षा इसलिये भी महत्वपूर्ण है क्योंकि आज ऑनलाइन के जरिए सिर्फ स्कूल, कॉलेज की शिक्षा नहीं बल्कि बिजनेस या अन्य तरह की शिक्षा भी दी जाती है जो काफी उपयोगी है, जो घर बैठे ही हमें देश दुनिया की जानकारी प्राप्त करने में मदद् करती है।

ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से हम सिर्फ देश की ही नहीं बल्कि विदेशों में दी जाने वाली शिक्षा भी हासिल कर सकते है। इसके माध्यम से हम किसी भी वक्त अपने अध्यापको से अपनी समस्या का समाधान ले सकते है। भारत देश के प्रधानमंत्री जी का अनुरोध है कि यदि हम सभी मिलकर लॉकडाउन के नियमों का पालन करते हुए इस घातक बीमारी से जीत हासिल कर लेते हैं। तो भी आनलाइन शिक्षण जारी रहना चाहिये।

●●●

- *राजस्थान और गुजरात सहित भारत के 16 राज्यों से लिये जल के नमूनों के आधार पर अमेरिका के ड्यूक विश्वविद्यालय के अध्ययन (एनवायरमेंटल साइंस एंड टेकनालॉजी लैटर्स में प्रकाशित) के अनुसार इन 16 राज्यों में भूजल में यूरेनियम की मात्र खतरनाक स्तर पर है। भूजल स्तर लगातार घटने और नाइट्रेट प्रदूषकों के कारण यूरेनियम की बढ़ती मात्रा संबंधित क्षेत्रों की जनसंख्या में किडनी के रोगों के लिये जिम्मेदार है।*

- संकलित

संस्कृत भाषा-वर्तमान, भविष्य एवं आपत्तिकाल में सनातन मूलाधार

डॉ० भारती शर्मा
सीनियर असि. प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग

अपने लेख की शुरुआत मैं एक प्रश्न से करना चाहूंगी कि यदि हम स्वयं से पूछे कि भारत ने दुनिया को क्या दिया तो उक्त शीर्षक के संदर्भ में उत्तर होगा-सबसे पहली भाषा व सबसे पहली लिपि भाषा के रूप में संस्कृत भाषा और लिपि के रूप में देवनागरी लिपि हमने विश्व को दी। दुनिया की समस्त विशिष्ट भाषाओं जैसे डच, फ्रेंच, रशियन, पुर्तगीज डेनिश स्पेनिश के वैज्ञानिक अपनी भाषाओं का आधार संस्कृत को स्वीकार करते है। विश्व की समस्त भाषाएँ संस्कृत भाषा की देन है जैसे जर्मन भाषा, संस्कृत भाषा की देन है। जर्मन उन देशों में से एक है जहां संस्कृत भाषा के अध्ययन और अध्यापन पर सबसे ज्यादा खर्चा किया जा रहा है। जर्मनी सरकार का संस्कृत के प्रति अनुराग इतना है कि उनकी बेस्ट एयर सर्विस का नाम ही लुप्तहंसा है; लुप्त का अर्थ है विलीन एवं हंसा का अर्थ है एक विशेष प्रकार का पक्षी जो प्राचीन काल में भारत में सबसे ज्यादा हुआ करता था किंतु आज लुप्तप्राय है। जर्मनी की एक यूनिवर्सिटी ही संस्कृत साहित्य को समर्पित है। वहाँ महर्षि चरक के नाम पर एक विभाग का नाम ही रख दिया गया है, चरकोलोजी अर्थात मनोचिकित्सा विभाग। जर्मनी वैज्ञानिकों से जब पूछा गया कि संस्कृत का शोध क्यों ? संस्कृत के लिए इतना खर्चा क्यों ? तो उनका उत्तर था,'क्योंकि संस्कृत सबसे पहली भाषा है और सबसे पुरातन ज्ञान संस्कृत में समाहित है, जो ज्ञान हमें सीखना है, जो हमारे देश को आगे बढ़ा सके हम उसी भाषा पर अपने शोध कर रहे हैं।' संस्कृत की दो तीन महत्वपूर्ण बातें जो हमें व हमारे आज के युवा को पता होनी चाहिये कि हम यह क्यों सीख रहे हैं हमें क्या फायदा होगा, हम किसी भी ज्ञान को आज नफ़े और नुकसान में तोलते हैं। अगर संस्कृत की महत्ता की बात करें तो कम्प्यूटर चलाने के लिए कुछ सिद्धांत तय किए जाते हैं उन्हें algorithms कहते हैं, जो एल्गोरिदम सबसे अच्छी बनी है। आज तक पूरी दूनिया में वह संस्कृत में बनी है। संस्कृत की प्रथम विशेषता है कि संस्कृत का व्याकरण एकदम पक्का है। महर्षि पाणिनि की अष्टाध्यायी से आज, 21वीं सदी तक उस में वर्णित व्याकरण में लेश मात्र का भी परिवर्तन नहीं हुआ। लगभग 56 ऐसी भाषाएँ हैं जिनके शब्द और धातु रूप संस्कृत के जैसे हैं। संस्कृत की दूसरी विशेषता है भारत की पहली विशिष्ट भाषा संस्कृत है, जिसके पास असीमित शब्द भंडार है। महर्षि पाणिनि से आज तक कुल 102 अरब, 78 करोड़, 50 लाख शब्दों का प्रयोग संस्कृत भाषा में हो चुका है 3 वर्ष की अनथक मेहनत से कोई भी व्यक्ति संस्कृत का विद्वान बन सकता है। संस्कृत भाषा की तीसरी विशेषता है कि सबसे कम शब्दों में कहने की क्षमता यदि दुनिया की किसी भाषा में है तो वह है संस्कृत। सूत्र रूप में कह देना इस भाषा की विशेषता हैं। संस्कृत की एक और विशेष बात कि देवनागरी में ही ताकत है कि वह सब भाषाओं को अपने में समाहित कर सकें यदि ऐसा कर लिया जाए तो देश में भाषा के नाम पर जो टकराव है वह भी खत्म हो जाएगा। यदि हम वर्तमान के आपत्ति काल की बात करें जैसे कोविड-19 के संकट से हम जूझ रहे हैं तो इस आपत्ति काल में भी संस्कृत भाषा में निहित मंत्रों के जाप समाज को दे सकते हैं। ओऽम सनातन संस्कृति की वैज्ञानिक व्याख्या करता है। गायत्री मंत्र, महामृत्युंजय मंत्र, स्वस्ति-गान समेत अनेक वैदिक मंत्रों के वातावरणशुद्धि, विषाणुरोधी और विभिन्न व्याधियों के उपचार में पड़ने वाले सकारात्मक प्रभावों पर अनेक वैज्ञानिक संस्थान शोध कर रहे हैं और इसके उत्साहवर्धक परिणाम भी सामने आ रहे हैं।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि संस्कृत भाषा सिर्फ संस्कारों एवं संस्कृति की वाहक ही नहीं वरन् विश्व में व्याप्त विविध दैहिक, दैविक व्याधियों से मुक्ति का मार्ग भी प्रशस्त कर सकती है। इसमें निहित आध्यात्मिकता एवं वैज्ञानिकता ही भारतवर्ष के विश्वगुरू होने का मूलाधार था।

•••

गांधी जी और आज का समय

मनीषा डाबर
बी.ए. VI सैम

प्रतिदिन जब गांधीवाद की हत्या हो रही है, तब गांधी जी की प्रासंगिकता का प्रश्न सामने आता है। आज सम्पूर्ण विश्व में और भारत में विशेषत: अशान्ति एवं मूल्यहीनता व्याप्त है। इस विकट स्थिति में गांधी जी के विचारों का टिमटिमाता दीपक अनवरत प्रकाश दे रहा है। आज का समय समृद्धि और गरीबी, स्वतंत्रता और शोषण, सामाजिक सम्बन्ध तथा अलगाव एवं अध्यात्म के विरोधाभास में फंसा है। जरूरत इस बात की है कि हम गांधी जी के विचारों का पुनर्मूल्यांकन करें और समसामयिक समाज में उनकी प्रासंगिकता पर सार्थक विचार-विमर्श करें। गांधी जी कोई भविष्यवक्ता नहीं थे, लेकिन ऐसा अहसास हो रहा है कि शताब्दियों पूर्व गांधी जी ने जिन औद्योगिक एवं तकनीकि समाज से उत्पन्न समस्याओं की ओर संकेत किया था, वे आज मौजूद है। मानव एक ओर हिंसा और दूसरी और अलगाव के बीच छटपटा रहा है। ऐसी विकट परिस्थिति में गांधी जी ने मूल्यों की स्थापना की पहल की। गांधी जी ने मानव को उसके नैतिक संदर्भ में देखने की कोशिश की और तकनीकी युग में उत्पन्न त्रासदी की ओर संकेत किया।

खादी का प्रयोग- गाँधी जी ने समाज के लोगों को खादी के कपड़े एवं वस्तुओं को अपनाने पर बल दिया तथा विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने के लिए कहा। गांधी जी कहते है कि हम अपने जीवन की सभी जरूरतों को हिन्दुस्तान की बनी चीजों से, और उनमें भी हमारे गांव में रहने वाली आम जनता की मेहनत और अक्ल से बनी चीजों के जरिए पूरा करेंगे। एक समय था जब खादी को साधारण माना जाता था और फैशन के नाम पर खादी का प्रयोग नहीं किया जाता था। लेकिन आधुनिक समय में फैशन के साथ ही खादी की मांग भी दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। खादी को आज हर उम्र में व्यक्ति पसन्द कर रहे है, फिर चाहे वह कॉलेज जाने वाले स्टूडेंट हो या ऑफिस जाने वाले महिला-पुरुष। वर्तमान सरकार भी खादी में प्रचार-प्रसार के लिए काम कर रही है।

स्वच्छता अभियान- राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का मानना था कि साफ-सफाई, ईश्वर भक्ति के बराबर है और इसलिये उन्होंने लोगो को स्वच्छता बनाए रखने संबंधी शिक्षा देकर देश को एक उत्कृष्ट संदेश दिया था। उन्होंने 'स्वच्छ भारत' का सपना देखा था जिसके लिये वे चाहते थे कि भारत के सभी नागरिक एक साथ मिलकर देश को स्वच्छ बनाने के लिए कार्य करें। महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के स्वप्न को पूरा करने के लिये 2 अक्टूबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान शुरू किया और इसके सफल क्रियान्वन हेतु भारत के सभी नागरिकों से इस अभियान से जुडने की अपील की। इस अभियान का उद्देश्य पांच वर्ष में स्वच्छ भारत का लक्ष्य प्राप्त करना था ताकि बापू की 150 वी जयंती को इस लक्ष्य की प्राप्ति के रूप में मनाया जा सके।

अहिंसा- महात्मा गांधी कहते है कि एक मात्र वस्तु जो हमें पशु से भिन्न करती है वह है अहिंसा। व्यक्ति हिंसक है तो फिर वह पशुवत् है। मानव होने या बनने के लिए अहिंसा का भाव होना आवश्यक है। नि:शस्त्र अहिंसा की शक्ति किसी भी परिस्थिति में सशस्त्र शक्ति से सर्वश्रेष्ठ होगी। गांधी जी कहते है कि किसी को शारीरिक या मानसिक दुख न पहुँचाना अहिंसा है। मन,वचन और कर्म से किसी कि हिंसा न करना अहिंसा कहा जाता है।

धर्म- गांधी जी के अनुसार कोई ऐसा धर्म नहीं जो मानवीय क्रियाओं से अलग हों। उसका प्रभाव प्रार्थना, राजनैतिक, राजकीय और आध्यात्मिक सभी कार्यो मे देखने को मिलता है। गांधी जी कहते है जिन नियमों एवं सिद्धांतो से सदाचार का विकास हो, सात्विक प्रवृत्तियां जागृत हो, मोह, लोभ, काम, क्रोध इत्यादि का विनाश हो, उन्हें वे धर्म मानते है।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2007 से गांधी जयंती को विश्व अहिंसा दिवस के रूप में मनाए जाने की घोषणा की है। जब गरीबी, भुखमरी और कुपोषण लोगो को लील रही है, तो गांधी के विचार प्रासंगिक हो जाते है। विश्व महसूस करने लगा है कि गांधी के बताए रास्ते पर चलकर ही विश्व को नैराश्य, द्वेष और प्रतिहिंसा से बचाया जा सकता है।

●●●

*विस्तार प्रकोष्ठ द्वारा छात्राओं द्वारा आयोजित विचार प्रस्तुति **'दुर्दिन के समान और कोई शिक्षा नहीं'** के संपादित अंश*

हर चुनौती है अवसर

आरती
बी.ए. VI सैम

कोरोना वैश्विक महामारी अन्य देशो की भाँति भारत में भी तेजी से फैल गयी। महामारी की दवाई के अभाव में देश हित के लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश बन्दी का ऐलान किया। सुनने में थोडा अजीब था कि देशबन्दी देश हित के लिए है। लेकिन देश को पूर्ण रूप से बन्द भी नहीं कर सकते थे। इस कठिन दौर में प्रधानमंत्री जी द्वारा चलाया गया कार्यक्रम डिजिटल इंडिया बहुत लाभकारी साबित हुआ।

शिक्षा देश की उन्नति के लिए अति आवश्यक है अत: शिक्षा भी बिना रूके घर पर ही पूर्ण करायी जाने लगी। इसी दौरान मेरी शिक्षिका ने मुझे फोन करके ऑन लाईन शिक्षा के बारे में बताते हुए सभी छात्राओं को Whatsapp Group में जुडने का प्रयास करने को कहा। क्योंकि मैं सभी छात्राओं से परिचित नहीं थी, इसलिए मुझे यह कार्य शुरुआत में कठिन लगा। तब मुझे मेरे पिताजी की कही एक बात याद आई- 'कोई काम नही है मुश्किल, जब किया इरादा पक्का।' इस वाक्य को सोचते हुए शिक्षा के इस नये अनुभव की शुरुआत की। मैंने मेरी मित्र की सहायता से सभी छात्राओं से सम्पर्क बनाने का प्रयास किया, कुछ हद तक कामयाब हुए। हम पूरी तरह से सफल नहीं हुए थे, यहाँ पर भी एक चुनौती का सामना करना पड़ा क्योंकि अनेक छात्राएँ स्मार्ट फोन के अभाव में शिक्षा से वंचित थी। इस स्थान पर दोस्ती काम आई। ऐसी छात्राओं की मित्र ने पढ़ाई से सम्बन्धित सभी सूचनाएँ उनके घर पर जाकर दी। मेरे लिए सबसे बड़ी चुनौती तब आयी जब Class Assignment बनाके PDF File में भेजना था। क्योकि उस समय मुझे भी PDF बनाना नहीं आता था। मैंने अपने भाई की सहायता से सीख लिया। फिर मुझे पता चला की 95 प्रतिशत छात्राओं को PDF बनाना नहीं आता है। तब मैंने अपनी कई सहपाठियों की PDF बनाने में सहायता की।

लॉकडाउन के दौरान काम करने का तरीका, पढ़ाई करने का तरीका सब कुछ बदल गया। चुनौती बहुत आई लेकिन सबका सामना किया, हार नहीं मानी। नये अनुभव प्राप्त हुए। विशेष रूप से मोबाइल और इंटरनेट का सही उपयोग करना आदि। कोरोना ने हमें एक चुनौती दी और हमारी शिक्षिकाओं ने हमे चुनौती से लड़ना और उसे कुछ नया सीखने के अवसर में बदलना सिखाया।

●●●

देशबन्दी के सकारात्मक पहलू को देखा

मनीषा डाबर
बी.ए. 4 सैम

कोरोना महामारी के कारण आज देश ही नहीं लगभग पूरी दुनिया में लॉकडाउन का पालन किया जा रहा है, ऐसे में सभी स्कूल, कॉलेज, संस्थान और सभी एजुकेशनल एक्टिविटीज बंद हो गई है, ऐसे में जरूरी था कि हम अपना ध्यान रखने के साथ-साथ अपनी पढ़ाई को भी जारी रखें। लॉकडाउन के समय जब सब कुछ थम गया है तो हम सब के पास यह अच्छा मौका है अपनी स्किल्स को निखारने का।

लॉकडाउन के दौरान मैंने इंग्लिश कम्यूनिकेशन स्किल्स को सीखा। जिससे मुझे अब इंग्लिश बोलने में आसानी होने लगी तथा मुझे काफी नये शब्दों के बारे में भी पता लगा और मेरा आत्मविश्वास भी बढ़ा। इसे सीखने में इंटरनेट ने मेरी बखूबी मदद की। अंग्रेजी की समझ होना और धाराप्रवाह बोलना हम सब का सपना है, इसके लिए मैंने इस समय का सदुपयोग किया। हालाँकि यह कोई खुशी का मौका नहीं है फिर भी दिनभर घर में बैठकर चिंता करने से अच्छा था कि मैं इसके सकारात्मक पहलू को देखूँ और यह मैंने किया।

●●●

लॉकडाउन : खुद से खुद तक का सफर

शिवांशी त्यागी
बी.एससी. VI सैमे.

कोरोना काल के दौरान जो नया शब्द सुनने को मिला वह था लॉकडाउन। कभी ऐसा सोचा भी नहीं था कि सारी दुनिया काम-काज से दूर घर में यूँ ही कैद रहेगी। इस लॉकडाउन ने बीते कुछ महीनो ही में बड़ा सताया तो है पर बचाया भी है। सभी की तरह लॉकडाउन के शुरुआती दिनों में मुझे भी लगा जैसे रोज के थकाने वाली दिनचर्या से भरपूर आराम करने के लिए छुटटी-सी मिल गई है, पर कुछ दिनों बाद बोरियत का दौर शुरु हुआ और याद आने लगा कॉलेज में बिताया हर एक लम्हा, और रोजमर्रा में बाहर निकलकर किए जाने वाले काम और धीरे-धीरे घर कैदखाने के भाँति लगने लगा। ऐसा लगा मानों-

उदासी का है ये खंजर, जिसकी वजह से कैद लगने लगा हर एक मंजर।
शहरों का रंग कहीं फीका पड़ गया, खुशियों में भी मानों जहर घुल गया।।

धीरे-धीरे घर की चहार दिवारी के बीच घुटन सी होने लगी और लगा जैसे जिन्दगी बस यही रूक गई है। सबकी तरह मैं भी सोचने लगी-कौन-सी घड़ी होगी जब दुनिया फिर से खड़ी होगी, पहले की तरह हर तरफ चहल-पहल होगी, और जिन्दगी की गाड़ी फिर से अपनी पटरी पर दौडेगी फिर दिल में सवाल आया कि क्या सच में ऐसा है है कि जिन्दगी रूक गई है? कहते है हर मुसीबत अपना हल भी साथ लेकर आती हैं। मैंने भी सोच लिया कि जो ये समय अवसर के रूप में मिला है उसे खुद को निखारने में लगाऊँगी। इस सोच के साथ ही मानों कितनी ही राहें खुल गई। अपनी मनपसंद गतिविधि डांस से जुड़ने के साथ-साथ लॉकडाउन में इंटरनेट की मदद से मैंने ऑन लाइन वीडियो के माध्यम से ज्ञान को बढ़ाने में समय दिया। मैंने अपनी Communication Skills को विकसित किया। कुछ नया सीखकर मैंने अपने में बहुत बदलाव महसूस किए और आंतरिक संतोष भी मिला जो शायद कभी अपनी व्यस्त दिनचर्या में मैं अनुभव नहीं कर पाती। इसी लॉकडाउन में मैंने अपनी Cooking Skills भी निखारी। इसी के साथ कुछ बच्चों को कोरोना बचाव का पालन करते हुए उनको पढ़ाया भी और डांस की क्लासेज भी दी।

उस दिन से महसूस हुआ कि हम रोज की भाग दौड़ भरी जिंदगी में अक्सर खुद को ही कहीं खो देते है। मैंने इस लॉकडाउन में खुद को समय दिया, खुद के साथ समय बिताया, खुद को पहचाना और जाना हम खुद के लिए एवं परिवार के लिये कितने महत्वपूर्ण है और यह भी कि परिवार मेरे लिये कितना महत्वपूर्ण है। इस लॉकडाउन ने यह भी एहसास दिलाया कि हम शरीर से नहीं मन से कैद थे। इसी तरह मैंने अपने लॉकडाउन समय को व्यतीत किया और नकारात्मकता से ऊपर उठकर सकारात्मकता का विकास कर खुद से खुद तक का सफर पूरा किया।

•••

अपनी प्रतिभा को पहचाना और निखारा

शिवानी गुप्ता
बी.एस.सी IV सैमे.

मुसीबत के इस दौर में क्या कभी किसी ने सोचा थ कि दुनिया कभी ऐसे थम जायेगी। इस लॉकडाउन ने लोगों को काफी मुसीबतें भी दी, और उन्हें जीने का नया तरीका भी बताया। मैं मानती हूँ इस लॉकडाउन की वजह से लोगों को बहुत परेशानी उठानी पड़ी, लेकिन दूसरी तरफ लोगों को अपने आप को समझने का, खुद को वक्त देने और निखारने का भी अवसर मिला।

इस लॉकडाउन के समय में मैंने अपनी प्रतिभा को पहचाना तथा इसके जरिए अपने अंदर की छिपी कला प्रतिभा को निखारने का प्रयत्न किया। जैसे कि पहले मैं इस भाग-दौड भरी जिन्दगी के कारण अपनी कला को पहचानना और पर्याप्त समय देना बहुत मुश्किल था लेकिन इस कठिन समय में हमें बहुत कुछ सीखने को व जानने को मिला। मैं पहले भी कभी-कभी पेन्टिग कर लिया करती थी, लेकिन इतना अच्छा नहीं कर पाती थी, लाकडाउन में मैंने नई नई पेन्टिंगस बनाई तो मैं ही नहीं परन्तु परिवार के सब लोग बहुत खुश हुये। पेंटिग करना मेरा शौक है, मैं हमेशा अपनी कल्पनाओं और भावनाओं को कला के रूप में अभिव्यक्त करना चाहती हूँ। अत: मैंने अपनी इस प्रतिभा को पहचाना और कोविड 19 महामारी की आपदा को अवसर में बदलकर अपनी प्रतिभा को निखारा।

•••

लॉकडाउन में पौधारोपण

तेजस्वी धीमान
बी.एससी. IV सैमे.

कोरोना महामारी के दौरान जब लोग लॉकडाउन की वजह से अपने अपने घरों में कैद थे उस वक्त मैंने काफी ऐसे कार्य किये जो मै हमेशा से ही करना चाहती थी। कॉलेज और टयूशन के कारण पूरे दिन कुछ नया करने का समय ही नहीं मिल पाता था। लेकिन लॉकडाउन के दौरान मैं पढ़ाई के अलावा वो सब कार्य कर सकी जिन्हें मैं हमेशा से करना चाहती थी। ऐसा ही एक मेरा पंसदीदा कार्य था - पौधारोपण।

मेरे घर के बराबर में ही नर्सरी है अत: मुझे पौधे मिलने में भी कोई दिक्कत नहीं हुई। मैं विज्ञान वर्ग की छात्रा हूँ इसलिये मुझे कुछ ऐसे पौधों के बार में पता हैं जिनमें बहुत से औषधीय गुण होते है। मैंने ऐसे पौधों का चुनाव किया और उन्हें अपने घर व आस-पास के क्षेत्रों में लगाकर उनकी देखभाल की। मेरे द्वारा लगाये गये पौधों में कुछ अत्यंत उपयोगी हैं जैसे - एरिका पाम (लिविंग रूम प्लाट) ये हवा से फॉर्मलडिहाइड, Co_2 जैसी टॉक्सिन्स को सोख कर हवा को साफ कर देता है। Mother-in Law- tongue plant, Snake or bed room plant- ये रात में भी Co_2 को O_2 में बदलता है और वातावरण को शुद्ध रखने में सहायक है। इसके साथ ही मैंने मनीप्लांट का भी चुनाव किया, जो अत्यंत सुंदर होने के साथ लगाने में भी आसान है। मुझे पहले ऐसा लगता था कि मनी प्लांट को घर में रखने से पैसा आता है लेकिन चाहे पैसा आये या ना आये लेकिन मनी प्लांट हवा से केमिकल टॉक्सिन्स साफ कर स्वास्थ्य का उपहार तो देता ही है इनके अतिरिक्त कुछ मौसमी फूलदार पौधे भी मैंने लगाये जिन्होने वातावरण को सुंदर व खुशनुमा बनाया। इन सभी पौधों के बारे में मात्र मैंने किताबों में पढ़ा था, परंतु इसे मूर्त रूप देने के लिये कोरोना काल एक अच्छा अवसर रहा जिससे मैं अपने घर तथा आसपास के वातावरण को प्रदूषण मुक्त बनाने के साथ-साथ प्रकृति के सौन्दर्य के अवलोकन का भी आनंद प्राप्त कर सकी।

•••

कोरोना काल की राही

काजल त्यागी
बी.ए. IV सैमे.

मंजिल पर पहुँचने से पहले का रास्ता थकाने और हिम्मत तोड़ने वाला होता है, ऐसे में कोई भी हार कर बैठ सकता है। लेकिन जो अपने जज्बे को बनाए रखते है, वे ही कामयाब होते है।

इस कोरोना काल में मैं इसी राह से गुजरी हूँ, पर शुरुआती परेशानियौं के बाद मैंने अपने इस सफर को सार्थकता देने का तरीका ढूँढ लिया। मैंने 400 मास्क बनाए जिसमे से कुछ मास्क आँगनवाडी केन्द्र पर आशाओं, राशन की दुकान आदि जगहों पर जरुरत मंदो को बाँटे। मैने कक्षा 1 से कक्षा 5 तक के उन बच्चों को पढ़ाया जिनके

पास ऑनलाइन शिक्षण की कोई व्यवस्था नहीं थी साथ ही उन्हें सामाजिक दूरी बनाने एवं मास्क पहनने के लिये भी प्रेरित किया। मैं बहुत खुश हूँ कि एक कठिन समय में मैं समाज में जागरूकता पैदा कर रही हूँ। मैंने अपने आस पड़ोस में आरोग्य सेतु ऐप डाउनलोड करवाने में मदद की और लोगो को इसकी उपयोगिता के बारे में बताया। मैंने अपने गाँव में अपने बड़े बुजुर्गो का ध्यान रखा और ऐसे लोग जो बाहर नही निकल पा रहे उनको सामान लाकर दिया। मैंने अपने गाँव के सरकारी स्कूल में कोरोना से संबंधित जागरूकता फैलाने के लिए पोस्टर भी बनाये। खाली समय में घर की साफ सफाई के साथ पशुओं को चारा डाला और पक्षियों को दाना पानी पिलाया। इस प्रकार छोटे-छोटे कार्य कर कोरोना काल की राही बनकर मैं बहुत खुश हूँ।

●●●

Lock down taught me...

Priya
BSc 5th Sem

'Yoga is the journey of the self, through the self, to the self'

The Bhagavad Geeta

We all are aware of the current circumstances due to which we have to stay in our homes for a long time and by virtue of which we have got plenty of time to enlighten ourselves. Being a student I have not only flourished my skills but also enhanced my learning ability throughout this lockdown phase. So, it will not be wrong to say that this pandemic situation has provided us an opportunity to refine and improve ourselves.

This lockdown period has taught me that health is the only and real wealth. One of the best practices to attain physical, mental and spiritual health is Yoga and meditation and I discovered many aspects of yoga beyond the poses that enhanced my quality of life. I also used this period to cultivate a reading habit. I felt that, unfailingly it is always enjoyable to read a good book. This is a perfect way to enhance our knowledge. I was really inspired by the views of Swami Vivekananda to lead an ideal life expressed in his book entitled 'Vivekannanda: His Call To The Nation'

Swami ji quoted " The meditation state is the highest state of existence." Meditation and yoga make me feel relaxed and keep me away from anxiety and negativity. Being a girl I always remain concerned for my well being. Over the past few decades, we have witnessed a confluence of Yoga and Meditation for addressing women's health issues. It activates the energy & provides me the strength to deal with psychological changes in me. In this way I utilised this period at my best by doing yoga and by reading the books of great writers for my physical and mental development.

●●●

Learning Technology and multimedia

Ms. Leena
B.A. IV Sem

When the lockdown started, I was ecstatic. I was happy, and confident thinking that I would be ok.... after all how hard staying at home possibly be! After a while, the reality of the situation started to sink in. However. I found ways to deal with the pressure. I realised that lockdown gave me more time to do the things. I loved, hobbies that had been previously put aside due to college work. I started doing my hobby work like baking, drawing and writing again and felt relesed for the first time. I had forgotten how good it is to be creative. I started spending more time with my family. I hadn't realised how much I had missed them.

Almost six months have been passed and I feel so much better. I understand how difficult this must be, but it is important to remember that none of us is alone. No matter how scared, or trapped or alone you feel, things can only get better. Take time to revisit the things you love and remember that all of this will eventually pass. All we can do right now is stay at home, look after ourselves and our loved ones, and look forword to a better future. The best thing is that through online lectures, assingment, conferences, workshops and class activities, now I'm able to understand and use technology and multimedia much better than before. For me lockdown has been a very fascinating and fruitful experience.

●●●

Moments of self satisfaction

Ms. Aakansha Choudhary
B.Sc. IV Sem

Epidemic of corona occurred in our country in the mid semester of my BSc 4th sem. We have to follow many precautions for our safety. It was suggested to apply mask. After this suggestion, when I went to the shop to get the mask, the shopkeeper gave me 1 mask valueing Rs. 5 for 30 Rs. due to heavy demand. At that time I came home after buying mask.

After coming home, it came in my mind that there are many people in our country who can't buy masks. That is why I at once thought to give some help to these needy persons. I thought to stitch masks at home. After that I made masks with the help of my other classmates, brought them to those people who can't afford. When I saw those people wearing my hand made masks it was really a moment of joy and self satisfaction to me that I can do something for the society during these difficult times.

●●●

If Winter Comes Can Spring Be Far Behind

Ramsha
BSc. II Sem

"Every cloud has a silver lining" that is how a saying goes and is an absolute fit for the current situation 'The covid-19 pandemic'. None ever thought that such a frightening moment will enter in their lives when they have to face a complete lockdown on the account of a pandemic. It was a sudden blow, every thing was shut down in over night.

At first, It was just empty days staying at house but gradually everyone found their own way of adjustment. It is true that an adverse situation has its own advantages, it brings out man's capacity to endure. Even so this situation brought us to nostalgia of childhood by bringing over the games we used to play. This was the golden time that enabled us to have a good level of understanding and compatibility with the family under this dismay situation. Gradually, everything from the work to the studies shifted to home and then to online. But, I can say it opened my eyes to appreciate the small things we took for granted like group activities and the traditional classroom teaching, but the most feared issue was overflowing assignment and dead lines for submission: Even to see the other face of coin, it was highly taxing on the part of the education authorities as well as students.

My experience during this period was full of ups and downs but it made me realize that even if the clouds are dark, flash of lightening is sure, if winters comes can spring be far behind. Misfortune makes the return of fortune so pleasant, these are the sweet fruits of Adversity.

●●●

From a student to a chef

Deeksha Dabar
B.A. IV Sem

Every thing seems so rosy and cosy in life but when one falls into adversity one has to gird up his loins and face the harsh realities, stand up to them and to fight them through. There are some who would just surrender to sorrows and lose all courage. These are chicken hearted persons who crumble and crash with the little pressure. They hardly deserve to be a man. Those who stand up to face the adverse situation are men of faith and fortitude.

Life is a story of ups and downs during this period I also got disapponited at many times such as how will my studies continue? What will I do in this free time? Then suddenly one day I tried my hands in cooking. My mother was my trainer and I began to learn new things day by day. My second trainer was you tube which opened new horizons of cooking for me. That is how I used this period of adversity. Adversity also puts to test for so many things and using the opportunity given by adverse times of a global pandemic, I became a good chef of my house.

●●●

United We Stand, Divided We Fall.

Ms. Ishika Verma
BSc. II Sem

Nobody ever thought, that once they would get trapped in their own houses sarcastically, according to their own will. No, one was prepared. No one ever dreamt of something so unbelievable journey of ups & downs, highs & lows But sooner or later every one was prepared for trying new things, enjoying every moment of their life, but no one thought, that they would be doing it, being trapped in their houses. Rising like the peak of the mountain Ranges, whole world, not even a single place is left where this virus has not showered leaving the mankind, hopeless, screwed & dewastated! These were the words everyone was murmuring.

Though in the beginning, this lockdown was some what frustrating for me but the amount of things, the amount of patience, the amount of courage this lockdown has given me cannot be described in words. Staying at our houses, keeping surroundings clean, not only save us but also save our Mother Earth.

Many have realised their passion, many have realised their dreams. Many who were not able to spend time with their loved ones, got to do it. We are picking up issues that were just somewhere ignored by us. Though the virus has been awfully harmful but the lockdown has just united my nation. We have fought battles on borders with other countries but this virus has taught us that not only the people of India should unite themselves but the people all around the globe should fight against it, then only we can win over this situation.

●●●

Lockdown: A blessing in disguise

Vanshika Sharma
B.A. VI Sem

God always have a better plan for us, though the process might be hard and painful.

Well, this abrupt lockdown of the entire world has brought a lot of unexpected dismay in our lives (especially migrant's workers and under privileged section of the society) yet. isn't that's what life is, it happen to us when we are busy having other plans. We are continuously worried and grumbling about negative things that we are facing due to this pandemic loss of lives due to covid-19 loss of lives job losses, salary cuts, internships cancelled, business at half, economy is at a standstill, disruption in supply chain.

Most important this lockdown has provided us a huge lesson - no work is small everyone has it's own importance starting from a rag picture to a top notch celebrity from a paramedical staff to a reputed doctor, from a sample cap to topmost administrative personnels. Even the milk man, the fruit and vegetable seller, the weeper, the grocery supplier, sanitasation worker, make us feel that they are very important persons as we can't survive without their services. We neither know how long will this pandemic last nor how long will this lockdown continue but we can hope that the period will be over really soon.

•••

Covid 19 Lockdown

Dr. Alka Arya
Professor
Drawing & Paintaing Dept.

Across the sky...
Sun is shining with sparkling eyes and saying -
My dear, Although you are destined
in "self Quarantine"
Yet-You will be quite fine.
Whether the lonely streets
& empty towns.....,
Everything is quiescent in this 'Lock-down'.
No matter you are away from friends-
Crazy parties, meetings & restaurants.
But-
Don't forget to follow the rule of
"social distancing"...
And keep your surroundings "sanitizing".
Look....

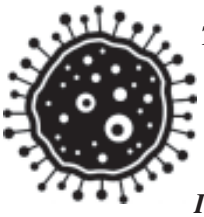

An opportunity is knocking at your door-
To make you inspire & explore.
Now...its a time to unlock your happiness-
With the vibrant waves of imagination.
No doubt.....you have the potential.
To create a world full of innovation.
For the sake of this proud nation,
It's an humble request to you...
Please don't lose your patience.
And firm determination.
I hope the positive energy will charge
Everyone's lifeline.....,
And..
All the negativity will soon be go with COVID 19.

कोरोना युद्ध के नायकों को नमन

काजल त्यागी
बी.ए. VI सैमे.

''महाभारत के युद्ध के समय भगवान कृष्ण महारथी थे, सारथी थे। आज 130 करोड महारथियों के बलबूतें हमें कोरोना के खिलाफ इस लडाई को जीतना है''। निश्चित तौर पर कोरोना के खिलाफ महाभारत की लड़ाई में जनता के योगदान को कोई नकार नहीं सकता लेकिन लड़ाई के महारथी और सारथी का जिक्र करना भी जरूरी है। जंग जीतने की जिम्मेदारी योद्धाओं के साथ नेतृत्व पर भी होती है।

भारत में डॉक्टरों की कमी है, ये बात किसी से छिपी नहीं है 1000 लोगो पर एक डॉक्टर को विश्व स्वास्थ्य संगठन मानता है, लेकिन अफसोस भारत में इतने डॉक्टर भी नहीं। मास्क की कमी, पी.पी.ई किट की कमी, बेड की कमी, वेंटिलेटर की कमी। लेकिन डाक्टर्स ने प्रत्येक कमी को दरकिनार करते हुए मरीजों का इलाज किया। कितने दिनों तक डाक्टर्स अपने घर-परिवार से दूर रहे। डॉक्टर का केवल यह कहना कि चिंता की कोई बात नहीं, रोगी के अन्दर एक नई जान डाल देता है। लेकिन इन डाक्टरों के साथ पैरामेडिकल स्टॉफ जैसे नर्से, लैब-टैक्नीशियन आदि के काम को सराहा जा रहा है। लॉकडाडन में लोग घरों में बैठें है, लेकिन वो आज भी पहले के मुकाबले ज्यादा घण्टे काम कर रहे हैं सभी डाक्टरों की छुट्टियाँ रद् कर दी गई है सभी डॉक्टरों और नर्सो ने मरीजों को परिवार मान लिया है। हर रोज जिसकी वजह से अपनो की याद करना मुकम्मल हो पाया है। आज उन्हें सलाम करने का दिन आया है। भारत में कोरोना वायरस की लड़ाई में पुलिस का भी एक नया चेहरा सामने आया है। देशबंदी का अनुपालन करना या फिर डाक्टर्स और पेरा मेडिकल स्टाफ का सम्मान बनाना। अपना घर छोड़ कर दिन रात ड्यूटी देते उन कोरोना युद्ध के नायकों को बार-बार नमन।

आइये! अभिनंदन करें....

डा० अर्चना मिश्रा, प्राचार्या

आइये अभिनन्दन करें, करें अपनी धरती का,
करें वंदन सर्वसुख, सर्वसमृद्धि दायक प्रकृति का।

हम प्रकृति से है, प्रकृति हमसे नहीं,
हम नहीं थे तब भी थी प्रकृति,
हम नहीं रहेगें, तो भी रहेगी प्रकृति,
अपने अनेक हाथों से मनुज को सँभालती
संपूर्ण करती, जीवन को देती नूतन अभिव्यक्ति।
आइये! अभिनंदन करें अपनी धरती का
करे वंदन दुनिया को खूबसूरत बनाती प्रकृति का।

धरती है तभी प्रकृति है, प्रकृति है तभी है संस्कृति,
आइये पुनः संस्कारित करें स्वयं को,
प्रदूषित नहीं संरक्षित करें प्रकृति को,
अपने अस्तित्व को करें सार्थक-
आभार कर मानवता को आश्रय देती प्रकृति का।

आइये अभिनंदन करें अपनी धरती का,
सृष्टि को जीवन देती शाश्वत-सुंदर प्रकृति का।

हंसिका

डा० भारती शर्मा
सीनियर असिस्टेंट प्रोफेसर, अंग्रेजी

लीजिए हंसिका आ गई आपको हंसाने-गुदगुदाने
लॉक डाउन को 'सुनो जी' को बड़ा सहारा
सुनी कहां है आप?
सुनते ही,'सुनो जी' के कान खड़े हो गए
धड़कने रूह की थम सी गई
न जाने कौन सी गुत्थी पड़ेगी सुलझानी
कोई खता तो नहीं हो गई
जो जब श्रीमती जी पड़ेगी मनानी
आपने कब से कोई तोहफा दिया नहीं!
मैं तो रसोई के 36 व्यंजनों में ही फंसी रहती हूँ
और तुम कभी आते नहीं मेरा हाथ बटाने?
हमाम खाने का नल कब से टूटा है?
जैसे मेरे मायके से मेरा साथ छूटा है!
बबले का पाजामा फट गया, जाएगा दर्जी को
गेंहू की बोरी तले लग गई, ले आओ
नहीं तो जनता कर्फ्यू में सलाम ठोकोगे वर्दी को
नहीं तो सलाम ठोकोगे वर्दी को।।

मुझे मेरे से मिला रहा है

चंचल जैन
बी.एससी. IV सैमे.

कुछ है जो मुझे मेरे ही नजदीक ला रहा है,
कुछ है जो मुझे मुझसे ही मिला रहा है।
भाग दौड भरे इस जीवन में
बड़ी मुश्किल से मिल पाया है,
एक ऐसा अहसास जो दुनिया की
इस भीड से मुझे कही दूर ले जा रहा है,
कही दूर से आई मन्द हवा की सरसराहट से
मेरा झुमका हिला जा रहा हे।
कुछ है जो मुझे मुझसे मिला रहा है, कुछ है
दिल एक बेमोल से अहसास को
कैद कर लेने को मजबूर हुआ जा रहा है,
और मस्तिष्क इस पल में कुछ
नया रचने को कह रहा है।
स्वांग भरी इस दुनिया में ये मुझे
मेरे प्रकृत रूप से मिला रहा है,
ये लम्हा मुझमे कुछ नया राग जगा रहा है।।
कौन कहता है एकांत काटने को दौडता है,
मुझे तो इससे प्रेम हुआ जा रहा है,
कोई पहली बार मिला है कोई ऐसा
जो मुझे मुझसे मिला रहा है।
ये एकांत जो मुझे मुझसे ही प्रेम करना सीखा रहा है।।
कभी जी चाहता है कलम उठा
खूबसूरत सी एक रचना रचू कागज पर,
शांत होकर खुद को पा लेने की रचना
लिखने को जी आ रहा है
कुछ है जो मेरे ही नजदीक ला रहा है

●●●

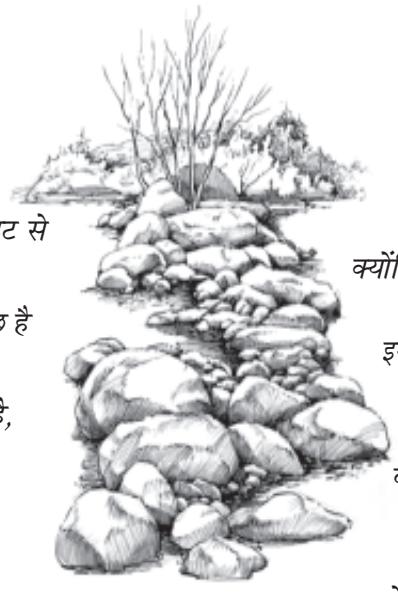

हम सब एकता की पहचान है।

दिव्यांशी चौधरी
बी.एससी. VI सैमे.

सड़कें हुई लावारिस,
घर बैठा इंसान है
जहाँ खेलते से सब बच्चे,
आज खाली हर वो मैदान है
मंदिर मस्जिद सब है बंद,
खुली सिर्फ राशन ही दुकान है।
डटे रहेंगे हम सब यूँ ही,
क्योंकि हम सब एकता की पहचान है।
अस्पतालों में जूझ रहे डॉक्टर
इस समय इंसानियत के भगवान है।
सरहद हो या सड़के सभी सिपाही
दे रहे प्राणों का बलिदान है,
वर्दी में निकले हर वीर सिपाही को
हर हिन्दुस्तानी का सलाम है।
डटे रहेंगे हम सब यूँ ही,
क्योंकि हम सब एकता ही पहचान है।
घर में रहकर हर नागरिक दे रहा
अपना हर योगदान है।
मिटेंगे अंधकार क्योंकि उम्मीद की किरण
कर रही हमारा इंतजार है।
माना कि वक्त है मुश्किल
पर इरादे अब चट्टान है।
डटे रहेंगे हम सब यूँ ही,
क्योंकि हम हम एकता की पहचान है।
विश्व शक्ति के रूप में सब मिलकर
खुद को साबित करते है,
इस महामारी को हटाकर हम हिन्दुतानी
एक नया इतिहास रचते है।
पूरी दुनिया का दुश्मन है कोरोना,
पृथ्वी अब जंग ए–मैदान है,
डटे रहेंगे हम सब यूँ ही,
क्योंकि हम सब एकता की पहचान है।

●●●

कोई नहीं

यतिका सैनी
बी.एससी. IV सैमे.

अभी मंदिर में घंटी बजाने वाला कोई नही
अभी मस्जिदों में अजान सुनाने वाला कोई नहीं
भूखे परिंदे आसमान में घूम रहे है,
आज परिंदो को दाना खिलाने वाला कोई नहीं
कोई नहीं जो कैद कर सके परिंदो को पिंजरे में
अब कुदरत को दर्द पहुँचाने वाला कोई नहीं
खौफ में जी रहा है हर शख्स इस दुनिया में
बेवजह गली के नुक्कड पर बतियाने वाला कोई नहीं
सबको कैद करने वालों को ही कैद कर लिया है?
अब समय आया कुदरत को हराने वाला कोई नहीं।

●●●

जीने का नया ढंग

मुस्कान किशोर
बी.एससी. IV सैमे.

कभी जिया ना था ऐसे जो मैं अब जी रही हूँ।
कभी सोचा ना था ऐसा जो यह अब हो रहा है।
जिंदगी थम सी जायेगी और मैं सोचती रह जाऊंगी।
सोचा ना था कि खुद को घर में कैद भी करना होगा।
यह बंदी शुरु में मुझे खा रही थी, मन मायूस था
और दिल में बेचैनी सी छा रही थी।
दिन बीते कुछ....तो जाना कि यह दोबारा नही आएगा
सक्षम बनने का इससे बढ़िया मौका कहां मिल पाएगा।
कम जरूरतों में भी जीना सीखा है मैंने।
परिवार भी दोस्त बन सकता है यह माना है मैंनें,
दादी के पास भी चुटकलों का पिटारा है, यह पहली बार जाना मैंने।
मेरे अंदर एक नई कला है यह इन दिनों पहचाना मैंने।
शाम को जब जाती हूँ अपनी छत पर देखा है
आसमां भी साफ हो गया है।
इंसान की बेदर्दी से आजाद हो गया है।
अब चिडिया भी बालकनी में चहकने लगी है।
दिखती नहीं थी गौरेया, बाहर आने लगी है।
देखा है इंसान के कैद होने पर प्रकृति को सांस लेते हुए।
हम प्रकृति से है प्रकृति हमसे नहीं
यह बात अब समझ में आने लगी है।

●●●

कोरोना की जंग-प्रधान मंत्री के नाम एक पत्र

जैनब
बी.ए. IV सैमे.

महोदय श्री प्रधानमंत्री जी

आज पूरा विश्व एक बहुत ही गंभीर बीमारी कोविड-19 से जूझ रहा है। परन्तु आपका सही वक्त पर लिया गया वो कठोर निर्णय जिनके कारण आज देश की स्थिति दुनिया के और देशों से बेहतर है, आपकी योग्यता का परिचय देता है। हमारे साथ आप जैसे प्रधानमंत्री का होना भी एक अहम बात है जो कि अपने देश वासियों को कभी झुकने नही देता उनका मनोबल बढ़ाता है। जब आज दुनिया में सब देश अपने अपने अर्थव्यवस्था के विषय में सोच कर चिंतित है। परन्तु आप जैसे व्यक्ति अपने देशवासियों की स्वास्थ्य को लेकर चितिंत हे। आपका नारा - 'जान है तो जहान है' केवल यही संदेश देता है कि मैं देशवासियों को चाहता हूँ।

आपके दिशा निर्देशन में अभी 'भारत सरकार ने एक बहुत ही उपयोगी आरोग्य सेतु ऐप लांच किया है। हमें ज्यादा से ज्यादा लोगो को इसकी उपयोगिता के विषय में बताना चाहिये। जो देश के लिये खड़े हैं। चाहे वो देश के डॉक्टर हो, सफाई कर्मचारी, पुलिस हो, जवान हो या फिर किसान हो सब हमारे लिए बहुत मेहनत कर रहे है, हमारा भी ये कर्तव्य है कि हमें जो निर्देश दिए गए है। जैसे घर की लक्ष्मण रेखा के अन्दर रहना, सफाई का ख्याल रखना, योगा करना, सादा खाना खाना, आदि ये वो मूलमंत्र है, जो हमे और हमारे मुल्क को इस महामारी से मुक्त कर सकते है। हमारे देश की प्रसिद्ध कवि रामधारी सिंह दिनकर ने लिखा है

विपत्ति जब आती है, कायर को ही दहलाती है।।
सूरमा नहीं विचलित होते, क्षण एक नहीं धीरज खोते।।
विहनों को गले लगाते है, काँटो में राह बनाते है।।

आज ये पंक्तियाँ देश की सुरक्षा में लगे सभी कोरोना योद्धाओं एवं प्रधान मंत्री को समर्पित करती हूँ।

●●●

गंगा की कहानी

- *गंगा उत्तराखण्ड के गंगोत्री ग्लेशियर से निकलती है। गंगोत्री से बंगाल की खाड़ी तक ये लगभग 2525 किमी0 का सफर तय करती है।*
- *अपने पूरे सफर में ये भारत के पांच राज्यों क्रमशः उत्तराखण्ड, उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखंण्ड तथा पश्चिम बंगाल से गुजरती है।*
- *गंगा के किनारे रहने वाले लोग इसके द्वारा कई प्रकार से लाभान्वित होते हैं। यह भारत के लाखों लोगों को आजीविका उपलब्ध कराती है। गंगा किनारे की जमीन उपजाऊ होने के कारण इस पर अच्छी कृषि होती है। मछली पालन भी गंगा किनारे बसे लोगों की आय का स्रोत है।*
- *इसके किनारे कई तीर्थस्थल बसे हैं तथा विभिन्न अवसरों पर अनेक मेले लगते हैं।*
- *गंगा कई प्रकार के जीव जंतुओं का वास स्थल है। इसमें डाल्फिन, कछुये, मगर, घड़ियाल, मछलियाँ, ऊदबिलाव व पक्षी पाये जाते हैं।*

- संकलित

कॉलेज ने सिखाया जड़ों से जुड़े रहकर ऊँची उड़ान भरना

संस्कार युक्त आधुनिक शिक्षा

लक्ष्मी
बी. ए. VI सैमे.

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द्र स्नाकोत्तर महाविद्यालय रुड़की में आकर तीन वर्षो में मैंने अपनी प्राध्यापिकाओं से बहुत कुछ सीखा है। हमारे कॉलेज में जो शिक्षा प्रदान की गई है उससे-केवल हमारा शैक्षणिक विकास ही नहीं, बल्कि हमारी कौशलता का भी विकास हुआ है। हमारे कॉलेज में अनेक प्रकार की प्रतियोगिताएं एवं गतिविधियाँ आयोजित की जाती है जो एक ओर हमें आत्मनिर्भर बनने के लिऐ प्रेरित करती है और इसके साथ ही में सस्कारवान भी बनाती हैं।

महाविद्यालय में प्रतिवर्ष अनेक प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं जो हमे हमारी परम्परा, हमारी संस्कृति से जोड़े रखते है। महाविद्यालय में आयोजित संस्कृत-सम्भाषण-शिविर से हमे संस्कृत भाषा को सीखने, वाक्य प्रयोग करने, मंत्रोच्चारण और उनका अर्थ समझने का अवसर मिला।

महाविद्यालय में प्रतिवर्ष गाँधी जयंती बहुत उत्साह से मनायी जाती है। इस अवसर पर हमने हमारी प्राध्यापिका डॉ. कामना जैन के उत्साहवर्द्धन के कारण एक लघु नाटिका तैयार की थी जो 'सामाजिक अलगाव' पर आधारित थी। इस नाटिका से हमें शैक्षिक ज्ञान तो प्राप्त हुआ ही साथ ही में हमारे देश के महापुरुषों के जीवन को जाना तथा प्रेम, एकता और भाईचारा आदि सद्‌गुण सीखे।

कहा जाता है कि 'संस्कार विहीन शिक्षा ठीक उसी-प्रकार है जैसे आत्मा बिना शरीर'

पिछले में तीन वर्षो में आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ अन्य गतिविधियो के द्वारा से हमे जो मूल्य परक ज्ञान वर्धक एवं संस्कार प्राप्त हुए, निश्चित रूप से उनसे हमारा भविष्य उज्जवल होगा ऐसा मेरा विश्वास है।

●●●

मिला नया नजरिया नई सोच

जेबा
बी.ए. VI सैमे.

हमारा महाविद्यालय वह संस्था है जहाँ पर मैंने शिक्षा ग्रहण करने के साथ-साथ स्वयं में बढ़ते आत्मविश्वास को महसूस किया है। मुझे आज भी याद है वह अर्न्तमहाविद्यलायी वाद-विवाद प्रतियोगिता, जिसमें प्रतिभागिता करने के लिए मुझे मेरी प्राध्यापिकाओं द्वारा प्रेरित किया गया। किन्तु प्रतियोगिता के प्रस्तुति से पूर्व मुझे डर लगा और मैंने अपने कदम, पीछे खीचने का निर्णय किया, उस समय मेरी प्राध्यापिका ने मुझे समझाया और मुझमें आत्मविश्वास जगाया। जिसके पश्चात् मैंने प्रस्तुति दी और मुझे द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। इसका श्रेय जाता है मेरी प्राध्यापिकाओं को।

जब महाविद्यालय में प्रवेश पाया तो प्रतिभा थी, ज्ञान था, परन्तु उसे निखारने वाले मेरे गुरुजन थे। हमारा महाविद्यालय एक उत्कृष्ट महाविद्यालय है जहाँ छात्राएँ एक नया नजरिया एवं नये सोच के साथ आगे बढ़ती हैं। मैं भी स्वयं इन छात्राओं में से एक हूँ। जिसके लिए मैं सदैव अपने महाविद्यालय की आभारी रहूंगी।

●●●

संस्कृति एवं परम्पराओं से जुड़ना सीखा

जोया अंसारी
बी. ए. VI सैमे.

'डिग्रियाँ तो तालीम के खर्चों की रसीदे हैं, इल्म तो वह है जो किरदार में झलकता है।'

वर्तमान समय में शिक्षा को मात्र रोजगार हासिल करने का माध्यम मान लेना उचित नहीं है। शिक्षा का उद्देश्य रोजगार प्राप्त करने तक सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षा संस्कारवान पीढ़ी तैयार करने का सशक्त माध्यम भी हैं। हमारा महाविद्यालय इसी लक्ष्य को साथ लेकर चल रहा है। समस्त छात्राओं के व्यक्तित्व के विकास में महाविद्यालय का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। नैतिक मूल्यों व संस्कार युक्त शिक्षा प्रदान करने में समस्त शिक्षिकाओं एंव महाविद्यालय की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इन तीन सालो में मैंने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ-साथ संस्कारों का महत्व भी जाना। शिक्षिकाओं ने शिक्षा के साथ साथ अपने जीवन के विभिन्न अनुभव छात्राओं के साथ साझा किये तथा हमें विभिन्न परिस्थितियों का सामना करने का तरीका भी बताया। मैं अपने महाविद्यालय तथा समस्त शिक्षिकाओं के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने आधुनिक शिक्षा प्रदान करने के साथ ही साथ हमे हमारी संस्कृति व परंपराओं से भी जोड़े रखा।

•••

हार न मानने की प्रेरणा मिली

दीपा
बी. ए. VI सैमे.

अपने महाविद्यालय और अपनी प्राध्यापिकाओं के बारे में जितना भी बोले कम है। यहाँ पढ़ना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। यहाँ मुझे केवल किताबो से संबंधित ज्ञान ही नहीं, बल्कि जीवन जीने का सही तरीका भी सिखाया गया जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा हमें हमारी प्राध्यापिकाओं के द्वारा मिलती है। महाविद्यालयों द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में भागीदारी करके मुझे बहुत कुछ नया सीखने को मिला। इस महाविद्यालय में मेरे तीन वर्ष मेरे लिए यादगार और प्रेरणादायक रहे। प्राध्यापिकाओं ने किताबी ज्ञान के साथ-साथ हमें ऐसी शिक्षा दी जिससे चरित्र का निर्माण, मन की शांति, बुद्धि का विकास हो सके और हम अपने पैरो पर खड़े हो सके, ये सब मुझे अपनी आदरणीय प्राध्यापिकाओं से प्राप्त हुआ। जीवन में कभी हार न मानने की प्रेरणा मुझे अपनी प्राध्यापिकाओं से मिलती रही। आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ सांस्कारिक, नैतिक और सामाजिक ज्ञान, सच्ची निष्ठा, कर्मठता और धर्मपाठ मुझे अपनी ईमानदार प्राध्यापिकाओं के से प्राप्त हुआ। मैं सदैव इसके लिए अपने महाविद्यालय की आभारी रहूँगी।

•••

मुझे मिली आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा

प्राची सिंह
एम.ए. IV सैमे.

आज मुझे अपने आप को एस.एस.डी.पी.जी. कॉलेज की छात्रा बताते हुयें अत्यन्त हर्ष व गर्व का अनुभव हो रहा है क्योंकि यहाँ आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने के साथ हम अपनें संस्कारो और संस्कृति से जुडे रहे, क्योंकि कार्यशालाओं द्वारा हमें अनेक हस्तकलाओं व नवीन कला विधाओं का प्रशिक्षण दिया जाता है; जिससे कौशल विकास के साथ कला क्षेत्र में आत्मनिर्भर होने की प्रेरणा भी मिलती है यहाँ पर जो शिष्टाचार, अनुशासन व कार्यपूर्ण करने की कुशलता और संस्कार जो मुझे प्राप्त हुये हैं, वे निश्चय ही मुझे भविष्य की योजनाओं को सफलता पूर्वक साकार करने में सहायक बनेगें।

हमारें कॉलेज में प्रतिवर्ष कला प्रदर्शनी का आयोजन होता है वर्ष पर्यन्त किये गये हमारे कला कार्यो का प्रदर्शन होता है इसके अतिरिक्त हमारे सनातन सांस्कृतिक मूल्य ही हमारी बुद्धि, आचार, विचार और व्यवहार का परिष्काट करते हैं।

महाविद्यालय की सभी विदूषी और निपुण प्राध्यापिकाएँ मुझे निरन्तर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती रही है महाविद्यालय में समय-समय पर शैक्षिक व सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होते रहे है, यहाँ विद्वानों के लेखों, वचनों व कथनों पर आधारित अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता आयोजित की जाती रही है, जिनमें प्रतिभाग कर मैंने अपने आत्मविश्वास और ज्ञान को बढ़ाया है। इस महाविद्यालय में बिताये गत पाँच वर्ष मेरी स्वर्णिम स्मृतियों में सदैव जीवित रहेंगे।

●●●

गुर्रू ब्रह्मा गुर्रूविष्णुः

नेहा
बी.ए. VI सैमे.

शिक्षा और संस्कार जहाँ, सद्भाव और प्यार जहाँ
हाथ मिलेंगे दिल मिलेंगे, खुशियों का संसार जहाँ

यह मेरे जीवन के लिये बहुत सौभाग्य की बात है कि मुझको इस महाविद्यालय की छात्रा होने का अवसर प्राप्त हुआ। आज छात्राओं में नैतिकता और संस्कारों की कमी नजर आ रही है, वर्तमान समय में छात्र शिक्षा तो प्राप्त कर रहे है, परन्तु कहीं-न-कहीं वे अपने संस्कारों और संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं। छात्रों के लिये अपने शिक्षकों के प्रति प्रेम और आदर भाव होना चाहिये। जब कभी हम गुरु शब्द को पढ़ते है, तो गुरु का मतलब है, ''वह व्यक्ति जो बिना किसी छल के जीवन से अंधकार को हटा देता है'', और गुरु हमेशा अपने शिष्य को सद्मार्ग की राह दिखाते है, उच्च ज्ञान प्रदान करते है इसीलिये हमको हमेशा उनका आदर और सम्मान करना चाहिये।

गुर्रु ब्रह्मा गुर्रू विष्णुः गुरूदेवो महेश्वरः, गुरु साक्षात् परंब्रह्म तस्मै श्री गुरूवे नमः।।

यही भाव मैं अपनी जीवन में हमेशा संजोये रखना चाहती हूँ ताकि शिष्य भाव से निरन्तर कुछ अच्छा एवं नया सीखते हुये जीवन में आगे बढ़ सकूँ।

●●●

महाविद्यालय से मिले शिक्षा और संस्कार

कु० सोफिया
एम.ए., चित्रकला IV सैमे.

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नाकोत्तर महाविद्यालय से एम.ए. करना मेरे जीवन का अविस्मरणीय समय रहा है। मेरी शिक्षिकाओं ने मुझे आधुनिकता के साथ-साथ मौलिकता का भी पाठ पढ़ाया है। महाविद्यालय में संचालित अनेक प्रकार की प्रतियोगिताओं, जैसे खेल-कूद, वाद-विवाद, गीत-संगीत, चित्रकला अभिव्यक्ति आदि में निरंतर प्रतिभागिता ने मुझमें आत्मविश्वास के साथ अनेक गुणो का समावेश किया तो वहीं महाविद्यालय के सभ्य, सौम्य वातावरण ने मुझे हमारी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़े रखा। मैं आशा करती हूँ कि जिस प्रकार कॉलेज में मुझे जीवन में मानवीय गुणो के महत्व, चुनौतियों से लड़ने की प्रेरणा, सुव्यवस्थित टीम बनाकर कार्य करना आदि सिखाया, उसी प्रकार आने वाली अनेक पीढ़ियों के जीवन को भी नई दिशा देगा। महाविद्यालय मे बिताये यादगार समय के लिये मैं अपने शिक्षकों के प्रति आभारी हूँ।

सहृदय धन्यवाद.....

●●●

Water: A Boon for Life and Literature

Dr. Anupma Garg
Professor, Deptt. of English

Water is the driving force of all nature, that is why W.H. Auden said "Thousands have lived without love, not one without water" It is truly said that a flower cannot blossom without sunshine and man cannot live without love. But life of flower and man both is absolutely unimaginable without water. Whenever we think about the life of man and society we think about water. Nevertheless love is the main theme for the writers across the globe yet water also plays an important role in their writings.

From ancient times, in western culture and worldwide, water has been an enduring theme in arts. Water themes (including rain, sea, snow and ice) flow throughout literature, poetry, fine art, theater, music and film. The images may be enduring, aesthetically appealing or threatening in themselves, water i.e. the sea may be a metaphor for birth and re-birth violence and death, self discovery, spiritual journey, metamorphosis, change, inspiration and renewal. In this discussion some of the works of western writers are highlighted who have taken water as the component of their writings.

Western literature was launched upon waters. In the Oddessey Homer a greek poet represents a great man's journey with all its victories and heartbeats. Because Odysseus is far from Ithaca and the only way home is by way of the sea, he shows lacks of judgement when he incurs the wrath of the sea God, Posedion by blinding the God's son Polyphemus. The sea god answers the cyclop's prayer by making odysseus struggle long and hard, assuring that he returns home alone and finds formidable problems in his household. Part of the appeal of the Oddessey is this universal journey that we all under take in way, great or small. Centuries later, arguably the first english novel, Daniel Defoe's Life and Strange Surprising Adventures of Robinson Crusoe (1719) vividly relates the life of a man morooned on a desert land and thus the spectre of the everpresent ocean. Other noteable english-language literary works with a water focus include Samuel Taylor Coleridge (1772-1834) apprehensive ballad, The Rime of Ancient Mariner

Water Water Everywhere and all the boards did shrink
water water Everywhere Nor any drop to drink

The irony of being surrounded by water yet unable to drink and thus suffer from thirst is often quoted.

In Matthew Arnold poems the Beach is an ideal setting. The land is a symbol of continuity and the sea is a symbol of change. The sea is calm to night and it brings the eternal note of sadness in the heart of poet and he remembers

sophocles long ago
Heard it on the Aegean and it brought
Into his mind the turbid ebb and flow
of human misery; we find also in the sound a thought
Hearing it by this distant northern sea.

Rain is also the symbol of life, being born, purity, cleansing or washing away the sins in leterature. Shelly's poem The Cloud has treated rain in totally different manner. Rain which comes from cloud is supplied to the soil so that it regenerate. Cloud become a gardener, through rain it brings water to thirsty flowers as well as to birds, through the dews on the buds. It helps in harvesting the crops.

I bring fresh showers for the thirsty flowers
from the seas and the streams
I bear light shade for the leaves when laid
In their noonday dreams
from my wings are shaken the dews that waken
The sweed buds every one.

The most famous poem by Edward Thomas, Rain is a simple poem in which the speaker is sheltering from the rain alone in a hut, muses upon his loved ones.

These few writers have been highlighted in order to emphasise that when our literature which is a mirror of society, is incomplete without water then how we, being a part of society can imagine survival upon this earth? With water there is life. Not only does it bring life to the planet but also teaches us the realities of life. It contains within itself the mixed feeling in our hearts which makes us relate to it in every step of our lives. The rush and anger in the waves of an ocean are like the ups and downs we face everyday, but when in the end it touches the shore and kisses our feet, all our worries are gone and a sense of calm fill our souls. Even the sound of water gushing towards us balances our discomfort and revives us to go on with a feeling of joy and satisfaction.

●●●

Save Tomorrow's Life Saver-Water

Dr. Parul Chaddha
Lecturer, Department of Mathematics

Can you Imagine life without Water? Yes, absolutely no life is possible in absence of water. A person can live without food for one or two days but water is very essential to survive. If water disappears from the earth then life will come to an end.

The population of India is 16% of the world's population and only 4% of the world's water resources are here. Water is one of the most important inputs essential for human existence. Both its shortage and excess affect the growth and development of the plants, yields and quality of produce and human life around.

There are numerous methods to reduce such losses and to improve soil moisture. These are mulching, cropping, planting of trees. utilization of fog or dew by net surfacing traps or polythene sheets. contour farming, transfer of water from surplus areas to deficit by inter-linking water system through canals, desalination technologies such as distillation, Electro-Dialysis and reverse osmosis, use of efficient watering system such as drip irrigation and sprinklers which reduce the water consumption by plants.

The most important step in finding solutions to water and environmental conservation is to change people's attitudes and habits at community level. So before it is too late, let us all, as individuals, families, communities, companies & institutions, pledge towards using water wisely. **"Intelligence is not in lavishness, but in conservation"**, so that our future generation can continue to enjoy the blissful feeling and touch of water.

●●●

Water Conservation: Participatory role of Educational Institutions

Dr. Jyotika
Lecturer, Department of Physics

Life on earth cannot sustain withour water - Tiruvalluar

This phrase written almost twenty century ago is aptly depicting current scenario of human life. With increasing population, dreadful pollution, negligence towards water preservation eventually led human race towards water scarcity, droughts and acute shortage of potable water. It is high time that we as a sensitive community must prepare ourselves for the indispensable cause of water preservation. Education institutes can see themselves as the home for developing innovation for water conservation and management methodologies. The target is not far and infact lies in our closest proximity. The only thing this crisis demands is identifying role and response of institutes.

A few water preserving institutional parameters could be, building consensus among various stake holders (students, faculty and staff) regarding need of water conservation, working out ways for making campus water efficient while managing and maintaining existing water supply modes like taps, water tanks and other water bodies. In order to achieve a long run impact of educational institutes in reaching out targets of water conservation (locally or globally) it is imperative to include capacity building strategies as an integral part of educational system. A few suggestions could be:

1. Integrating water conservation in educational curriculum.
2. Identifying career prospects in water management program.
3. Frequent disseminating while linking students with hydrologists to develop skills of water resource management and planning.
4. Short term targeted training program in collaboration with dedicated institutes of water preservation.

Besides this, institutes can be utilized as substantial platform for spreading smart water conservation policies like user based water monitoring system, waste water treatment, water efficient toilets, maintaining a comprehensive water budeget as a project by the students, display of stickers, and signboards as reminders which will help college community and visitors to be mindful about water usage. The institutes, thus can see themselves as pioneering in developing attitude and aptitude among community towards preserving water. The overall purpose of any water management program in institute must address awareness and its impact towards water related problems. As a part we all must pledge to have an important role to the cause of water conservation.

•••

The Oceans of Life

Ocean are vital for humanity. Oceans cover three - fourth of earth and hold life that literally enables humankind to live. Marine ecosystems from tiny microbes to huge whales work in astonishiny synchrony, creating over 50 percent of the Earth's oxygen. Ocean Life, from corals to seagrases take in one third of the carbon emitted by human beings, folding this away as 'blue carbon' in the depths, A long side, the oceans absorb. Sunheat, their currents generate climateic conditions from warmth to breeze. In addition to all these marine life nourishes theree bilion popl,e. Humanity simply cannot survive without oceans yet human are destoying these oceans of life by polluting these through agricultural, industrial chemicals, sewage and plastic. If we want our survival it's high time that we should save oceans that fill earth with life.

- Compiled

On the eve of women's International Women's Day Deptt. of Chemistry organised an essay writing competition on the topic
Women Generation Euqality *Edited part of winning entries are geiven below -*

Born to Stand Out

Ms. Saloni
B.Sc. VI Sem.

'Equality' means where every individual gets equal opportunities and rights. Thus, 'Gender equality' means providing equal opportunities to both men and women in political, economic, edcuational and health aspects. Women in the society are often cornered from getting equal rights compared to men in the field of higher education, decision making and leadership roles. On 8th, March we all celebrate 'International Women's Day' to empower women in all aspects.

Gender empowerment Measure (Gem) includes the proportion of seats that women candidates hold in national parliament and in the process of decision making. Due to this Gender inequality, 'child marriage is very common in which the adolescent girls face the hightest risk of domestic violence.

Also in many schools the safety, hygiene and sanitation needs of girls may be neglected, barring them from regularly attending classes. As a result, nearly 1 out of 4 girls below the age fo 15-19 yrs. are neither employed nor imparted in education or training as compared to boys. In many developing and under developed countries women are not given any rights over the property of their family because they are considered fit only for household activities. In muslim countries, particularly women are asked to observe purdah, due to their Islamic values and culture. Women are not allowed to go outside the house without company or the permission of a male number of the family. In todays world, econimic progress is only possible when men & women work side-by-side. This discrimination is largely responsible for poverty and backwardness of any society or nation.

"If you believe in your idea of change and are willing to work hard, sooner or later that dream will be a reality. To remove this backwardness, our respected prime minister 'Narendra Modi Ji' initiated a scheme for girls called ' Beti Bachao, Beti Padhao' on 22 January, 2015 at Panipat. If implemented properly it will contribute towards empowerment of women and improve their status in the society remarkably. The success of this scheme will lead to the economic growth of the country and to empower women in the society. If women will take a step forward to get their rights then it helps them in every field for getting equal opportunities for it. First of all, woman has to accept herself and believe in her capabilities. Melene Rossouw in her address says **You will often feel as if you don't fit, but it has never been your destiny to fit in**. **You were born to stand out.**

●●●

Be Aware, Be Bold, Promote Yourself, Support Yourself

Ankita Rajput
B.Sc. IV Sem

When we come to Women Generation Equality what comes in our mind? Some rights, freedom is n't it? But actually this is not the only thing which defines it completely. We have a plethora of rights but may be we aren't aware of our rights, our valoury and our achievements in all spheres like sports, science, aerospace and even in film industry. We are very much known to male achievers. In cricket we appreciate, Virat Kohli and other players, but we never tried to shift this spotlight towards Indian women cricket team, Did we?

Let us question to ourselves - Actually what are we doing? We are just talking about equality but we women are not promoting ourselves, we are not aware of the accomplishments of women, so when we ourselves are not interested in our achievements then who else will be? Irony is we are expecting others to treat us with equality, but we ourselves are not treating ourselves as equals.

No, we don't want men's support, No seats in Metro. No, reservation anywhere! We are not weak. So, the question is from where equality will come? And the answer is from each and every woman. Women themselves can emanate equality urge in a girl to fight, to learn, to do something, to try her hand in all possible amazing fields. Equality is the only idea and only thought, which takes us towards awareness, dedication and determination. So Be aware, Be Bold; promote yourself, support yourself.

"We are equal not because the world supports us. But because we support ourselves. We challenge everyone to compete with us. Because we have potential for everything"

●●●

Realizing Women's Rights for an Equal Future

Shivangi Tyagi
B.Sc. IV Sem

As we all know the fact, that gender equality starts at the foetal life. People generally want a baby boy instead of baby girl. Killing of female child before birth by misusing technology for the detection of sex of unborn child is a result of this thinking only.

Gender Equality at Home:- Home and parents plays a very important role to provide gender equality among their children. It is the responsiblity of parents and family to provide equal opportunities to their children, be it a boy or girl.

Gender Equality In School:- Schools play an important role in gender equality. It is also a very important responsiblity on schools to provide equal opportunities to all their students in the fields of education, sports and other activities.

Gender Equality In Society:- Society also plays a very important role in gender equality. The prevailing mind set in society plays a very important role toward bringing about gender equality by inducing gender senstization at all levels. "it is time that we all see gender as a spectrum instead of two sets of opposing ideals."

●●●

Woman and her Uniqueness

Mahima Saini
B.Sc. VI Sem.

"Gender equlity does not exactly means feminism, rather it is more of humanism" because all human beings should have the right to be treated equally.

Education is one of the most important weapon to change the world. It is through educatin that women get to know about their rights, gain knowledge in the field of science, arts and commerce and most important is to get qualification that help them to become finacially independent. Also education increases their awareness about government facilities and programs introduced for their well being.

Government also contribute a lot to enhance and achieve generation equality in any society but at the same time women, as an enlightened and responsible citizen of the country have to play their role in making government by judiciously exercising their voting rights. But I think for women generation equality comparision is not necessary because woman is known for her uniqueness.

Rightly said that- "Our generation is becoming so busy trying to prove that women can do what a men can do, that women are losing their uniqueness. Women were not created to do everything a men can do, women were created to do everything a men can't do."

●●●

'YES, I CAN'
A Mentorship Programme

Mentorship programme " YES, I CAN" was organised by department of Mathematics on 7th March 2020. In this event our few bright & talented Alumnae of different fields, were invited to throw light on career options in their respective fields and share their experiences of college and personal life with our students. Edited summary of their motivational speeches are given here.

Arshiya Gauri: Batch 2015-2018, Pursuing L.L.B. from B.S.M. Law college, Roorkee

Our Graceful alumna Arshiya Gauri shared her exprience that Law is one of fields in which quality is much important than qualification. Future prospects in law field are judiciary competitions, APO/APP, JAG (Judge Advocate General), Law officer in bank, Legal Advisors, and in the field of IPR (Intellectural Property Rights)etc. A law degree not only lets you practice as a lawyer but also opens up career options in fields like corporate & administrative services.

Mudrika Verma: (Batch 2015-2018), Pursuing M.Sc. in Physics

Addressing the undergraduates of the college Mudrika said that basic guidelines for students pursuing for the Bachelor Degree is to increase their exposure by active participation in co-curricular activities organised by the college. Talking about career opportunities in physics she said that, besides academics Physics can open doors in the field of Astronomy, study of Universe behaviour research and also in various jobs related to manufacturing process.

Gunjan Sharma: (Batch 2015-2018), pursuing Masters in Industrial Chemistry, JAM, GATE Qualified

In her address Gunjan said that there are many opportunities for Chemistry graduates besides pursuing Ph.D and preparing for NET, GATE. The fields related to Chemistry have a diverse spectrum including pure Chemistry, Analytical Chemistry, Industrial and Pharmaceutical Chemistry etc. These fields offer plenty of opportunities to job oriented students.

Naina Batra: (Batch 2013-2016), Assistant Manager in Repro India Ltd.

Naina discussed about, role of clarity of our goals in achieving success. She said we should keep moving towards our goal, no matter how difficult it may be. If you want to be successful in your life than a focused approach and thorough knowledge of the subject is necessary.

Srishti Saini: (Batch 2015-2018), Pursuing M.Sc. in Mathematics & Trained Yoga Trainer

Srishti mentioned that, yoga also opens various job options in the given field such as research, management, hospitals, academics, administrative, consultation etc. We can make our career in these fields after graduation from any stream. We know that yoga can play an important role in every one's life and if we make our career in yoga than we can achieve success in terms of fitness as well as career together.

Feedback: 106 Students participated in the event and gave their feedback. According to feedbacks received, the session was very informative, useful and interesting for students. Students rated this session 9 at the scale of 10.

Organisers
Dr. Parul Chaddha & Ms. Shivani Bharti
Department of Mathematics

अपराजिता : 'आत्मनिर्भर भारत' विशेषांक (2020-21)

महाविद्यालय की समस्त छात्राओं व शिक्षण एवं शिक्षणेतर स्टॉफ से अपराजिता '**आत्मनिर्भर भारत**' विशेषांक सत्र 2020-21 हेतु लेख/रचनायें/कविता आमंत्रित हैं। इस संबंध में छात्राओं हेतु निर्देश निम्नवत् हैं-

1. रचनायें मौलिक/स्वरचित होनी चाहिए। प्रत्येक रचना के अंत में मौलिकता संबंधी प्रमाण-पत्र निम्न प्रारुप में लिखा होना चाहिए- 'मैं ..... कक्षा .... की छात्रा, पुत्री..... प्रमाणित करती हूँ कि ..... शीर्षक की रचना मेरी मौलिक/स्वरचित रचना है, अन्यथा सिद्ध होने पर परिणाम के लिए मैं स्वयं उत्तरदायी रहूँगी।

छात्रा के हस्ताक्षर

2. रचना स्पष्ट रुप से हस्तलिखित या टंकित होनी चाहिए।
   टंकित रचनायें निम्नानुसार प्रेषित की जा सकती हैं:-
   हिन्दी - AA Text, Font Size - 14 अंग्रेजी - Times New Roman, Font Size - 11
   E-mail ID - ssd.degree@gmail.com
3. रचनायें हिन्दी, अंग्रेजी व संस्कृत किसी भी भाषा में लिखी जा सकती हैं।
4. प्रत्येक रचना के साथ अपना पासपोर्ट साइज फोटोग्राफ भी संलग्न करें।
5. प्रकाशन योग्य रचनाओं के चयन में सम्पादक मंडल का निर्णय अंतिम होगा।
6. रचनायें अधिकतम 31-3-2021 तक पत्रिका के संपादक मंडल के सदस्यों में से किसी के भी पास जमा कराई जा सकती है।

सम्पादक

महाविद्यालय परिवार

डा० अर्चना मिश्रा – प्राचार्या

शिक्षिका वर्ग

कला संकाय

1. **डा० अर्चना मिश्रा,** प्रोफेसर, अर्थशास्त्र
2. **डा० अनुपमा गर्ग,** प्रोफेसर, अंग्रेजी
3. **डा० अलका आर्य,** प्रोफेसर, चित्रकला
4. **डा० भारती शर्मा,** सीनियर असिस्टेंट प्रोफेसर, अंग्रेजी
5. **डा० कामना जैन,** सीनि. असिस्टेंट प्रोफेसर, राज. विज्ञान
6. **डा0 किरन बाला,** सीनि. असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र
7. **डा० अर्चना चौहान,** असिस्टेंट प्रोफेसर, चित्रकला
8. **श्रीमती अंजलि प्रसाद,** असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र
9. **डा० सीमा रॉय,** प्रवक्ता हिन्दी (प्रबन्ध तंत्र)
10. **सुश्री महनाज फातिमा,** प्रवक्ता अंग्रेजी (प्रबन्ध तंत्र)
11. **डा0 अन्जु शर्मा,** प्रवक्ता हिन्दी (प्रबन्ध तंत्र)
12. **डा0 शिखा शर्मा,** प्रवक्ता संस्कृत (प्रबन्ध तंत्र)
13. **श्रीमती नेहा शर्मा,** प्रवक्ता अर्थशास्त्र (प्रबन्ध तंत्र)
14. **श्रीमती ज्योति,** राज. विज्ञान (प्रबंध तंत्र)

विज्ञान संकाय (स्ववित्त पोषित)

1. **डा0 असमा सिद्दीकी,** प्रवक्ता, वनस्पति विज्ञान
2. **डा0 उमा रानी,** प्रवक्ता, वनस्पति विज्ञान
3. **श्रीमती पल्लवी सिंह,** प्रवक्ता, रसायन विज्ञान
4. **डा0 संगीता सिंह,** प्रवक्ता, जन्तु विज्ञान
5. **श्रीमती शैली सिंघल**, प्रवक्ता, कम्प्यूटर साइंस
6. **श्रीमती दीप्ति नागपाल**, प्रवक्ता, कम्प्यूटर सांइस
7. **डा0 पारुल चड्डा**, प्रवक्ता, गणित
9. **डा0 ज्योतिका**, प्रवक्ता, भौतिक विज्ञान
10. **कु० प्रगति त्यागी,** भौतिक विज्ञान
11. **सुश्री हिमांशी,** प्रवक्ता, माइक्रोबायोलाजी
12. **श्रीमति अंशू गोयल,** प्रवक्ता, रसायन विज्ञान
13. **सुश्री शिवानी चौधरी,** प्रवक्ता, गणित
14. **सुश्री शाजिया,** प्रवक्ता, जीव विज्ञान
15. **सुश्री दीपा पँवार,** प्रवक्ता, माइक्रोबायोलाजी
15. **श्रीमती हिमानी त्यागी,** प्रवक्ता, रसायन विज्ञान

एम० ए० (स्ववित्त पोषित)

1. **डा० शालिनी वर्मा,** प्रवक्ता राजनीति विज्ञान
2. **श्रीमती मीनाक्षी कश्यप,** प्रवक्ता चित्रकला
3. **सुश्री परवीन,** प्रवक्ता राज. विज्ञान
4. **सुश्री सीमा रानी,** प्रवक्ता चित्रकला
5. **सुश्री आँचल,** प्रवक्ता चित्रकला
6. **डा० स्वर्णलता मिश्रा,** अतिथि प्रवक्ता, चित्रकला

शिक्षणेत्तर कर्मचारी वर्ग

कला संकाय

श्री अनुज कुमार सिंघल, वरिष्ठ कार्यालय लिपिक
श्री नवाब सिंह, परिचर
श्री रामराज शर्मा, पुस्तकालय परिचर
श्री रविन्द्र कुमार, कला परिचर
श्री पंकज कुमार, परिचर
श्री तीरथपाल, परिचर
श्रीमती सुबलेश, परिचर
श्री आशीष बिड़ला, परिचर
श्री उमेश कुमार, परिचर
श्री राजेश कुमार, परिचर

विज्ञान संकाय एवं एम०ए० (स्ववित्त पोषित)

श्रीमति प्रीति शर्मा, पुस्तकालय प्रभारी
श्री निशान्त पंडित, लिपिक
सुश्री सुषमा देवी, पुस्तकालय लिपिक
श्री अजय अविनाश, कार्यालय सहायक
श्री विनोद कुमार, प्रयोगशाला सहायक
श्री शिवमंगल वर्मा, प्रयोगशाला सहायक
श्री संदीप भटनागर, प्रयोगशाला सहायक
श्रीमती नीतू तायल, प्रयोगशाला सहायक
कु0 प्रिंयका, प्रयोगशाला सहायक
श्रीमति सुषमा कटारिया, प्रयोगशाला सहायक
श्री गगन रस्तोगी, परिचर
श्रीमती नीलम, सफाई कर्मचारी
श्री तेलूराम, परिचर
श्री मुकेश, परिचर
श्री सत्यप्रकाश गौड़, परिचर
श्री अमन कुमार, परिचर
श्री अजय कुमार शर्मा, पुस्तकालय परिचर
श्रीमती शर्मा देवी, सफाई कर्मचारी

POSTERS MADE BY STUDENTS OF M.A. DRAWING AND PAINTING

श्री सनातन धर्म प्रकाश चन्द कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुड़की
पुस्तकालय